राबिनसन क्रूसो

राबिन्सन क्रूसो

अनुवादक

पं० जनार्दन झा

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३२

संशोधित संस्करण]

[मूल्य ॥)

Published by
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd.
Allahabad.

Printed by
A. Bose,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

FOREWORD

This favourite book of the students has been translated in idiomatic and forceful Hindi by the late Pandit Janardan Jha, whose style is so much appreciated by the scholars of Hindi literature. We submitted a bound edition of this book for consideration as a text-book in Hindi Rapid Reader for classes VII & VIII of A. V. Schools. But we understand that though the book was approved, its price at Rs. 1/8 was regarded as an obstacle to its prescription. So we now submit the book in ordinary paper cover at the reduced price of -/12/-. There has been no other change in regard to any other matter.

We hope this book at this reduced price will be prescribed as an alternative Rapid Reader in Hindi for classes VII & VIII of A. V. Schools.

राबिन्सन क्रूसो

क्रूसो का गृहत्याग और तूफ़ान

१६३२ ईसवी में इंगलेंड के अन्तर्गत यार्क नगर में मेरा जन्म हुआ। मैं अपने माँ-बाप का तृतीय पुत्र था। मेरे बड़े भाई सैन्य-विभाग में काम करते थे। युद्ध में उनकी मृत्यु हुई थी। छोटे भाई का हाल मैं कुछ भी नहीं जानता। बालकों में छोटा या बड़ा जो समझिए मैं ही था, इसलिए मैं घर भर के लोगों का अत्यन्त स्नेहभाजन था। मेरे पिता सुनार का काम करते थे, तथापि उन्होंने मेरे पढ़ाने-लिखाने में कभी कोई त्रुटि नहीं की। जब मैं अपने घर और पाठशाला में कुछ विद्या पढ़ चुका तब पिता ने मुझको क़ानून पढ़ाने की इच्छा प्रकट की। किन्तु मेरे दिमाग़ में तो बाल्यकाल से ही देशभ्रमण का शौक़ घुसा था, इसके लिए समुद्रयात्रा की ओर मेरा ध्यान लग रहा था। समुद्रयात्रा के अतिरिक्त मुझे न तो और कुछ सुहाता था, और न किसी दूसरे काम में मेरा जी लगता था। समुद्रयात्रा का उद्वेग ऐसा प्रबल हो उठा, समुद्र-यात्रा की तरङ्ग मेरे मन में इस प्रकार लहराने लगी कि पिता

सब बातें पिताजी से जाकर कह सुनाईं। वे सब बातें ध्यानपूर्वक सुनकर लम्बी साँस लेकर बोले— लड़के को कुबुद्धि ने आ घेरा है। उसके भाग्य में कष्ट बदा है। अपने मन से जाना चाहे तो चला जाय, मैं जाने की सलाह न दूँगा।

इस प्रकार मेरे हठ और माता-पिता के निरोध की खींचातानी में एक वर्ष बीत गया। एक दिन संयोग पाकर मैं हल बन्दर की ओर घूमने गया। जाते समय मेरा भागने का इरादा बिलकुल ही न था। किन्तु वहाँ जाकर मैंने देखा, मेरा एक साथी अपने पिता के जहाज़ पर सवार होकर समुद्रपथ से लन्दन जा रहा है। वह अपने साथ मुझको ले जाने के लिए बार बार अनुरोध करने लगा और मुझसे कहने लगा कि जाने का तुम्हें कुछ ख़र्च न देना होगा। तब मैं माँ-बाप की अनुमति की अपेक्षा न करके, उन लोगों को अपने जाने की कोई ख़बर दिये बिना ही, जाने को प्रस्तुत हुआ। १६५१ ईसवी की पहली सितम्बर मेरे लिए एक अशुभ मुहूर्त था। उसी अशुभ मुहूर्त में शुभाशुभ परिणाम की कुछ परवा न करके, पिता-माता को बिना कुछ ख़बर दिये ही, ईश्वर से मङ्गल और माँ-बाप से आशीर्वाद की प्रार्थना किये बिना ही मैं उस लन्दन जानेवाले जहाज़ में जा बैठा।

यात्रा का आरम्भ होते न होते मेरी विपत्ति का आरम्भ हो गया। जहाज़ खुलकर अभी बीच समुद्र में भी न गया था कि हवा ज़ोर से चलने लगी और समुद्र का जल ऊपर की ओर

मचलने लगा। तरङ्ग पर तरङ्ग उठने लगी। देखते ही देखते समुद्र का आकार भयङ्कर हो उठा। मैंने आज से पहले कभी समुद्रयात्रा न की थी, इसलिए मेरा जी घूमने लगा। बारंबार वमन के वेग से शरीर, और डर से हृदय, काँपने लगा। मैं मन ही मन सोचने लगा—"दुष्ट महामूर्ख की भाँति, कर्तव्य की अवहेला करके, पिता के पास से भागने का यह उचित दण्ड ईश्वर ने दिया।" उस समय माँ-बाप के अनुनय, अश्रुजल और उपदेश मुझे याद आने लगे। ईश्वर और पिता के प्रति अपने कर्तव्य की त्रुटि के लिए मेरी धर्मबुद्धि मुझको बार बार धिक्कारने लगी।

आँधी का वेग क्रमशः बढ़ने लगा और समुद्र का जल ताड़ के बराबर ऊपर बढ़ गया। दो-एक दिन पहले मैंने आँधी और समुद्र का जैसा कुछ भयङ्कर रूप देखा था उससे कहीं बढ़कर आज की आँधी और समुद्र की अवस्था थी। मेरे प्राण सुखाने के लिए अभी यही यथेष्ट था। क्योंकि उस समय मेरी उम्र नई थी और समुद्र के साथ मेरा यही प्रथम परिचय था। समुद्र की भीषण मूर्ति देखकर मैं यही सोचने लगा कि हम लोगों की जीवनलीला आज ही समाप्त होगी। जब मैं एक से एक ऊँची तरङ्ग को आते देखता तब मेरे मन में यही होता था कि अबकी बार इसी के भीतर हम लोगों की चिरसमाधि लगेगी। प्रत्येक बार जहाज़ तरङ्ग के ऊपर चढ़कर मानो आकाश को चूमता था, और दो तरङ्गों

के बीच के गढ़े में पड़ने पर ऐसा मालूम होता था मानो वह पाताल में जा रहा है, अब फिर कभी ऊपर न आवेगा। यह भयङ्कर दृश्य देखकर मेरे होश उड़ गये। हृदय की ऐसी अधीरता के समय मैं ईश्वर से बार बार क्षमा की प्रार्थना और मन ही मन प्रतिज्ञा करने लगा कि भगवन्! इस बार यदि मेरे प्राण बच गये, यदि .खुशी .खुशी समुद्र-तीरवर्ती सूखी ज़मीन पर मैं पैर रख सका तो इस जीवन में न तो फिर कभी जहाज़ पर चढ़ूँगा और न कभी समुद्रयात्रा का नाम ही लूँगा। समुद्र के किनारे पाँव रखते ही एकदम पिताजी के पास हाज़िर हो जाऊँगा। उनके उपदेश की उपेक्षा कर फिर कभी इस तरह विपत्पयोधि में न धँसूँगा। तूफ़ान जितना ही सख़्त होने लगा उतना ही पिता के उपदेश का मीठापन मेरे हृदय को अनुतप्त करने लगा।

जब तक तूफ़ान का वेग प्रबल था तब तक और उसके पीछे भी कुछ देर तक, यह सुबुद्धि मेरे हृदय पर अधिकार जमाये रही। दूसरे दिन वायु का वेग कुछ कम हुआ। समुद्र ने भी पहले से कुछ शान्त मूर्ति धारण की। मैं भी समुद्रयात्रा में कुछ कुछ अभ्यस्त हो चला। फिर भी उस दिन मैं बराबर गम्भीर भाव धारण किये रहा। किन्तु तब भी मेरा जी कुछ कुछ घूम रहा था और रह रहकर मुँह में पानी भर आता था। साँझ होते होते आँधी एकदम रुक गई। सायङ्काल का दृश्य अत्यन्त मनोहर देख पड़ा। सूर्य भगवान्

समुद्र के ऊपर मानो सोना ढालकर अस्त हुए। वे दूसरे दिन भी वैसी ही सुनहरी किरणों की शोभा विस्तीर्ण करके उदित हुए। यह देखकर मेरा चित्त फिर प्रफुल्ल हो उठा और जान पड़ा मानो इस जीवन में ऐसा सुन्दर दृश्य कभी न देखा था।

रात में मुझे अच्छी नींद आई और वमन का उद्वेग भी शान्त हो गया। मैं पहले दिन के उत्तुङ्ग-तरङ्ग-भीषण समुद्र को इस समय प्रशान्त और सुन्दर देखकर विस्मित हो रहा था। तब मेरा साथी, जिसके प्रलोभन से मैं आया था, मेरे पास आकर और मेरी पीठ को थपथपाकर कहने लगा—क्यों जी राबिन्सन! कल ज़रा हवा तेज़ हुई थी तब तो तुम ख़ूब डरे थे! उसकी यह बात सुनकर मैं अवाक् हो गया। भला यह क्या कह रहा है? इतनी बड़ी आँधी इसके निकट एक तेज़ हवा मात्र है। तब न मालूम आँधी कैसी होगी? जो हो, अपने साथी का उत्साहवाक्य सुनकर और समुद्र की मनोहरता देखकर मैं पहले दिन की सब प्रतिज्ञायें और सङ्कल्प धीरे धीरे भूलने लगा। बीच बीच में सुबुद्धि का उदय होता भी था तो उसे मैं मानसिक दुर्बलता कहकर मन से दूर कर देने लगा। पाँच छः दिन में जब मैं समुद्र के स्वभाव से कुछ कुछ परिचित हो गया तब फिर उन सुविचारों का हृदय पर असर न होने दिया। किन्तु इस औद्धत्य के कारण विधाता ने मेरे भाग्य में अनेक तिरस्कार और लाञ्छनाओं की व्यवस्था पहले ही ठीक कर रक्खी थी।

क्रूसो के भाग्य में भयङ्कर तूफ़ान

समुद्र-यात्रा के छठे दिन हम लोगों का जहाज़ यारमाउथ बन्दर में आ लगा। आँधी आने के पीछे आज तक हवा प्रतिकूल और समुद्र स्थिर था, इसलिए हम लोग बहुत ही थोड़ी दूर आगे बढ़ सके। हम लोगों ने बाध्य होकर यहाँ लङ्गर डाला। सात आठ दिन तक वायु प्रतिकूल चलती रही, इस कारण हम लोग वहाँ से हिल-डुल न सके। इसी बीच न्यूकैसिल से बहुत से जहाज़ इस बन्दर में आकर अनुकूल वायु की प्रतीक्षा करने लगे।

हम लोग इतने दिन इस बन्दर में बैठे न रहते, नदी के प्रवाह की विपरीत दिशा में चले जाते; किन्तु हवा का वेग बढ़ते बढ़ते चार पाँच दिन के बाद बहुत प्रबल हो उठा। परन्तु नदी के मुहाने को बन्दर की ही भाँति निरापद जानकर और हम लोगों के जहाज़ की रस्सी को बहुत मज़बूत समझ-कर माँझी लोग निश्चिन्त और निःशङ्क भाव से समुद्र की आँधी के समय की भाँति बड़ी सावधानी और फुरती के साथ समय बिता रहे थे। आठवें दिन सबेरे वायु का वेग और भी प्रबल हो उठा। हम लोग जहाज़ सँभालने में जी जान से लग पड़े। मस्तूल का ऊपरी हिस्सा नीचे गिरा दिया और ऐसी व्यवस्था करने लगे जिसमें जहाज़ सुरक्षित होकर हम लोगों को आराम दे। दोपहर होते होते समुद्र ने

भयङ्कर रूप धारण किया। हम लोगों के जहाज़ का अगला भाग और पीछे का हिस्सा जल में ऊब डूब करने लगा। समुद्र के प्रत्येक हिलकोरे में जहाज़ के भीतर जल आने लगा। कप्तान ने और कोई उपाय न देख एक बड़ा लंगर फेंक देने का आदेश दिया और लंगर की जितनी ज़ंजीरें थीं सब पानी में छोड़ दी गईं।

क्रमशः तूफ़ान भयानक हो उठा। उस समय मैंने नाविकों के चेहरे पर भी भय का चिह्न देखा। जहाज़ की रक्षा के प्रबन्ध में व्यग्र होकर कप्तान बार बार अपनी कोठरी में जाते थे, और बार बार बाहर आते थे। उनको मैंने आप ही आप यह कहते सुना था, "हे ईश्वर दया करो, हा सर्व-नाश हुआ, हम लोगों की जान गई।" तूफ़ान की प्रथम अवस्था में मैं कुछ निश्चिन्त सा होकर चुपचाप अपनी कोठरी में पड़ा था और मन में सोच रहा था कि यदि बहुत बड़ा तूफ़ान होगा तो उस दिन का ऐसा होगा। किन्तु स्वयं कप्तान को भीत होते देखकर मैं बेहद डरा।

मैंने अपनी कोठरी से बाहर आकर जो भयङ्कर दृश्य देखा, उससे मेरे होश उड़ गये। पर्वत की तरह उच्च आकार धारण कर समुद्र तीन चार मिनट के भीतर ही हमारे जहाज़ को ले देकर रसातल में पहुँचा देगा। मैं जिस ओर देखता था उधर विपत्ति ही विपत्ति नज़र आती थी। माल से लदे दो जहाज़ों के मस्तूल जड़ से काटकर इसलिए फेंक दिये गये

कि वे कुछ हलके हो जायँ। एक भी जहाज़ ऐसा न था जिसका मस्तूल खड़ा हो; लंगर कट जाने से दो जहाज़ समुद्र की ओर प्रधावित होकर बाहर निकल गये। हमारे जहाज़ के नाविकगण कहने लगे—"यहाँ से एक मील पर एक जहाज़ डूब गया है।" केवल बोझ से ख़ाली जहाज़ कुछ निरापद और स्वच्छन्द थे, किन्तु उनमें भी दो जहाज़ हमारे जहाज़ के निकट चले आये थे।

सन्ध्या-समय हमारे जहाज़ के मेट और मल्लाहों ने मस्तूल काटकर जहाज़ हलका करने के लिए कप्तान की अनुमति चाही; किन्तु इसमें उनकी सम्मति न थी; पर मल्लाहों ने जब उनको अच्छी तरह समझाकर कहा कि मस्तूल न काटने से जहाज़ न बचेगा, तब लाचार होकर उन्होंने आज्ञा दे दी। आज्ञा होते ही मल्लाहों ने मस्तूल काटकर जितने डेक थे सबों को एकदम साफ़ कर दिया।

यह हाल देख-सुनकर मेरे चित्त की जो अवस्था हो रही थी वह अनिर्वचनीय है। क्रमशः तूफ़ान ने ऐसा भयानक रूप धारण किया जिससे मल्लाह भी कहने लगे कि "ऐसा तूफ़ान हम लोगों ने कभी न देखा था।" हम लोगों का जहाज़ बहुत मज़बूत और अच्छा था, किन्तु बोझा बहुत था, इससे वह ऐसा बेढब हिलने डुलने लगा कि मल्लाह लोग भी रह रहकर चिल्ला उठते थे कि "अबकी बार जहाज़ गया, अब डूबा, इस बार अब न बचेगा।" मैंने अब तक कभी

जहाज़ डूबते नहीं देखा था, इसी से कुछ जीवित दशा में था, नहीं तो भय से ही मर गया होता।

मैंने देखा कि जहाज़ के कप्तान, माँझी, मल्लाह और मेट आदि जो सहज ही डरनेवाले न थे वे लोग भी, लग्गी-पतवार छोड़कर ईश्वर की प्रार्थना करने बैठ गये। सभी लोग पल पल में समुद्र की तलहटी में जाने की आशङ्का कर रहे थे।

इसी प्रकार उद्वेग और आशङ्का में समय कटने लगा। आधी रात के समय एक नाविक ने आकर ख़बर दी कि जहाज़ में छेद हो गया है। एक और व्यक्ति ने ख़बर दी कि जहाज़ के भीतरी पेंदे में चार फुट पानी भर गया है। तब सब लोग पानी उलीचने के लिए बुलाये गये। इतनी देर में मैं अकर्म्मण्य हो बैठा था, क्योंकि मैं नौका-सम्बन्धी विद्या में अपटु था। मैं न जानता था कि क्या करने से जहाज़ की रक्षा होगी। नौका-सञ्चालन की शिक्षा का प्रारम्भ ही किया था। किन्तु इस समय पम्प चलाने के लिए मेरी भी पुकार हुई। मैं भय से काँपता हुआ कोठरी से निकल चला।

हम लोग प्राणपण से पम्प चलाकर जहाज़ में से पानी उलीचकर बाहर फेंक रहे थे। इतने में हमारे जहाज़ से विपत्ति के संकेत-स्वरूप तोप का शब्द हुआ। मैंने समझा, या तो जहाज़ टूट गया है या और ही कोई भयानक दुर्घटना हुई है। मैं ख़ौफ़ के मारे मूर्छित हो गिर पड़ा। उस समय सभी लोग अपने अपने प्राण बचाने की फ़िक्र में थे, किसी ने

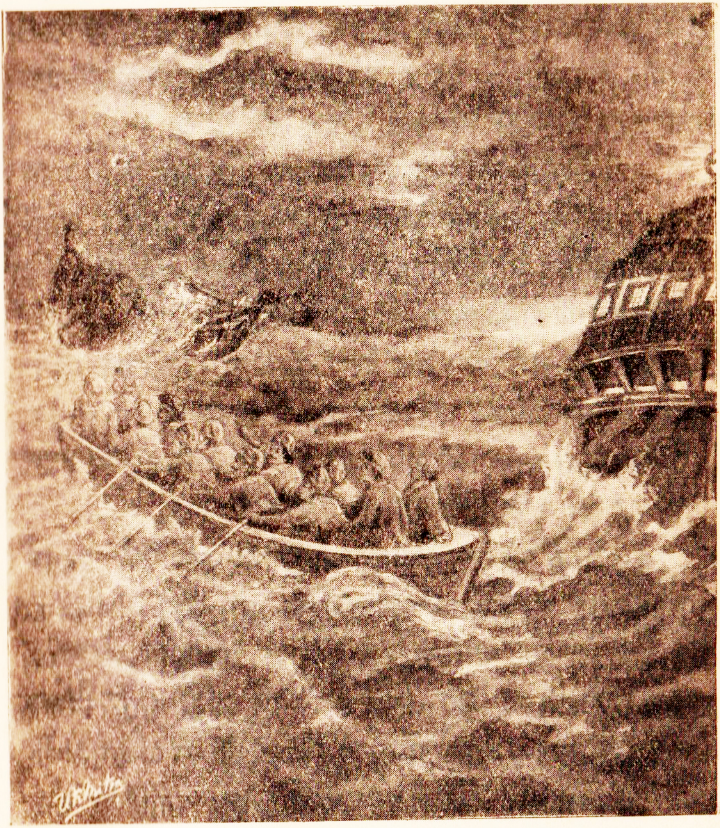

प्रवाह और पतवार के ज़ोर से नाव उत्तर ओर बह चली ।—पृष्ठ १४

मेरी अवस्था पर ध्यान न दिया। एक व्यक्ति ने मुझे मुर्दा समझकर लाठी से अलग हटा दिया और मेरी जगह आकर आप पम्प चलाने लगा। मैं बहुत देर बाद होश में आया और देह झाड़कर उठ खड़ा हुआ।

हम लोग पम्प के द्वारा पानी फेंक रहे थे, किन्तु जहाज़ के निम्नप्रदेश में पानी क्रमशः बढ़ने ही लगा। तब सभी ने निश्चय किया कि अब हम लोगों का जहाज़ डूब जायगा। यद्यपि तूफ़ान कुछ कम हुआ, तो भी किसी बन्दर तक जहाज़ का पहुँचना असम्भव जानकर जहाज़ का मालिक, सहायता के लिए, सङ्केत-स्वरूप तोप की आवाज़ करने लगा। एक जहाज़ो ने साहस करके हम लोगों के सहायतार्थ एक नाव भेजी। अत्यन्त विपत्ति के बीच से होकर नाव हम लोगों के पास आई। किन्तु वह जहाज़ के पार्श्व में किसी तरह स्थिर नहीं रह सकती थी। इस कारण हम लोग भी उस नाव पर न जा सकते थे। आख़िर उस नाव के मल्लाह हम लोगों के प्राण बचाने के लिए अपने प्राणों की ममता छोड़ करके बड़ी फुरती के साथ ख़ूब ज़ोर से पतवार चलाने लगे और हम लोगों के माँझी ने उस नाव पर झट एक रस्सी फेंक दी। नाव के खेनेवाले बड़ी कठिनाई से उस रस्सी को पकड़कर किसी किसी तरह अपनी नाव को जहाज़ के पास ले आये। फिर क्या था, हम लोग बड़ी फुरती के साथ उस पर चढ़ गये। नाव पर चढ़कर फिर उस नाव भेजनेवाले जहाज़ के

पास उसे लौटाकर ले जाना हम लोगों के लिए असम्भव था। इसलिए हम लोग नाव को समुद्र के प्रवाह में छोड़-कर धीरे धीरे सूखी ज़मीन की ओर ले जाने के लिए पतवार से काम लेने लगे। प्रवाह और पतवार के ज़ोर से नाव उत्तर ओर बह चली।

जहाज़ ख़ाली करने के पन्द्रह मिनट पीछे हम लोगों का जहाज़ डूबने का उपक्रम करने लगा। तब मैं अच्छी तरह समझ गया कि जहाज़ का डूबना कैसा भयङ्कर दृश्य है।

जब नाविकगण कहने लगे कि जहाज़ डूब रहा है तब मारे भय के मैं आँख उठाकर उस तरफ़ देख तक नहीं सकता था। जब से जहाज़वालों ने झटपट जहाज़ से उतारकर मुझे नाव पर बैठा दिया था तब से भय और भविष्य की चिन्ता से मेरा प्राण अब-तब में हो रहा था।

हम लोगों की नाव जब उच्च तरङ्ग के ऊपर आ पड़ती थी तब समुद्र का किनारा देख पड़ता था, और हम लोगों की नौका समुद्रतट के निकटवर्ती होने पर सहायता करने की इच्छा से कितने ही लोग समुद्र के किनारे इधर उधर दौड़ते हुए दिखाई दे रहे थे। किन्तु हम लोगों की नाव किनारे की ओर बहुत ही धीरे धीरे जा रही थी। नाव बहुत दूर तक बहकर एक खाड़ी में जा पड़ी इससे हवा कम लगने लगी। तब हम लोग बड़े परिश्रम से नाव को किनारे लगाकर सूखी ज़मीन पर उतर आये और स्थल मार्ग से यारमाउथ लौट गये।

वहाँ के अधिवासी सौदागर और मजिस्ट्रेट प्रभृति सभी सज्जनों ने हम लोगों के दुर्भाग्य पर सहानुभूति प्रकट कर आश्रय और साहाय्य दिया और प्रत्येक को हल या लन्दन शहर जाने तक का राह-ख़र्च देने की भी कृपा की।

इस समय मैं यही सोचने लगा कि किधर का रास्ता पकड़ूँ। सुबुद्धि होने से अपने घर लौट जाना उचित था। किन्तु मेरी ज़िद मुझे विनाश-पथ की ही ओर बलात् खींचकर ले जाने लगी। घर जाकर माँ-बाप और पड़ोसियों को मुख दिखलाने में लज्जा होने लगी। मैं, दिये के पतङ्ग की भाँति, विवेकशून्य होकर आप ही अपने विनाश की ओर उद्यत हुआ।

कप्तान का बेटा मेरा साथी था। उसे मैंने अब की बार अत्यन्त क्रुद्ध और गम्भीर देखा। स्वयं कप्तान अपने पुत्र से मेरा परिचय पाकर क्रोध से भयानक मूर्ति धारण कर बोला—अभागा कहीं का, तेरे ही कारण मेरा सर्वनाश हुआ। जा, तू अभी घर लौट जा। माँ-बाप की असम्मति से यात्रा करके तू ख़ुद मरेगा और दूसरों को भी मारेगा। कोई मुझको लाख रुपया भी देगा तो भी जिस जहाज़ पर तू रहेगा उस पर मैं पैर न रक्खूँगा। बच्चा! समुद्रयात्रा का मज़ा तो तुमने ख़ूब ही चखा, अब घर जाकर अपने माँ-बाप से जा मिलो।

उन्होंने इस प्रकार भला-बुरा कहकर मुझे कितना ही समझाया-बुझाया। किन्तु मैं तो मरने ही पर कमर कसे था, इसलिए उनके उपदेश पर ध्यान न देकर वहाँ से निकल

चला। खर्च के लिए जेब में कुछ रुपया आ ही गया था; अतएव स्थल-मार्ग से मैं लन्दन को रवाना हुआ। किन्तु रास्ते में दो ओर मेरे चित्त का खिंचाव होने लगा। एक बार मैं सोचता था कि "मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? समुद्र-यात्रा में क्या लाभ है? घर लौट जाना ही अच्छा है।" फिर अकारण लज्जा और चित्त का एक विचित्र झुकाव मुझे रोक लेता था। विशेषकर मनुष्यों की कम उम्र का स्वभाव बड़ा ही विलक्षण होता है। पाप करने में उसे कुछ लज्जा नहीं होती, बल्कि अनुताप द्वारा प्रायश्चित्त करके पाप के संशोधन करने ही में लज्जा मालूम होती है। जिस काम के करने से वे मूर्ख कहलावेंगे वह काम निःसंकोच होकर करेंगे; किन्तु जिस काम के द्वारा उनके सद्ज्ञान का परिचय पाया जायगा वही करने में उनको शर्म लगती है।

मैंने फिर समुद्रयात्रा की ही बात स्थिर की।

क्रूसो का दासत्व

मैं लन्दन में पहुँचते ही दूर देश को जानेवाले जहाज़ की खोज करने लगा। मैं जिसके जहाज़ पर जाता था वही मेरे कपड़े-लत्ते, भद्र वेष और जेब में रुपया देखकर मेरी ख़ातिर करता था। भाग्यवशात् मैं लन्दन जाकर भद्र लोगों के ही साथ परिचित हुआ। अन्यान्य युवकों की भाँति मैं कुसंगति

में न पड़ा। आफ्रिका महादेश के अन्तर्गत गिनी देश को जानेवाले जहाज़ के अध्यक्ष से मेरी भेंट हुई। पहली बार वहाँ जाने से उन्हें लाभ हुआ था, इस कारण वे फिर वहीं जा रहे थे। वे मेरे देशाटन के शौक़ की बात सुनकर बोले—यदि तुम मेरे साथ चलना चाहो तो चल सकते हो। न तुम्हें कुछ भाड़ा देना होगा, और न खाने-पीने की कुछ फ़िक्र करनी पड़ेगी। तुम मेरे साथी बनकर चलना। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो कुछ तिजारती चीज़ें भी अपने साथ ले सकते हो। हो सकेगा तो उससे वहाँ तुम्हें दो पैसे का लाभ भी हो जायगा।

मैं तुरन्त उनके प्रस्ताव पर सम्मत हुआ और शीघ्र ही उनके साथ मेरी घनिष्ठता हो गई। किन्तु यह सुयोग मेरे लिए कुछ अच्छा न था। इसे मेरा अभाग्य ही कहना ठीक होगा। जब समुद्र-भ्रमण की मेरी दुर्दम्य स्पृहा थी तब क्यों न ऐसा हो। समुद्र-भ्रमण की उत्कट अभिलाषा रहने पर तो मुझे किसी जहाज़ पर नाविक होकर जहाज़ चलाने आदि की अभिज्ञता पहले प्राप्त कर लेनी चाहिए थी। इससे भविष्य में मेरा विशेष उपकार भी हो सकता था। किन्तु मेरे अच्छे कपड़े लत्ते और भद्र वेष मेरे नाविक होने में विघ्न-स्वरूप हो रहा था। मैं जहाँ जाता था वहीं सब लोग शिष्ट जानकर मेरा आदर करते थे।

कप्तान के उपदेशानुसार मैं कुछ रुपयों के अच्छे अच्छे खिलौने और अन्यान्य चटकीली भड़कीली कम दाम की चीज़ें

लेकर गिनी शहर को गया। वहाँ अच्छा मुनाफ़ा हुआ। वहाँ से अन्दाज़न पौने तीन सेर सोने की गर्दा लाकर लन्दन में बेंचकर मैंने कोई साढ़े चार हज़ार रुपये कमाये। यही सफलता मेरे वाणिज्य और विदेश-भ्रमण के प्रलोभन का विशेष कारण हुई।

मेरे जीवन में यही एक सामुद्रिक यात्रा, कितने ही अंशों में, निर्विघ्न हुई थी। किन्तु दुर्भाग्य तो मेरे साथ ही था। मैं आफ़्रिका के दुःसह ग्रीष्म-ताप से यद्यपि अस्वस्थ हो गया तथापि यह यात्रा मेरे लिए लाभमूलक ही रही। धन कमाने के अतिरिक्त मैंने नौका-सञ्चालन के विषय में कितने ही तत्त्व भी स्थूल रूप से सीख लिये थे। यह सब मेरे मित्र कप्तान की दया का ही फल था। मुझको कुछ सिखलाते समय वे बहुत प्रसन्न होते थे, और मैं भी सीखते समय विशेष आनन्द पाता था। सारांश यह कि इस दफ़े मैं नाविक और वणिक् दोनों होकर लौटा।

मैं गिनी देश का एक व्यवसायी हो गया, किन्तु मेरे दुर्भाग्यदोष से मेरे कप्तान मित्र की शीघ्र ही मृत्यु हो गई। तब उस जहाज़ का मेट कप्तान हुआ। मैं उसके साथ थोड़ा सा मूल धन लेकर गिनी को रवाना हुआ। और रुपया अपने मित्र की स्त्री के पास बतौर धरोहर के रख गया।

इस बार मैं अत्यन्त अशुभ मुहूर्त में रवाना हुआ था। लगातार आपदाएँ मेरा पीछा करने लगीं।

हमारा जहाज़ जब आफ्रिका के उपसमीप कनारी द्वीप के मध्य से जा रहा था तब एक दिन प्रातःकाल के हलके उजेले में देखा कि मरक्को देश के शैली बन्दर का एक तुर्की लुटेरा जहाज़ पाल ताने बड़े वेग से हम लोगों को पकड़ने के लिए दौड़ा चला आ रहा है। यह देखकर हम लोग भी यथासम्भव पाल तानकर भाग चले। किन्तु वह जहाज़ हम लोगों के जहाज़ की अपेक्षा फुर्ती से चलकर क्रमशः हम लोगों के निकट आने लगा। तब हम लोग समझ गये कि कुछ घंटों में उस जहाज़वाले हम लोगों को पकड़ लेंगे। अगत्या हम लोग उनके साथ युद्ध करने की तैयारी करने लगे। हम लोगों के जहाज़ पर बारह और उन लुटेरों के पास अठारह तोपें थीं। कोई तीन बजे दिन को वह लुटेरा जहाज़ एकदम हम लोगों के समीप आ पहुँचा। किन्तु भूल से उन लोगों ने हम लोगों के पीछे की ओर से आक्रमण न करके पार्श्वभाग से आक्रमण किया। हम लोगों ने उस तरफ़ आठ तोपें लगाकर उस जहाज़ पर लगातार गोले बरसाना शुरू किया। गोलों की मार खाकर वह समुद्री लुटेरा जहाज़ दूर हट गया, किन्तु हटते हटते भी वह एक साथ दो सौ बन्दूकें दाग़ करके हमारी तोपों का जवाब देता गया। ईश्वर की कृपा से बन्दूकों की गोलियाँ हमारे दल में किसी को नहीं लगीं। वह हत्यारा जहाज़ सँभलकर फिर हम लोगों के ऊपर आक्रमण करने आया। हम लोग भी आत्मरक्षा के लिए प्रस्तुत हुए।

उस जहाज़ के अध्यक्ष ने हमारे जहाज़ से भिड़कर साठ लुटेरों को हमारे जहाज़ पर चढ़ जाने की आज्ञा दी। हमारे जहाज़ पर आते ही वे लोग झटपट पाल की रस्सी काटने लगे। हम लोगों ने बन्दूक और बर्छी चलाकर तथा खाली बारूद की पुड़िया छोड़कर दो-एक बार उनको भगाकर अपने डेक को बचाया, किन्तु अन्त में हम लोगों के तीन आदमी मारे गये, आठ घायल हुए और जहाज़ की गति भी मन्द हो गई। उसके कई कल-पुर्ज़े टूट जाने से वह लँगड़ा सा हो गया। तब हम लोग पकड़ लिये गये। हम लोगों को पकड़कर वे शैली बन्दर में ले गये।

मैंने जैसी आशङ्का की थी वैसा कोई क्रूर व्यवहार वहाँ जाने पर देखने में न आया। डाकुओं के सर्दार ने हमारे साथी अन्यान्य बन्दियों को राज-दरबार में दास बनाकर भेज दिया और मुझको अपने पास रख लिया। मैं युवा और उत्साही था, इसलिए उसने मुझको अपने काम के उपयुक्त समझकर ही शायद अपने यहाँ रख लिया।

मेरे इस अवस्था-परिवर्तन में—वणिक् से एकदम दास होकर रहने में—मेरा हृदय अत्यन्त व्यथित होने लगा। उस समय मुझे फिर पिता का उपदेश और दुर्भाग्य की बात स्मरण होने लगी। किन्तु मैं तब भी न समझ सका कि मेरे संकट का अभी अन्त नहीं हुआ है, अभी तो अनेक संकट भोगने को पड़े हैं।

मेरा नया मालिक मुझको अपने घर ले गया। तब मेरे मन में कुछ कुछ यह नई आशा होने लगी कि वह जब जब समुद्र की यात्रा करेगा तब तब मुझको ज़रूर साथ ले जायगा। और, मेरे भाग्य से, वह कभी न कभी स्पेनिश या पोर्चुगीज़ों के सरकारी लड़ाकू जहाज़ से आक्रान्त होकर बन्दी होगा तब मुझे फिर स्वाधीनता मिलेगी।

किन्तु मेरी यह आशा शीघ्र ही जाती रही। जब वह जहाज़ पर जाता था तब मुझे अपने गृहसम्बन्धी काम सँभालने के लिए घर ही पर छोड़ जाता था और जब घर लौट आता था तब मुझको जहाज़ की निगरानी के लिए जहाज़ पर सोने की आज्ञा देता था।

यहाँ रहकर भागने की चिन्ता के सिवा मेरे मन में और कोई चिन्ता न थी। चिन्ता करके भी मैं भागने का कोई उपाय स्थिर न कर सकता था। कितने ही उपाय सोचता था, किन्तु किसी में जी न भरता था, एक भी उपाय युक्तियुक्त न जान पड़ता था। वहाँ मेरे मेल का कोई ऐसा आदमी भी न था जिसके साथ कुछ सलाह करता। दो वर्ष प्राय: यों ही बीत गये। भागने की आशा भी क्रमश: क्षीण होने लगी। किन्तु दो साल के बाद एक अनुकूल घटना के सुयोग से भागने की पुरानी चिन्ता फिर मेरे मन में उत्पन्न हुई। मेरा मालिक द्रव्य के अभाव से उस बार अधिक समय तक घर पर रह गया। उन दिनों, आकाश साफ़ रहने पर,

प्रति सप्ताह में दो तीन दिन जहाज़ की उपसहायक छोटी डोंगियों पर चढ़कर वह मछली पकड़ने जाता था। वह मुझको और मारइस्को नामक एक नवयुवक को पतवार चलाने के लिए साथ ले जाता था। मैं नाव खेकर उसे ख़ूब प्रसन्न कर देता था। दूसरे, मैं मछली पकड़ने में भी पूरा उस्ताद था। इसलिए वह कभी-कभी अपने आदमी मूर और मारइस्को को मेरे साथ देकर मुझी को मछली पकड़ने के लिए भेज देता था।

एक दिन बहुत सबेरे जब हम लोग मछली पकड़ने चले तब ऐसा गाढ़ा कुहरा पड़ा कि किनारे से आध मील दूर जाते जाते किनारा अदृश्य हो गया। हम लोग किस तरफ़ कहाँ जा रहे हैं, यह कुछ न समझ पड़ा। सारे दिन और सारी रात हम लोग बराबर नाव खेते रहे। जब प्रभात हुआ तब देखा कि हम लोग किनारे की ओर न जाकर किनारे से दो तीन मील दूर समुद्र की ही ओर चले गये हैं। निदान हम लोग बहुत परिश्रम और संकटों को झेलते हुए राम राम करके किनारे पर पहुँचे। किन्तु कठिन परिश्रम और दिन-रात के उपवास से हम लोग राक्षस की भाँति भूख से व्याकुल हो गये थे।

हमारे स्वामी ने इस यात्रा में शिक्षा पाकर भविष्य में विशेष रूप से सावधान होने का संकल्प किया। उसने प्रतिज्ञा की कि अब कभी दिग्दर्शक कंपास और भोजन की सामग्री साथ लिये बिना मछली पकड़ने न जायँगे। वह हम

लोगों के गिनी जानेवाले जहाज़ की एक लम्बी सी डोंगी पकड़ लाया था। उसने उस डोंगी के आगे-पीछे मल्लाह के खेने की जगह छोड़कर उसके बीच में एक छोटा सा घर बनाने के लिए अपने मिस्त्री को हुक्म दिया। उसका मिस्त्री भी एक बन्दी अँगरेज़ युवक था। मालिक की आज्ञा पाते ही उसने एक कमरा और उसके भीतर खाने पीने की वस्तुएँ तथा कपड़ा आदि रखने के लिए आलमारी इत्यादि बनाकर एक अच्छा कमरा तैयार कर दिया।

हम लोग अक्सर उसी डोंगी को लेकर मछली पकड़ने जाते थे। मछली पकड़ने में मैं सिद्धहस्त था, इसलिए कभी ऐसा न होता कि मेरा स्वामी मुझको अपने साथ न ले जाय। एक दिन निश्चय हुआ कि उस देश के दो तीन प्रतिष्ठित व्यक्ति मूर के साथ मछली का शिकार खेलने जायँगे। इस कारण पूर्वरात्रि में ही खाने-पीने की यथेष्ट सामग्री डोंगी में भरी गई। वे लोग मछलियों और चिड़ियों का शिकार करने-वाले थे, इसलिए उन्होंने मुझको कुछ गोली-बारूद और बन्दूक भी साथ में ले जाने की आज्ञा दी थी।

दूसरे दिन बड़े तड़के मैंने, स्वामी की आज्ञा के अनुसार, सभी उपयुक्त वस्तुएँ ले जाकर कमरे में रख दीं। नाव को अच्छी तरह धो-धुलाकर साफ़ करके मालिक और उसके साथियों के आने की मैं प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर के बाद मालिक ने आकर मुझसे कहा—"क्रूसो, हमारे आग-

न्तुक व्यक्तियों का आज शिकार के लिए आना न हुआ। वे किसी आवश्यक कार्यवश रुक गये। वे लोग आज रात को हमारे ही घर भोजन करेंगे, इसलिए हम भी आज मछली के शिकार में न जा सकेंगे। तुम्हीं लोग जाओ, जो कुछ थोड़ी घनी मिल जाय, लेकर शीघ्र घर लौट आना।" वह अपने विश्वासपात्र मूर और इकजूरी नामक एक लड़के को मेरे साथ जाने की आज्ञा देकर चला गया।

उस समय भाग निकलने की धुन फिर मेरे हृदय में समाई।

क्रूसो का भागना

एक बहुत बड़ी डोंगी मेरे अधीन हुई। उसे छोटा मोटा जहाज़ ही कहना चाहिए। मेरे लिए यह कुछ सामान्य सुयोग न था। जब मेरा मालिक चला गया तब मैं मछली पकड़ने का बहाना करके भागने का उद्योग करने लगा। किन्तु भागकर किस ओर कहाँ जाऊँगा इसका कुछ ठीक न था; केवल वहाँ से किसी तरह भाग निकलना ही मेरा उद्देश्य था।

मैंने जलयात्रा के लिए कुछ अधिक परिमाण में खाद्य-सामग्री लेने के अभिप्राय से छल करके मूर से कहा—"मालिक के लिए जो खाने की चीज़ें लाकर रक्खी हैं, उन्हें हम लोग खा लें, यह ठीक नहीं; हम लोग अपने लिए कुछ खाद्य अलग ले लें।" उसने भी मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर

कहा—"हाँ, यह बात सही है।" फिर वह बड़ी फुरती से एक बहुत बड़े टोकरे में खाने की सामग्री और तीन घड़ों में मीठा जल भरकर ले आया। मूर जब खाद्य वस्तु लाने गया था तब मौक़ा पाकर मैंने भी कुछ खाने-पीने की वस्तुएँ लाकर इस ढँग से वहाँ रख दीं कि जिसके देखने से मालूम हो कि वे पहले ही से मालिक के लिए लाकर रक्खी गई हैं। खाने-पीने की वस्तुओं के अतिरिक्त मैंने बीस-पचीस सेर मोम, थोड़ा सूत, एक कुल्हाड़ी, एक कुदाल और एक हथौड़ी चुपचाप छिपाकर नाव में रख ली थी। इन सब सामग्रियों से मेरा यथेष्ट उपकार हुआ था। विशेष करके मोमबत्ती बनाने से मुझे बड़ी सहायता मिली थी। मैंने मूर को एक बार और ठगा। उससे कहा, "मालिक की बन्दूक़ तो नाव में है ही, कुछ गोली-बारूद पास रहती तो हम लोग चिड़ियों का भी शिकार कर सकते।" यह सुनकर मूर ने उसी समय कुछ छर्रे, बारूद और गोली आदि लाकर मेरे हवाले किया। मैंने उन चीज़ों को अपने पहले के लाये हुए सामान के साथ रख दिया।

इस प्रकार भागने का सब सामान ठीक करके हम लोग रवाना हुए। बन्दर के सामने जो क़िला था, उसके पहरेदार हमारे परिचित थे। इसलिए उन लोगों ने मुझ पर विशेष लक्ष्य न किया। हम लोग बन्दर से डेढ़ दो मील पर जाकर, नाव का पाल गिराकर, मछली पकड़ने लगे। उस

समय हवा मेरी इच्छा के विरुद्ध बह रही थी। उत्तरीय वायु बहने से मैं स्पेन के उपकूल या केडिज उपसागर में जा पहुँचता। किन्तु हवा चाहे जैसी बहे, मैं इस कुत्सित स्थान को त्यागकर ज़रूर जाऊँगा—यह मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया था। जो भाग्य में बदा होगा, पीछे होगा। भविष्य की चिन्ता भविष्य में की जायगी, अभी जिस तरह हो यहाँ से रफूचकर होना ही ठीक है।

हम लोग बड़ी देर तक बनसी डाले बैठे रहे, पर एक भी मछली नहीं पकड़ सके; कारण यह कि मछली मेरी बनसी को निगल भी जाती थी तो भी मैं लग्गी को नहीं खींचता था। मैंने मूर से कहा—'यहाँ मछली पकड़ने की सुविधा न होगी, ज़रा गहरे पानी में चलो।' वह राज़ी हो गया। वह नाव के अगले भाग की ओर था; उसने पाल तान दिया। मेरे हाथ में नाव खेने का लग्गा था। मैं धीरे धीरे नाव को खेकर किनारे से कोई डेढ़ मील दूर ले गया। तब मैंने मछली पकड़ने का बहाना करके नाव को ठहराया और उस बालक के हाथ में लग्गा देकर मैं नौका के सम्मुख की ओर गया। वहाँ जाकर, मानो मैं कोई चीज़ खोज रहा हूँ इस तरह का भाव दिखाकर, मैं मूर के पीछे गया और एकाएक उसकी कमर पकड़कर ख़ूब ज़ोर से उसे उठाकर पानी में फेंक दिया। वह समुद्र में गिरकर सूखी लकड़ी की तरह तैरने लगा। वह नाव पर बिठा लेने के लिए विनती करके कहने

लगा कि चाहे जितनी दूर चलो, मैं बिना कुछ उज्र किये तुम्हारे साथ चलूँगा। वह तैरने में अत्यन्त कुशल था। वह मेरी नाव के पीछे पीछे बड़े वेग से तैरकर आने लगा। उस समय हवा का उतना ज़ोर न था, इससे आशङ्का होने लगी कि वह नाव को शीघ्र ही पकड़ लेगा। तब मैं झट बजरे की कोठरी में से बन्दूक़ ले आया, और उस (मूर) की ओर लक्ष्य करके बोला—"देखो, मैं तुम पर प्रहार करना नहीं चाहता और यदि तुम गोलमाल न करोगे तो तुम पर अस्त्रप्रहार करूँगा भी नहीं; तुम तो तैरना खूब जानते हो, अभी समुद्र भी शान्त है। इसलिए तैरकर समुद्र के किनारे चले जाओ। यदि तुम मेरे पास आओगे तो, समझ रक्खो, मैं इसी बन्दूक़ से तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूँगा। जिस तरह भी हो, मैं स्वतन्त्र होने का संकल्प कर चुका हूँ।" यह सुनकर वह मुँह फिराकर किनारे की ओर जाने लगा। वह जैसा तैराक था उससे वह निःसन्देह बिना किसी क्लेश के किनारे पहुँच गया होगा।

इकजूरी लड़के को डुबाकर मैं मूर को साथ ले लेता तो मुझे बहुत सुभीता होता; किन्तु उस पर विश्वास न था। मूर के चले जाने पर मैं उस छोकरे की ओर घूमकर बोला—"क्यों रे लड़के! तू मेरा विश्वासपात्र होकर रहेगा न? नहीं तो तुझे भी समुद्र में डाल दूँगा।" उसने मेरे मुँह की ओर ताककर ऐसे सरल भाव से हँसकर शपथ की कि मैं उस पर अविश्वास न कर सका।

यदि तुम मेरे पास आओगे तो, समझ रक्खो, मैं इसी बन्दूक़ से तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूँगा।—पृ० २७

मूर जब तक तैरता हुआ दिखाई दिया था तब तक मैंने नाव की मांगी को समुद्र की ही ओर घुमा रक्खा था, मानो मैं जिब्राल्टर मुहाने की ही ओर जा रहा हूँ। जिसके हृदय में किञ्चित् भी बुद्धि का लेश होता वह इसी तरह सोचता, क्योंकि कौन ऐसा होगा जो अपनी ख़ुशी से असभ्य देश में रहकर नरशत्रु काफ़िर या हिंस्र जन्तु के मुँह में पड़ने की इच्छा करेगा ?

मैं सायंकाल के अन्धकार में अन्तर्हित होने की इच्छा से नाव की गति को घुमा फिराकर किनारे के आसपास से होकर दक्खिन और पूरब की ओर जाने लगा। उस समय हवा ख़ूब ठिकाने से बह रही थी, समुद्र भी स्थिर था; मेरी नाव पाल के सहारे चल पड़ी। दूसरे दिन पिछले पहर जब मैंने समुद्र का तट देखा तब मैं शैली बन्दर से क़रीब डेढ़ सौ मील दक्खिन ओर जा पड़ा था। वहाँ एक भी मनुष्य मेरे दृग्गोचर न हुआ। इससे जान पड़ा कि मैं मरको के सुलतान या निकटवर्ती ऐसे ही किसी राजा के राज्य से बाहर निकल आया हूँ। मैं किस मुल्क में आ पहुँचा, इसका कुछ ठिकाना नहीं। मूर लोगों के हाथों फिर बन्दी हो जाने का भय मेरे हृदय में यहाँ तक प्रबल था कि कहीं पर रुकने या स्थल में ठहरने की मेरी हिम्मत न पड़ती थी। वायु का क्रम पाँच दिन तक बहुत अच्छा था। मैं भी पाँच दिन तक बराबर चलता ही रहा। नाव का पाल भी इस बीच में कहीं नहीं उतारा। पाँच दिन

के बाद हवा प्रतिकूल होकर दखनही बहने लगी। तब मैंने निश्चय किया कि यदि कोई जहाज़ मेरे पकड़ने के लिए पीछे आता भी होगा तो प्रतिकूल वायु के कारण उसकी गति रुद्ध होगी वा उसे सन्तोष करके लौट जाना पड़ेगा। अतएव अब लंगर डालने में कुछ हानि नहीं। यह सोचकर मैंने एक छोटी नदी के मुहाने में लंगर डाला। वह नदी कहाँ से निकलकर किस देश से होती हुई समुद्र में आ मिली है, या उसका नाम क्या है, इन बातों का कुछ भी ठीक पता न लगा; न वहाँ किसी आदमी को ही मैंने देखा। देखने की लालसा भी न थी। उस समय मेरे मन में यदि कुछ इच्छा थी तो केवल मीठे जल की। मैं इस मुहाने में सन्ध्या समय पहुँचा; अन्धकार होते न होते हम लोगों ने जंगली जानवरों की इतनी अद्भुत भयङ्कर ग़ुर्राहट और चीत्कार सुना जिससे डर के मारे हमारे प्राण सूख गये। वे कौन पशु थे और कैसे थे, यह हम लोग न जान सके। हम सारी रात भयविह्वल दशा में पड़े रहे, एक बार भी नींद न आई। बड़े बड़े वन्य पशु समुद्र के जल में प्रवेश कर रात भर स्नान, क्रीड़ा और भीषण चीत्कार करते रहे।

आख़िर हमने उन जन्तुओं में से एक को नाव की ओर तैरकर आते देखा। उसकी ग़ुर्राहट और श्वास-निःश्वास के प्रक्षेप से जान पड़ा कि वह बहुत ही बड़ा हिंस्र जन्तु होगा। इकजूरी ने कहा—"वह सिंह है।" मैं सिंह के सम्बन्ध में जो

कुछ जानता था उससे मैंने भी वही निश्चय किया। बेचारा इक्जूरी भय से मृतप्राय होकर, लंगर उठाकर नाव खोल देने के लिए, मुझसे अनुरोध करने लगा। मैंने कहा—"नहीं, लंगर उठाने की कुछ ज़रूरत नहीं; यदि ज़रूरत होगी तो लंगर की रस्सी को बढ़ा दूँगा। इससे नाव इतनी दूर चली जायगी कि फिर कोई जानवर पास न जा सकेगा।" इतने में देखा कि वह पशु नाव से क़रीब दो लग्गी के फ़ासले पर आ गया। मैंने अचम्भे में आकर झट कमरे के भीतर से बन्दूक़ लाकर उस पर गोली चला दी। बन्दूक़ की आवाज़ सुनते ही वह तुरन्त तैरता हुआ किनारे की ओर लौट चला।

बन्दूक़ की आवाज़ होते ही समुद्र के तट पर और ऊपर स्थल भाग में ऐसा भयानक चीत्कार, हुङ्कार और कोलाहल होने लगा जिससे स्पष्ट मालूम हुआ कि उन जन्तुओं ने कभी बन्दूक़ की आवाज़ न सुनी थी। उनका भीषण नाद सुनकर मेरे मन में बड़ी चिन्ता हुई। अब कैसे किनारे उतरूँगा? बाघ, सिंह आदि हिंस्र पशु या तत्तुल्य असभ्य मनुष्य इन दोनों में जिस किसी के पंजे में पड़ेंगे, फल हम लोगों के लिए एक सा ही होगा।

जो हो, हम लोगों को पानी के लिए स्थल पर कहीं न कहीं उतरना ही होगा। क्योंकि हमारे पास कण्ठ भिगोने को भी थोड़ा सा जल न बच रहा था। इक्जूरी ने कहा—यदि तुम मुझको किनारे उतार दो तो मैं पीने का पानी

खोजकर ला सकता हूँ। मैंने कहा—तुम क्यों जाओगे? क्या मैं जाने लायक़ नहीं हूँ?

इकजूरी—"नहीं, नहीं, तुम मत जाओ; यदि कोई हिंस्र जंगली जानवर आवेगा तो मुझी को खायगा, तुम तो भागकर प्राण बचा सकोगे।" उसने इस बात को ऐसे कोमल स्वर में कहा कि मैं मुग्ध हो गया। मैंने कहा—"अच्छा, तो हम तुम दोनों साथ साथ चलेंगे। यदि हिंस्र जन्तु हम लोगों को खाने दौड़ेगा तो उसे मार डालेंगे।" निदान हम लोग, जहाँ तक संभव था, नाव को किनारे की ओर ले गये और दो घड़े तथा बन्दूक़ लेकर कुछ दूर तक पानी में उतरकर सूखी ज़मीन पर आये।

नाव छोड़कर मैं बहुत दूर तक जाने का साहस न कर सका। क्या जानें, कहीं जंगली लोग जलपथ से आकर हमारी नाव को ज़ब्त न कर लें। इकजूरी क़रीब एक मील पर एक ढालू जगह देखकर उसी ओर गया। थोड़ी ही देर बाद देखा, वह दौड़ा हुआ आ रहा है। मैंने समझा, शायद किसी दुष्ट नरघाती मनुष्य ने उसका पीछा किया है, या किसी हिंस्र जन्तु को देखकर वह डर से भागा आ रहा है। मैं उसकी ओर दौड़कर गया। उसके समीप जाकर मैंने देखा कि वह ख़रगोश के मानिन्द एक जानवर को मारकर पीठ पर लटकाये लिये आ रहा है। यह देखकर मैं बहुत ख़ुश हुआ। मैंने उसका मांस चखकर देखा, अच्छा, सुस्वादु

था। विशेष आनन्द मुझे इस बात से हुआ कि इकजूरी को मीठा पानी मिल गया और किसी जंगली आदमी ने उस पर आक्रमण नहीं किया। इससे वह भी बहुत प्रसन्न था।

पानी के लिए हम लोगों को विशेष कष्ट न उठाना पड़ा। क्योंकि नदी का जल, भाटे के समय, मुहाने से कुछ ही दूर पर बहुत बढ़िया सुस्वादु था, ज़रा भी खारी न था। हम वहाँ से अपना घड़ा भर लाये और खरगोश का मांस पकाकर हमने खाया-पिया। उस देश में कहीं आदमी का नाम निशान तक न देखकर हम फिर वहाँ से चलने को प्रस्तुत हुए।

इसके पूर्व एक बार हम इस देश में वाणिज्य करने आये थे। हम अटकल से इस बात का अनुभव कर रहे थे कि यहाँ से कनेरी और केपवार्ड द्वीप-समूह बहुत दूर न होगा। हमारे मन में इस बात की आशा होने लगी कि अँगरेज़ लोग जहाँ तिजारत करते हैं वहाँ पहुँचने से, संभव है, उन लोगों का कोई जहाज़ देख पड़े और वे लोग हमारा उद्धार करें। यह प्रदेश बिलकुल जनशून्य था। मूर जाति के भय से हबशी लोग इस देश को छोड़कर दक्खिन ओर चले गये हैं। इस देश को ऊसर और हिंस्र जन्तुओं से भरा जानकर मूर लोग भी इस पर अपना अधिकार नहीं जमाते। इसलिए यह देश मनुष्यों से बिलकुल ख़ाली पड़ा था।

हम लोग यहाँ से बिदा होकर पानी लेने के लिए कई बार किनारे की सूखी भूमि में उतरे थे। एक दिन सबेरे एक जगह

नाव लगाकर देखा, एक बहुत बड़ा सिंह एक पहाड़ की गुफा में पड़ा सो रहा है। हमारे साथ तीन बन्दूकें थीं। हमने तीनों में अच्छी तरह गोली बारूद भर दी। तदनन्तर सिंह के मस्तक को लक्ष्य करके गोली चलाई। सिंह अगले पाँव का पंजा मुँह पर रक्खे सो रहा था। इससे गोली उसके माथे में नहीं पाँव में लगी। सिंह गरजकर जाग उठा और दौड़कर ज्योंही चलना चाहा त्योंही लड़खड़ाकर गिर पड़ा। उसके घुटने की हड्डी टूट गई थी। वह तीन पाँवों के बल से फिर सँभलकर उठा। भयङ्कर गर्जन करके उसने भागना चाहा। हमने दूसरी बन्दूक उठाकर उसके सिर को लक्ष्य कर फिर गोली चलाई। गोली की चोट खाते ही वह आर्तनाद करके गिर पड़ा और छटपटाने लगा। यह देखकर मैं खुश हुआ। इकजूरी साहस करके, हाथ में बन्दूक लेकर, नाव से उतर गया। उसने सिंह के पास जाकर उसके माथे पर बन्दूक की नली रखकर गोली दाग दी। सिंह मरकर ठण्डा हो गया।

यह एक भारी शिकार हाथ लगा, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु यह खाद्य न था। निष्प्रयोजन तीन आवाज़ों की गोली-बारूद खर्च करने से हमारा मन बहुत उदास हो गया। हम लोगों ने दिन भर परिश्रम करके सिंह का चमड़ा उतार लिया और उसे नाव की छपरी पर सूखने को फैला दिया। वह दो दिन की धूप लगने से अच्छी तरह सूख गया। फिर हम उस पर सोने लगे।

इसके अनन्तर लगातार दस बारह दिन तक हम दक्षिण दिशा की ओर चले; पानी की आवश्यकता हुए बिना हम किनारे की भूमि पर न उतरते थे। हम लोगों की खाद्य-सामग्री समाप्त हो चली, इसलिए हम बहुत थोड़ा थोड़ा खाने लगे।

हम इस ताक में थे कि गैम्बिया या सेनिगल नदी के निकट जा पहुँचेंगे तो वहाँ गिनी और ब्रेज़िल प्रभृति देश का वाणिज्य-व्यवसायी कोई न कोई यूरोपीय जहाज़ मिल ही जायगा। यदि जहाज़ न मिलेगा तो हबशियों के हाथ में पड़कर मर मिटेंगे।

क्रूसो का विपद से छुटकारा

जय नहीं तो क्षय होगा ही, यह संकल्प करके हम दस दिन और चले; तब मनुष्यों की बस्ती का कुछ कुछ चिह्न दिखाई देने लगा। हमने नाव पर जाते समय दो तीन जगह देखा कि काले काले नंगे लोग कछार में खड़े होकर हम लोगों की ओर देख रहे हैं। उन लोगों को देखकर हम उनके पास जाना चाहते थे किन्तु इकजूरी ने हमें रोका। तब हम नाव को किनारे किनारे ले चले। यह देखकर वे लोग भी नाव के साथ साथ दौड़ चले। हमने ग़ौर करके देखा, उन लोगों में किसी के पास कोई हथियार न था। सिर्फ़ एक आदमी के हाथ में एक लम्बी सी पतली लाठी थी। वे लोग लक्ष्य को

स्थिर करके बहुत दूर से लाठी फेंककर मार सकते थे। इस कारण हमने नाव को किनारे से कुछ दूर ही ठहराकर इशारे से उन लोगों से कुछ खाने की चीज़ माँगी। उन लोगों ने भी संकेत द्वारा हमसे नाव ठहराने को कहा और कुछ खाद्य सामग्री लाना स्वीकार किया। हमने पाल गिराकर नाव को ठहराया। उन दर्शकों में से दो मनुष्य ऊपर दौड़कर गये और आध घंटे के भीतर कुछ सूखा मांस और अपने देश का थोड़ा सा अन्न ले आये। मालूम न था कि यह खाद्य किस तरह खाया जाता है, फिर भी उनको ले लेना हमारे लिए आवश्यक था। अब प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि इन सामग्रियों को किस युक्ति से लेना ठीक होगा। क्योंकि हमें भी उन लोगों के पास जाने का साहस नहीं होता था और वे लोग भी हमें भय की दृष्टि से देख रहे थे। आखिर उन्हीं लोगों ने प्रश्न का समाधान कर दिया। वे लोग बिलकुल जल के स्रोत के समीप रखकर दूर जा खड़े हुए। हम लोग नाव से उतरकर खाने की वस्तुएँ लेकर फिर नाव पर आ चढ़े। वे लोग किनारे पर आ खड़े हुए।

हमने उन लोगों को इशारे से धन्यवाद दिया। कोरा धन्यवाद छोड़ उन लोगों को देने योग्य हमारे पास एक भी वस्तु न थी। किन्तु दैवयोग से उन लोगों को शीघ्र ही परम प्रसन्न कर देने का एक अच्छा सुयोग हाथ आया। जब हम किनारे के समीप ठहरे हुए थे तब दो बलवान् पशु परस्पर

लड़ते हुए पहाड़ से उतरकर नदी की ओर आने लगे। वे खेल रहे थे या परस्पर लड़ रहे थे यह ठीक समझ में न आया। उनको आते देखकर जितने लोग किनारे पर खड़े थे वे, विशेषकर स्त्रियाँ, भयभीत होकर भागने लगीं; किन्तु वे दोनों पशु काफ़िरों की ओर ध्यान न देकर पानी में जा गिरे। कुछ देर वे पानी में उछल-कूदकर तैरने लगे। आख़िर उन दोनों में से एक हमारी नौका के बहुत ही निकट आया। यह देख हम बन्दूक़ में गोली भरकर तैयार हो गये और इक़ज़ूरी से ऊपर दोनों बन्दूक़ों में गोली भरने को कहा। वह जंगली जानवर जब हमारे लक्ष्य के भीतर आया तब हमने गोली मारी। गोली ठीक उसके सिर में लगी। वह उसी घड़ी डूब गया और कुछ ही देर में फिर उतरा आया। वह मृत्यु की यन्त्रणा से छटपटाता हुआ पानी में ऊबता डूबता किनारे की ओर फिर चला। किन्तु कछार के ऊपर जाने के पहले ही मर गया। दूसरा पशु, बन्दूक़ की आवाज़ से डरकर, पहाड़ की ओर जी छोड़कर भागा।

बन्दूक़ की आवाज़ सुनकर और आग की झलक देखकर वनवासियों के आश्चर्य और भय की सीमा न रही। कितने ही लोग तो भय से मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े। उस जानवर के मर जाने पर हमने उन लोगों को संकेत किया कि उस जन्तु को पानी से निकालकर ऊपर ले जाओ। तब वे लोग साहसपूर्वक पानी में घुसकर उसको खोजने लगे। उसे खींच-

कर जब वे लोग ऊपर ले आये तब हमने उसे पहचाना। वह बहुत बड़ा चीता था। उसका अङ्ग गोली और छर्रों से छिन्न भिन्न हो गया था। हबशियों ने प्रसन्न होकर हमारी प्रशंसा के हेतु हाथ उठाये कि इन्होंने उसे कैसे मार डाला। वे लोग विस्मित होकर सोचने लगे। फिर उन्होंने हमसे उस बाघ के खाने की अनुमति चाही। हमने ऐसा संकेत किया मानो बड़ी प्रसन्नता से उसके लिए आज्ञा देते हैं। इससे वे लोग बहुत ख़ुश हुए। वे झटपट उसे काटने लग गये। उन लोगों के पास यद्यपि छुरी न थी तथापि उन लोगों ने एक काठ के बने पैने औज़ार से इतनी आसानी और इतनी शीघ्रता से बाघ की खाल उतार ली कि हम लोग छुरी से भी वैसा नहीं कर सकते। उन लोगों ने हमको भी कुछ मांस देना चाहा किन्तु हमने अस्वीकार करके संकेत द्वारा सब मांस उन्हीं लोगों से ले लेने को कहा। हमने सिर्फ़ उसका चमड़ा मांगा। सो उन लोगों ने बड़ी ख़ुशी से वह हमारे हवाले किया और अपने देश का बना बनाया कुछ खाना भी ला दिया। यद्यपि हमें यह मालूम न था कि वह खाना किस क़िस्म का था तथापि ले लिया; और एक मिट्टी के बर्तन को उलटाकर दिखलाया कि हमारे पास पीने का पानी बिलकुल नहीं है, हमें थोड़ा जल चाहिए। तब हमारे इस संकेत को समझकर उन लोगों ने किसी को पुकारकर कुछ कहा। थोड़ी देर में दो स्त्रियाँ मिट्टी के बड़े बर्तन में पानी ले आईं। वे बिलकुल नंगी

थीं। पहले की तरह वे लोग उस बर्तन को नीचे रखकर हट गये। हमने इकजूरी को भेजकर अपने तीनों ख़ाली घड़ों को भरवा मँगवाया।

हमारे पास अन्न, फल-मूल और जल इत्यादि सभी वस्तुएँ खाने-पीने की जुट गईं। हमने अपने हबशी मित्रों से बिदाई लेकर प्रस्थान किया। ग्यारह दिन बराबर अग्रसर होने के बाद सामने एक टापू दिखाई दिया। वह टापू जल के बीच नाक की तरह बाहर निकल आया था। उसे घूमकर बाहर निकल आने पर आगे की ओर समुद्र में और भी टापू देख पड़े। तब हमने समझा कि हम वार्ड अन्तरीप और वार्ड द्वीप के मध्य में आ गये हैं। तो भी वे दोनों स्थान वहाँ से बहुत दूर थे। हमको किस तरफ़ जाना चाहिए, इसका हम निर्णय न कर सकते थे। यह आशङ्का भी हो रही थी कि हवा तेज़ हो जायगी तो दो स्थानों में कहीं भी न पहुँच सकेंगे।

इस तरह चिन्ता से व्याकुल होकर हम कमरे के भीतर जा बैठे। इकजूरी नाव खे रहा था। वह एकाएक ज़ोर से चिल्ला उठा—"महाशय, महाशय, एक पालवाला जहाज़!" उसके पुराने मालिक का कोई जहाज़ हम लोगों पर धावा करने आ रहा है, यह समझकर वह अत्यन्त डर गया। किन्तु हमको डर न लगा, क्योंकि हम जानते थे कि उन लोगों की सीमा से अब हम बाहर निकल आये हैं। हम फुरती से कमरे के बाहर आये और देखते ही समझ गये कि वह पोर्तु-

गीज़ों का जहाज़ है। हमने अनुमान किया कि वह हबशियों को लाने के लिए गिनी-उपकूल में जा रहा है। किन्तु कुछ ही देर में हमारा यह अनुमान ग़लत निकला। जहाज़ किनारे की तरफ़ न आकर समुद्र की ही ओर जाने लगा। तब हमने उन लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की इच्छा से समुद्र की ओर नाव को छोड़ दिया।

जहाँ तक संभव था, पाल तान देने पर भी हमने देखा कि संकेत द्वारा उनकी दृष्टि का आकर्षण करने के पहले ही वे लोग बहुत दूर चले जायँगे। हम हताश हो रहे थे। इसी समय देखा कि वे लोग पाल गिराकर हमारे लिए अपेक्षा कर रहे हैं। वे कदाचित् दूर-वीक्षण यन्त्र लगाकर हमें देख सकें, इस आशा से उत्साहित होकर हम झंडी उड़ाने लगे। बन्दूक की आवाज़ करके हमने अपनी विपत्ति की सूचना दी। यह देखकर वे लोग दया करके जहाज़ को हमारी ओर घुमाकर लाने लगे। कोई एक पहर में हम उन लोगों के पास पहुँच गये।

उन लोगों ने क्रमशः पोर्तुगीज़, स्पेनिश और फ्रांस की भाषा में हमसे परिचय पूछा, पर हम उनकी एक भी भाषा न समझ सके। उस जहाज़ पर एक स्काच नाविक था। उसने जब अँगरेज़ी में हमारा परिचय पूछा तब हमने उससे कहा—हम अँगरेज़ हैं, शैली से मूरों का दासत्व त्यागकर भाग निकले हैं। यह सुनकर उन लोगों ने हमें जहाज़ पर आने

की आज्ञा दी और बड़ी दयालुता के साथ हम लोगों को तथा हमारी चीज़-वस्तुओं को अपने जहाज़ पर रख लिया।

उस दु:सह दुर्दशा और निराशा से उद्धार होने पर हमें जो आनन्द हुआ, उसका वर्णन नहीं हो सकता। इस उपकार की खुशी में हमारे पास जो कुछ था सब हमने जहाज़ के कप्तान को उपहार के तौर पर दे दिया। किन्तु उन्होंने उदारता का परिचय देकर कहा—"महाशय, मैं आपका उद्धार करने के बदले आपसे कुछ न लूँगा। कौन जानता है, कभी मेरी भी अवस्था आप ही की सी हो जाय। यही सोचकर मैंने आपका उद्धार किया है। हम लोग ब्रेज़िल जा रहे हैं। आप भी अपने देश से बहुत दूर जा पहुँचेंगे। आपके पास से यदि मैं आपका सर्वस्व ले लूँ तो आप वहाँ जाकर क्या खाकर प्राण धारण करेंगे। तब, जिस प्राण की आज मैंने रक्षा की है उसी के विनाश का क्या मैं फिर कारण बनूँगा? मैं आपको योंही ब्रेज़िल पहुँचा दूँगा और आपकी जितनी चीज़ें हैं, सब आपको दे दूँगा। ये सब वस्तुएँ आपके भरण-पोषण और घर लौट जाने के समय राह-खर्च का काम देंगी।" यह कहकर उन्होंने नाविकों को रोक दिया कि वे हमारी किसी चीज़ को न छुएँ और हमारी सब चीज़ें अपने ज़िम्मे रखकर मुझे एक चिट्ठा लिख दिया। उस चिट्ठे में मिट्टी के घड़ों तक का उल्लेख था। उसका मतलब यही था कि ब्रेज़िल में जाकर हम उस चिट्ठे के ज़रिये अपनी सारी चीज़ें सहेज लें।

हमारी नाव बहुत बढ़िया थी। कप्तान ने उसे मोल लेने की इच्छा से दाम पूछा। हमने कहा—"आपके साथ मोल तोल क्या ? आपकी दृष्टि में जो मूल्य जँचे वही दे दीजिए।" इस पर उन्होंने हमको साढ़े छः सौ रुपया देना चाहा और कहा, ब्रेज़िल जाने पर यदि इसका दाम कोई अधिक लगावेगा तो हम भी अधिक देंगे। उन्होंने पाँच सौ रुपया देकर इकजूरी को ख़रीदना चाहा; किन्तु जिसने मुझे स्वाधीनता-प्राप्ति में सहायता दी थी, उसकी स्वाधीनता बेचने का विचार मेरा न हुआ। इकजूरी के कप्तान के पास रहना स्वीकार करने पर मैंने उसे योंही दे दिया। कप्तान ने कहा—इकजूरी यदि क्रिस्तान हो जाय तो उसे हम दस वर्ष बाद दासत्व से मुक्त कर देंगे।

हम लोग बाईस दिन के बाद निर्विघ्न ब्रेज़िल के शान्त उपसागर में पहुँचे। बुरी दशा से तो उद्धार हुआ, किन्तु अब क्या करना होगा ? यही एक भारी चिन्ता थी। कप्तान के सद्व्यवहार का सम्यक् वर्णन करने में हम अक्षम हैं। उन्होंने हमसे कुछ भी जहाज़ का भाड़ा न लिया। इसके अलावा हमने अपने पास की जिन चीज़ों को बेचना चाहा वे सब उन्होंने मोल ले लीं। बाघ और सिंह का चमड़ा, दो बन्दूकें और मोम वग़ैरह बेंचने पर हमें कोई दो हज़ार रुपये मिले। यही पूँजी लेकर हम ब्रेज़िल के किनारे उतरे।

———

क्रूसो की खेती

ब्रेज़िल में आने के कुछ ही दिन बाद कप्तान ने एक भले मानस के यहाँ मेरी सिफ़ारिश कर दी। उनके ऊख की खेती और चीनी का कारख़ाना था। कुछ दिन उनके यहाँ रहकर मैंने ऊख की खेती करने और चीनी बनाने की रीति सीखी। देखा, किसान लोग खेती की बदौलत सहज ही और शीघ्र धनवान् हो जाते हैं। इससे मेरी इच्छा भी खेती करने की हुई। मेरे पास जो कुछ पूँजी थी उसमें जितनी ज़मीन मिली, मैंने ले ली; और इँगलैंड में कप्तान की विधवा स्त्री के पास मेरा जो रुपया जमा था वह मँगा लेने का विचार किया।

मेरे खेत से सटा हुआ जिसका खेत था वह लिसबन शहर का एक पोर्तुगीज़ था। उसके माँ-बाप अँगरेज़ थे। नाम उसका वेल्स था। मेरी ही ऐसी उसकी भी कई बार दुर्दशा हो चुकी थी। हम दोनों, दो वर्ष तक, केवल पेट भरने को अन्न संग्रह करने के लिए ही खेती करते रहे, लाभ के लिए नहीं। हम लोग क्रम क्रम से खेती बढ़ाने लगे। तीसरे साल हम लोगों ने तम्बाकू की खेती की और उसके अग्रिम वर्ष में ऊख बोने की तैयारी करने लगे। किन्तु हम दोनों को खेत आबाद करने के लिए मज़दूरों की आवश्यकता होने लगी। तब मैंने समझा कि इकज़ूरी को छोड़ देना अच्छा नहीं हुआ। किन्तु बीती हुई बात के लिए सोच करने से फल ही क्या? मैंने जब कभी

अपनी भूल समझी तब बहुत बिलम्ब से; दूसरी बात यह कि तब भूल-संशोधन करने का कोई उपाय भी न रहता था।

मेरे पिता ने जिस पेशे का अवलम्बन करके घर पर रहने की बात कही थी, अब वही पेशा करने को मैं बाध्य हुआ। उस समय मैंने पिताजी का आश्रय और सदुपदेश त्याग दिया था। इस काम को यदि तभी स्वीकार कर लेता तो अपने देश से पाँच हज़ार मील पर, अपरिचित और असभ्य लोगों के बीच अकेले रहकर, इस प्रकार निःशङ्क भाव से मुसीबतों का सामना न करना पड़ता। यहाँ मेरा कोई संगी साथी न था। माना मैं किसी स्वजनशून्य देश में निर्वासित हुआ था। इस अवस्था में रहना मुझे विशेष कष्टकर जँचता था। जो हो, इस प्रकार अकेले रहने का अभ्यास हो जाने के पीछे इससे मुझे बहुत लाभ हुआ।

मैं इँगलैंड से अपना संचित रुपया मँगाने की बात सोच रहा था। मेरे उद्धारकर्त्ता कप्तान साहब ने उसे ला देना स्वीकार कर लिया। मैंने उनकी मारफ़त अपने पुराने मित्र की स्त्री को अपनी अवस्था के सविस्तर समाचार-सहित एक पत्र लिख भेजा।

लिसबन जाकर कप्तान ने एक व्यापारी अँगरेज़ के मारफ़त मेरी चिट्ठी इँगलैंड भेज दी। उस समय चिट्ठी बाँटने के लिए हरेक देश में डाक का बन्दोबस्त न था। मेरी मित्र-भार्या ने चिट्ठी पाकर रुपया तो भेज ही दिया, इसके सिवा उसने अपनी ओर से मेरे उद्धारकारी कप्तान को एक सुन्दर उपहार

भी भेज दिया। कप्तान मेरे रुपये से मेरी खेती-बारी के उपयुक्त अनेक वस्तुएँ—यथा हल, फाल, कुदाल, खुरपी इत्यादि—ख़रीदकर अपने साथ लेते आये। मैंने ये चीज़ें लाने के लिए उनसे न कहा था। वे अपनी दूरदर्शिनी बुद्धि की प्रेरणा से ही लाये थे। उन चीज़ों से भविष्य में मेरा यथेष्ट उपकार और सुविधायें हुई थीं। अपने पास से रुपया देकर, छः वर्ष के क़रार पर, वे मेरे लिए एक नौकर मोल लेकर साथ लाये थे। इन अनेक अनुग्रहों के बदले, उनसे यह कहकर कि यह मेरे खेत की तम्बाकू है, मैंने कुछ तम्बाकू ले लेने के लिए उन्हें राज़ी किया।

उस समय मेरी दशा बहुत उत्तम हो चली थी, और खेती का कारबार भी बढ़ गया था। मैंने कप्तान के दिये नौकर के अलावा दो नौकर और ख़रीदे—एक हबशी और एक फिरंगी।

ब्रेज़िल में मेरे चार वर्ष गुज़र गये। खेती में मुझे ख़ासा लाभ हुआ। यदि मैं कुछ दिन और सन्तोषपूर्वक खेती का व्यवसाय करता रहता तो मेरे पिता ने मेरे लिए जैसा कुछ गृहस्थी का सुख सोच रक्खा था वैसा ही सुख पाकर मैं एक सम्पन्न गृहस्थ हो जाता। किन्तु चुपचाप बैठकर घर का सुस्वादु अन्न खाना मेरी तक़दीर में लिखा ही न था। मेरे सुख के पीछे पीछे शनीचर लगा फिरता था। मैंने आप ही अपना सर्वनाश करने को कमर बाँधी थी। यहाँ भी उसका व्यतिक्रम न हुआ।

मैंने यहाँ की सब प्रकार की भाषाएँ सीखी थीं और पड़ोस के कितने ही किसानों के साथ तथा सन्त सालवाडोर बन्दर के व्यापारियों के साथ मेरी जान पहचान हो गई थी। मैं प्रसङ्गवश उन लोगों से गिनी-उपकूल में हबशियों के साथ वाणिज्य-व्यवहार करने के लाभ की बात कहा करता था। काँच के टुकड़े, आइना, छुरी, कैंची, खिलौना, माला आदि सामान्य वस्तुओं के बदले वहाँ स्वर्णरेणु, अनाज, हाथीदाँत आदि क़ीमती चीज़ें—यहाँ तक कि हबशी नौकर तक मिलते हैं। हबशी नौकर लाने से हम लोगों के खेती के कामों में बहुत कुछ मदद मिल सकती है, यह भी मैं उन लोगों को समझा देता था। वे लोग मेरी बातों को ख़ूब जी लगाकर सुनते थे।

एक दिन सबेरे मेरे परिचितों में से तीन व्यक्तियों ने आकर यह प्रस्ताव किया—आप दो बार गिनी-उपकूल में जा चुके हैं। अतएव नौकर लाने के लिए आप ही को जाना होगा। इसके लिए जहाज़ और ख़र्च का प्रबन्ध हम लोग कर देंगे। नौकर ले आने पर, आपके परिश्रम के बदले, हम लोग आपसे बिना कुछ लिये ही नौकर का बराबर हिस्सा आपको देंगे।

यह प्रस्ताव मुझे बहुत अच्छा जान पड़ा। दूसरा कोई आदमी होता तो इस प्रस्ताव में सम्मत न होता; किन्तु मैं तो चिरकाल से अपने सुख पर आप ही पानी फेर रहा था। मैं इस प्रलोभन को न रोक सका। तुरन्त स्वीकृत कर कहा—

"यदि तुम लोग मेरे परोक्ष में मेरी खेती-बारी का काम सँभाले रहो और यदि मैं मर जाऊँ तो मेरे कथनानुसार मेरी सम्पत्ति की व्यवस्था करना स्वीकार करो तो मैं जा सकता हूँ।" उन लोगों ने मेरी शर्त पर राज़ी होकर एक स्वीकृतिपत्र लिख दिया। मैंने भी एक वसीयतनामा (सम्पत्ति-विभाग पत्र) लिखा। उसमें अपने उद्धारकर्त्ता कप्तान को ही मैंने अपना उत्तराधिकारी किया। मेरी मृत्यु के अनन्तर मेरी सारी सम्पत्ति का आधा अंश वे लेकर बाक़ी आधी सम्पत्ति का मूल्य इँगलैंड में मेरे पिता के पास पहुँचा दें।

क्रूसो का जहाज़ डूबा

मैंने अपनी सम्पत्ति-रक्षा के लिए जितनी सावधानी और भविष्य-चिन्ता की थी, उसकी आधी भी यदि मेरे निज के लिए स्वार्थ-बुद्धि होती तो मैं उत्तरोत्तर बढ़ती हुई निरापद आर्थिक अवस्था को छोड़कर समुद्रयात्रा के प्रस्ताव पर कभी ध्यान न देता। एक तो समुद्रयात्रा स्वभावतः विघ्नों से युक्त होता है, उस पर मेरे ऐसे हतभाग्यों का तो कुछ कहना ही नहीं। विपत्ति पर विपत्ति की आशङ्का बनी ही रहती थी। बुद्धि की अवहेलना करके इच्छा के अधीन हो जाना मेरा स्वभाव था। इच्छा मुझे ज्ञानान्ध बनाकर बलात् खींच ले चली।

जहाज़ जाने को प्रस्तुत हुआ। सीपों के हार, आइना, छुरी, कैंची, कुल्हाड़ी और खिलौना आदि कम क़ीमती चीज़ें

जहाज़ पर लादी गई। मैं १६५९ ईसवी की पहली सितम्बर के अशुभ मुहूर्त में जहाज़ पर सवार हुआ। आठ वर्ष पूर्व इसी तारीख़ को मैंने, मूर्ख की तरह, माँ-बाप के आदेश का तिरस्कार करके पहले पहल समुद्रयात्रा की थी।

जहाज़ पर छः तोपें, चौदह नाविक, एक कप्तान, उनका नौकर और मैं था। हम लोग जिस दिन जहाज़ पर चढ़े उसी दिन जहाज़ रवाना हुआ। समुद्र का जल स्थिर था, और वायु भी अनुकूल थी। हम लोग अफ़्रीका जाने के विचार से उत्तर ओर चल पड़े। बारह दिन बाद, हम लोगों को ज्ञात होने के पहले ही, एकाएक भयङ्कर तूफ़ान उठा। बारह दिन तक लगातार तूफ़ान बना रहा। हम लोगों ने कुछ आगा-पीछा न सोचकर भाग्य के भरोसे जहाज़ को तूफ़ान के मुँह में छोड़ दिया। न छोड़ते तो करते ही क्या? सिवा इसके दूसरा उपाय ही क्या था? इन बारह दिनों में मिनट मिनट पर यही जी में होता था कि इस बार समुद्र हम लोगों को सदा के लिए अपने पेट में रख लेगा। वास्तव में किसी नाविक को जीवन की आशा न थी।

विपत्ति के ऊपर एक दुर्घटना और हुई। लू लग जाने से हमारा एक नाविक मर गया और एक दूसरे नाविक तथा कप्तान के नौकर को, जहाज़ के ऊपर से, समुद्र की तीक्ष्ण तरङ्ग बहा ले गई।

बारह दिन के अनन्तर तूफ़ान कुछ कम हुआ। कप्तान ने और मैंने देखा कि हम लोग ब्रेज़िल के उत्तरी भाग अमेज़ान

नदी को छोड़कर एक बड़ी नदी के पास गायना-उपकूल में आ गये हैं। कप्तान ने मुझसे पूछा—किस रास्ते से जाना अच्छा होगा? उस समय जहाज़ के भीतर कुछ कुछ पानी आ रहा था। जहाज़ पूरे तौर से ढीला पड़ चुका था। कप्तान की इच्छा ब्रेज़िल लौट जाने की थी। मैंने उसमें बाधा डाली। अमेरिका के उपकूल का नक़शा देखकर तय किया कि केरिबी द्वीप के सिवा समीप में कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ आश्रय लिया जाय। तब मैंने बारबैडस द्वीप की ओर जाने का निश्चय किया और अटकल लड़ाई कि पन्द्रह दिन और चलने से हम लोग किसी न किसी बृटिश द्वीप में जाकर अफ़्रीका जा सकने योग्य साहाय्य पा सकेंगे। चाहे जो हो, यात्रा करके अब लौट जाना ठीक नहीं। मेरी बुद्धि क्यों मुझे आपत्तिविहीन स्थान में ले जाने को सम्मत होती? मेरे भाग्य में तो अनेक दुःखों का भोगना लिखा था। फिर तूफ़ान उठा और हम लोगों के जहाज़ को पच्छिम की ओर उड़ा ले चला। इस समय समुद्र से बच जाने पर भी हम लोगों को, किनारे उतरकर, नृशंस लोगों के हाथ से छुटकारा पाने की आशा न थी। हम लोगों की अक़्ल कुछ काम न देती थी। स्थल भाग में उतरें तो राक्षस हम लोगों को खा ही डालेंगे। अब अपने देश की ओर भी लौट न सकेंगे।

ऐसी विपन्न अवस्था में एक दिन सबेरे एक नाविक चिल्ला-कर बोला—"ठहरो ज़मीन है, ठहरो ज़मीन है।" हम लोग

पृथिवी के किस अंश में आ गये हैं, यह देखने के लिए कमरे से बाहर आते न आते हम लोगों का जहाज़ बालू के टीले में रगड़ खाकर बैठ गया। जहाज़ की गति एकाएक रुक जाने से कुछ ही देर में समुद्र की लहर ऐसे प्रखर वेग से जहाज़ के ऊपर आ पड़ी कि हम लोगों ने समझा कि इसी दफ़े सब समाप्त हुआ। हम लोग पानी के छींटों और फेन से बचने के लिए झटपट कमरे के भीतर चले गये। जिन लोगों के ऊपर कभी ऐसा संकट नहीं पड़ा है, वे हमारी इस अवस्था या भय का कुछ भी अनुभव न कर सकेंगे। हम लोग कहाँ किस देश में जा पहुँचे हैं, यह मालूम न हुआ। वह स्थान कोई टापू था या कोई देश; वहाँ मनुष्यों की बस्ती थी या जनशून्य स्थान था, इसका भी कुछ निश्चय न हो सका। हवा तब भी जैसी तेज़ बह रही थी, उससे यह आशा न थी कि जहाज़ टूक टूक न होकर क्षण भर भी और बचा रहेगा। हम लोग एक दूसरे का मुँह देखते हुए निरुपाय होकर बैठ रहे और मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे। सभी लोग परलोक-यात्रा के लिए कटिबद्ध होकर ईश्वर का स्मरण करने लगे। इसके अतिरिक्त हम लोग और करते ही क्या? वैसी दशा में हम लोगों को एक यही सान्त्वना मिली कि जितने शीघ्र जहाज़ के टूटने की संभावना थी उतने शीघ्र वह टूटा नहीं और हवा का वेग भी कुछ कम हो गया।

किन्तु जहाज़ के टुकड़े टुकड़े न होने और हवा का वेग घट जाने पर भी हम लोगों की विपत्ति कम न हुई। जहाज़ इतने ज़ोर से बालू में धँस गया था कि उसका उद्धार होना कठिन था। हम लोग ज्यों त्यों कर अपने अपने प्राण बचाने का उपाय सोचने लगे। जहाज़ के पीछे एक छोटी नाव बँधी थी किन्तु वह पहली ही झपेट में जहाज़ का धक्का लगने से टूट गई थी। फिर रस्सी से खुलकर वह समुद्र में बह चली। कौन जाने वह डूबी या बची। इसलिए उससे तो हम लोग सन्तोष ही कर बैठे थे। हमारे जहाज़ के ऊपर एक और नाव थी, परन्तु उसको रक्षा-पूर्वक पानी में उतार लाना विषम समस्या थी। किन्तु वह समय सोच-विचार करने या तर्क-वितर्क करने का न था, क्योंकि जहाज़ क्रमशः टूट फूटकर इधर उधर गिर रहा था। इस मुसीबत में जहाज़ का मेट अन्य मल्लाहों की सहायता से नाव को जहाज़ के ऊपर से धीरे धीरे पानी में उतार लाया। हम ग्यारह आदमी राम राम कर उस नाव पर चढ़े। उस उन्मत्त उत्तुङ्ग तरङ्गोंवाले समुद्र के हाथ में आत्म-समर्पण कर भगवान् के भरोसे नाव को बहा दिया। हवा कम पड़ जाने पर भी समुद्र की लहरें तट पर दूर तक उछल पड़ती थीं।

इस समय हम लोगों की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो उठी। समुद्र का जल बढ़कर जिस प्रकार ऊपर की ओर बढ़ता जा रहा था, उससे हम लोगों ने स्पष्ट ही समझ लिया

कि नाव अब देर तक ठहरने की नहीं, अवश्य ही हम लोग डूब मरेंगे। हमारी नाव पर पाल न था, जो होता भी तो क्या कर सकते? हम लोग मृत्यु को सामने रख किनारे की ओर नाव ले जाने का प्रयत्न करने लगे। वधभूमि में जाते समय मारे जानेवाले लोगों की तरह हम लोगों का जीवन भाराक्रान्त हो रहा था। हम लोगों ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया था कि तट के समीप पहुँचते ही एक ही हिलकोरे में हमारी नाव चूर चूर हो जायगी, तो भी हम लोगों को अन्य गति न थी। हवा हम लोगों को किनारे की ओर ठेलती थी और हम लोग स्वयं भी, अपने को मृत्यु-मुख में डालने के लिए, किनारे की ही तरफ़ नाव को लिये जा रहे थे।

वहाँ का तट कैसा था, वहाँ पहाड़ था या बालू का ढेर, यह हम लोग न जानते थे, तथापि कुछ आशा थी तो यही कि यदि किसी खाड़ी या नदी के मुहाने में पहुँच सकें तो शायद स्थिर जल मिल भी जाय, किन्तु वैसा कोई लक्षण देख न पड़ता था। हम लोग जितना ही तट के समीप जाने लगे उतना ही समुद्र की अपेक्षा तटस्थ भूमि भयङ्कर प्रतीत होने लगी।

क़रीब डेढ़ मील मार्ग तय करने के बाद, एक पहाड़ के बराबर ऊँचा, समुद्र की लहर हम लोगों को पीछे आती दिखाई दी। मानों उसने ख़ुलासा तौर से हम लोगों को मरने की सूचना दे दी। वह तरङ्ग इस प्रकार वेग से हम लोगों

के ऊपर आ पड़ी कि नाव उसी घड़ी उलट गई। हम लोग भी परस्पर एक दूसरे से बिछुड़ गये। ईश्वर का नाम लेने के पहले ही हम लोग समुद्र में डूब गये।

जब मैं पानी के नीचे दूर तक चला गया तब मेरे मन की जो अवस्था थी वह वाणी द्वारा नहीं समझाई जा सकती। यद्यपि मैं तैरना अच्छा जानता था तथापि तरङ्गों की भरमार से मुझे एक बार भी दम लेने की फ़ुरसत न मिलती थी। आख़िर समुद्र का हिलकोरा मुझे लिये दिये किनारे की ज़मीन पर पटककर लौट चला। मेरी आँखें, नाक, कान, सबमें पानी भर गया। पानी पीते पीते मैं बेदम हो गया था, पर तब भी मुझे इतना होश हवास और बल था कि मैं झट खड़ा हो गया और साहस करके स्थल-भाग की ओर इस भय से दौड़ चला, कि दूसरी बार का हिलकोरा फिर कहीं मुझे लौटाकर बीच समुद्र में न ले जाय। किन्तु मैंने देखा, उस तीव्रगामिनी तरङ्ग से बचना कठिन है। समुद्र की लहर फिर पहाड़ के बराबर दीर्घ आकार धारण किये, क्रुद्ध शत्रु की भाँति गरजती हुई, मेरे पीछे दौड़ी चली आ रही है। उसके आक्रमण से बचने की कोई शक्ति या सामग्री मेरे पास न थी। मैं सोचने लगा कि तरङ्ग आने पर मैं अपने श्वास को रोककर पानी पर उतराता हुआ स्थल की ओर जाने की चेष्टा करूँगा। बहुत दूर तक तो मुझे तरङ्ग ही पहुँचा देगी। किन्तु समुद्र की ओर लौटती बार तरङ्ग फिर कहीं मुझे समुद्र में न घसीट ले

जाय, इसकी उस समय मेरे मन में बड़ी चिन्ता थी। समुद्र की लहर से बचने का एक भी उपाय न सूझता था।

देखते ही देखते समुद्र की उत्ताल तरङ्ग मेरे ऊपर आ पड़ी और मैं पन्द्रह बीस हाथ पानी के नीचे दब गया। मुझे कुछ कुछ मालूम हो रहा था कि मैं किसी बलिष्ठ शक्ति के द्वारा बड़े वेग से कछार के ऊपर हटाया जा रहा हूँ। मैं भी साँस रोककर, यथाशक्ति पानी के भीतर ही भीतर तैरता हुआ आगे की ओर बढ़ने लगा। देर तक साँस रोकने से मेरा कलेजा फटा ही चाहता था। ऐसे समय एकाएक मैं पानी के ऊपर उतरा उठा। मेरा सिर और हाथ पानी के बाहर निकल आये। इससे मुझे बहुत आराम मिला। मैं ज़्यादा से ज़्यादा दो सेकेंड पानी में ऊपर रहा हूँगा, किन्तु इतने में ही मेरा बहुत कुछ उपकार हुआ। साँस लेने से मुझे फिर नया साहस मिला। मेरे शरीर में फिर नई शक्ति का कुछ संचार हुआ। किन्तु मैं फिर पानी के भीतर छिप गया। इस दफ़े बहुत देर तक भीतर नहीं रहना पड़ा। मैंने देखा कि तरङ्ग अब लौटी जा रही है। मैं हाथ पाँव के बल ख़ूब ज़ोर से तरङ्ग के प्रतिकूल तैरकर ज्योंही कुछ दूर आगे बढ़ा त्योंही मेरे पैर ज़मीन से जा लगे। थोड़ी देर तक खड़े होकर मैंने साँस ली और फिर शरीर में जितना बल था उतने बल से मैं तुरन्त स्थल की ओर दौड़ चला किन्तु दौड़ने से ही मैंने समुद्र के हाथ से छुटकारा न पाया। अब भी मेरी जान

की छुट्टी न हुई। फिर एक हिलकोरा मेरे पीछे बड़ी तीव्र गति से आ गया। मैं पूर्ववत् फिर पानी के भीतर आगे की ओर लुढ़कने लगा। समुद्र का तट चिपटा था, इससे मैं दो बार और तरङ्गों का धक्का खाकर थल पर आ लगा।

आख़िरी तरङ्ग तो मुझे एक प्रकार से समाप्त ही कर चुकी थी। उसने मुझको लिये दिये ऐसे ज़ोर से एक पत्थर के ऊपर उठाकर पटक दिया कि ऐसा जान पड़ा मानो दम निकल गया हो। छाती में सख़्त चोट लगने से मैं मूर्च्छित हो गया। यदि उसी समय फिर दूसरी लहर आती तो दम घुटकर वहीं मेरा काम तमाम हो जाता। मैंने कुछ सँभल-कर देखा, तरङ्ग फिर दौड़ी आ रही है और वह अभी मेरे ऊपर आ पड़ेगी। तब मैंने ख़ूब ज़ोर से अँकवार भरकर पत्थर को पकड़ा और साँस बन्द करके लेट रहा। किनारे से वह जगह बहुत ऊँची थी, इसलिए तरङ्ग हलकी सी होकर वहाँ आई। मैं तरङ्ग के विरुद्ध पत्थर पकड़े पड़ा रहा। तरङ्ग हटते ही फिर मैंने एक दौड़ लगाई। इसके बाद फिर एक तरङ्ग यद्यपि मेरे ऊपर होकर गई तथापि वह मुझे अपनी ओर खींच न सकी। उस तरङ्ग के चले जाने पर मैं एक ही दौड़ में एकदम ऊपर चढ़ आया। इतनी देर में जाकर तरङ्ग से मेरा पिण्ड छूटा। मैं किनारे के पास के पहाड़ से हटकर घास पर जा बैठा। तरङ्ग की सीमा से बाहर रक्षित स्थान में पहुँचने पर मुझे बहुत आराम मिला।

क्रूसो और समुद्र-तट

मैं स्थल में आकर, विपत्ति से उद्धार पा, अपनी जीवन-रक्षा के लिए ऊपर की ओर देखकर परमेश्वर को धन्यवाद देने लगा। कुछ ही देर पहले जिस जीवन की कुछ भी आशा न थी उसे मृत्यु के मुख से सुरक्षित देख, मन में जो असीम आनन्द और उल्लास हुआ उसका वर्णन नहीं हो सकता। उस समय इतना अधिक आनन्द हुआ कि उस आवेग से ही मर जाने की आशङ्का हुई। कारण यह कि एकाएक अत्यन्त हर्ष होने से भी, अति विषाद की ही भाँति, चित्त अचेतन हो जाता है।

मैं समुद्रतट पर, मारे ख़ुशी के अकड़ता हुआ, हाथ उठाये अनेक प्रकार से अङ्ग-भङ्गी करता हुआ घूमने लगा। उस समय मेरे मन में सिर्फ़ यही चिन्ता थी कि मेरे सभी साथी डूब मरे; एक मैं ही समुद्र से जीता-जागता बच निकला, ईश्वर ने मृत्यु के मुख से मुझे बचा लिया। मैंने न तो अपने साथियों में किसी को देखा और न किसी का कुछ पता पाया; सिर्फ़ उन लोगों की तीन टोपियाँ और दो जोड़े जूते समुद्र के किनारे इधर उधर पड़े दिखाई दिये।

समुद्र के गर्भ में स्थित बालुकामय भूभाग में अटके हुए जहाज़ की ओर मैंने ध्यान से देखा। किन्तु तब भी समुद्र में फेन से भरी हुई इतनी तरङ्गें पर तरङ्गें चल रही थीं कि मैं अच्छी तरह जहाज़ को न देख सका। तब मैंने मन में

कहा—भगवन्, इस दुस्तर समुद्र से मुझे किस तरह किनारे निकाल लाये ?

इस अवस्था में यथासम्भव मन को सान्त्वना देकर मैं इधर उधर देखने लगा कि कहाँ कैसे स्थान में आ गया हूँ। मैं यह भी सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। शीघ्र ही मेरे मन की सान्त्वना जाती रही। मैं एकाएक अधीर हो उठा। मैंने देखा, मैं बचकर भी भयङ्कर अवस्था में आ पड़ा हूँ। मेरा तमाम बदन गीला था, पास में कोई दूसरा कपड़ा बदलने को न था, खाने-पीने की कोई चीज़ भी न थी और न वहाँ कोई ऐसा आदमी था जो मुझे कुछ आश्वासन देता। भूख-प्यास से या जंगली हिंस्र पशुओं के आक्रमण से सिवा मरने के जीने की आशा न थी। मेरे पास कोई हथियार भी न था। मेरे पास कुल पूँजी बच रही थी एक छुरी, तम्बाकू पीने का एक नल और कुछ तम्बाकू। इन बातों को सोचते सोचते मैं पागल की तरह उस निर्जन स्थान में इधर उधर दौड़ने लगा।

क्रमशः रात हुई। मैं चिन्तासागर में निमग्न होकर सोचने लगा—अब तमाम हिंस्र जन्तु चरने के लिए निकलेंगे। सम्भव है, वे मुझे देखते ही चबा डालें। इसके लिए क्या करूँ ? मेरी जितनी बुद्धि थी उससे यही निश्चय किया कि पेड़ पर चढ़कर मैं किसी तरह रात बिताऊँगा। आज किसी कँटीले वृक्ष पर बैठकर ही सारी रात काटूँगा और सोचूँगा कि दूसरे

दिन किस तरह मृत्यु होगी। क्योंकि प्राण-रक्षा की कोई सम्भावना ही न देख पड़ती थी। जिधर देखता था उधर ही मृत्यु मुँह फैलाये खड़ी दिखाई देती थी। मैं प्यास से व्याकुल था। मारे प्यास के मेरा कण्ठ सूख रहा था। मीठा जल कहीं है या नहीं, यह देखने के लिए मैं समुद्रतट से स्थल भाग की ओर गया। एक-आध मील जाने पर अच्छा पानी मिला। मैंने बड़े उल्लास से अंजलि भरकर पानी पिया। प्यास शान्त होने पर कुछ भूख मालूम होने लगी; पर साथ में था क्या जो खाता। था सिर्फ़ तम्बाकू का पत्ता। उसी को तोड़कर थोड़ा सा मुँह में रक्खा। नींद से आँखें घूमने लगीं। मैं झट एक पेड़ पर चढ़कर जा बैठा। रात में नींद आने पर कहीं गिर न पड़ूँ, इसका प्रबन्ध पहले ही कर लिया। पेड़ की एक डाल काटकर उसी का सहारा बना लिया। दिन भर का थका-माँदा था, बैठने के साथ ही गाढ़ी नींद ने आकर धर दबाया। ख़ूब चैन से सोकर जब मैं जागा तब बदन में अच्छी फुरती मालूम होने लगी। मानो फिर नस नस में नया उत्साह भर गया।

जब मैं सोकर उठा तब देखा कि सबेरा हो गया है, आकाश बिलकुल साफ़ है, हवा रुक गई है; समुद्र की तरङ्गें भी अब उस प्रकार नहीं उछलतीं। रात में ज्वार के समय हमारा बालू में फँसा हुआ जहाज़ बहकर किनारे की ओर, जहाँ मैंने पहले पत्थर से टकराकर चोट खाई थी वहाँ तक,

चला आया है। वह जगह स्थल भाग से कोई एक मील पर थी। जहाज़ तब भी सीधा खड़ा था। यह देखकर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। मैंने वहाँ तक जाने का इसलिए विचार किया कि यदि जहाज़ पर कोई आवश्यक वस्तु मिल जायगी तो ले आऊँगा।

मैंने पेड़ पर से उतरकर देखा कि मेरे दहनी ओर अन्दाज़न दो मील पर, सूखी ज़मीन पर हमारी नाव पड़ी है। मैं उसी ओर जाने लगा। समीप जाकर देखा, मेरे और नाव के बीच में आध मील चौड़ी एक खाड़ी है जिसमें पानी भरा है। तब नाव तक जाने की आशा छोड़कर मैंने पैदल ही जहाज़ देखने के लिए जाने का विचार किया। इसलिए वहाँ से लौट आया।

दोपहर के बाद समुद्र स्थिर हो गया। भाटे के कारण जल इतना कम हो गया कि मैं जहाज़ से पाव मील दूर तक सूखी ज़मीन पर होकर ही गया था। वहाँ पहुँचने पर फिर मेरे मन में नया दुःख हुआ। यह सोचकर मुझे अत्यन्त खेद हुआ कि हम लोगों ने जहाज़ को छोड़कर नाव का सहारा क्यों लिया। हम लोग यदि जहाज़ ही पर रहते तो कोई भी डूबकर न मरता। मैं भी संगी-साथियों से बिछुड़कर ऐसी दुर्दशा में न पड़ता, सब लोग बिना किसी विघ्न-बाधा के किनारे आ जाते। मारे सोच के मैं रो पड़ा। किन्तु उस समय रोना निष्फल जानकर मैं जहाज़ पर जाने की चेष्टा

करने लगा। कोट-पतलून खोलकर मैंने धरती पर रख दिया फिर मैं पानी में घुस गया।

भग्न जहाज़ का दर्शन

मैं जहाज़ के निकट पहुँच गया, किन्तु उस पर चढ़ूँगा किस तरह ? टीले पर आ जाने के कारण जहाज़ का कोना बहुत ऊँचा उठ गया था। ऐसा कुछ सहारे को भी न था जिसे पकड़कर उस पर चढ़ता। मैंने जहाज़ के चारों तरफ़ दो बार घूम घामकर देखा एक जगह ऊपर से एक रस्सी लटक रही थी। बड़ी मुश्किल से उसे पकड़कर मैं जहाज़ पर सामने की ओर चढ़ गया। ऊपर जाकर देखा, जहाज़ के भीतरी पेंदे में ख़ूब पानी भर गया है; बालू के ढेर में अटके रहने के कारण उसका पिछला हिस्सा ऊपर की ओर उठ गया है और आगे का हिस्सा नीचे की ओर झुककर पानी में डूबने पर है। मैं जहाज़ पर चढ़कर खोजने लगा कि कौन कौन वस्तु सूखी है। सबसे प्रथम मेरी दृष्टि खाद्य-सामग्री के भाण्डार की ओर गई। देखा कि उसमें अभी तक जल नहीं पहुँचा है। खाने की सामग्री ज्यों की त्यों रक्खी है। मैं भूखा तो था ही, झट मुट्ठी भर बिस्कुट लेकर खाने लगा और खाते ही खाते अन्यान्य वस्तुओं की भी खोज करने लगा। वह समय मेरा नष्ट करने का न था। मैंने जहाज़

में बहुत सी ऐसी चीज़ें देखीं जो मेरे काम की थीं। किन्तु उन चीज़ों को ले जाने के लिए पहले एक नाव चाहिए। वह अभी कहाँ मिलेगी? मैं चुपचाप बैठकर सोचने लगा।

जो चीज़ मिलने की नहीं है उसके लिए माथे पर हाथ रक्खे मौन साधकर बैठ रहना वृथा है। वहाँ एक भी नाव न थी, तब उसके लिए चिन्ता कैसी? किन्तु किसी वस्तु का अभाव ही नई वस्तु के आविष्कार का कारण होता है। मेरी समझ में एक बात आई। जहाज़ के मस्तूल के कितने ही टूटे फूटे छोटे छोटे टुकड़े थे। उनको एकत्र कर मैंने एक बेड़ा बनाया, उस पर दो-तीन तख़्ते बिछा दिये। और समय होता तो मैं इतना परिश्रम न कर सकता किन्तु प्राणों की विपत्ति के समय उस घोर परिश्रम से मैं कुछ भी क्लान्त न हुआ। जिन चीज़ों को मैं ले जाना चाहता था उनको हिलकोरे के जल के छींटों से बचाने के लिए मैंने एक उपाय किया। तीन सन्दूकों के ताले तोड़ डाले और उन्हें ख़ाली करके रस्सी से लटकाकर बेड़े पर रख दिया। पहले बक्स में चावल, पनीर, सूखा मांस, बिस्कुट आदि खाने-पीने की चीज़ें भर लीं। जब मैं इन चीज़ों को ठिकाने के साथ रखने लगा तब देखा कि समुद्र में ज्वार आ गया। किनारे की सूखी ज़मीन पर मैं अपने बदन के जो कपड़े लत्ते रख आया था उन्हें वह बहा ले गया। यह देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। फिर मैं धीरज धरकर जहाज़ में पोशाक ढूँढ़ने लगा। पोशाकें

बहुत थीं, मैंने अपनी आवश्यकता भर के कपड़े ले लिये। विशेषकर मुझे उस समय पोशाक की अपेक्षा अस्त्र-शस्त्र अधिक प्रयोजनीय जान पड़े। कारण यह कि बिना उनके स्थल भाग में एक भी काम न चलता। इसलिए मैं हथियारों की खोज करने लगा। बहुत खोजने पर मुझे औज़ारों का बक्स मिल गया। उस समय वह एक जहाज़ भर सोने की अपेक्षा मुझे अधिक मूल्यवान् जान पड़ा। मैंने औज़ारों से भरा हुआ सन्दूक़ जहाज़ से उतारकर बेड़े पर रख दिया। इसके बाद मैंने दो पिस्तौल, कुछ गोली-बारूद और बहुत दिन की मोर्चा लगी हुई दो तलवारें खोज निकालीं। मुझे मालूम था कि जहाज़ में तीन पीपे बारूद है। बहुत ढूँढ़ने पर तीनों पीपे बारूद मिली; एक में पानी पैठ चुका था और दो बच गये थे। उन दोनों पीपों और हथियारों को भी उतारकर बेड़े पर रक्खा। बेड़े पर अब बोझा भरपूर हो गया, यह जानकर मैंने स्थल भाग की ओर लौट जाना चाहा। किन्तु बेड़े को किस तरह किनारे तक ले जाऊँगा, यह सोचकर मैं घबरा गया। मेरे पास खेने की कोई वस्तु न थी। ज़रा तेज़ी के साथ हवा बहने से ही बेड़ा उलट जाता और मेरी सारी आशा मिट्टी में मिल जाती।

मेरे बेड़े के पार होने की आशा के तीन कारण थे—एक तो समुद्र शान्त और स्थिर था; दूसरे, ज्वार आने से जल क्रमशः किनारे की ओर बढ़ रहा था; तीसरे, जो कुछ कुछ

हवा बह रही थी वह किनारे की ओर जाने में ही सहायता दे रही थी। मैंने दो तीन टूटी पतवारें, खनती (खनित्र), कुल्हाड़ी, हथौड़ी आदि उपयोगी वस्तुओं का संग्रह कर साथ में रख लिया। फिर कपार ठोककर मैं रवाना हुआ। एक मील तक तो रास्ता मज़े में कटा। केवल जिस जगह मैं पहले उतरा था उस जगह से कुछ दूर हटकर बेड़ा बह चला। उससे मैंने समझा कि ज्वार का प्रवाह कहीं से प्रवेश का मार्ग पाकर उसी ओर बढ़ा जा रहा है। शायद मैं किसी खाड़ी या नदी के मुहाने में जा पहुँचूँगा, और वहाँ मेरे उतरने की सुविधा होगी।

जो मैंने सोचा था वही हुआ। मैंने सामने एक खाड़ी देखी। प्रवाह उसी के भीतर जा रहा है। प्रवाह के बीच में बेड़े को करके मैं खाड़ी के भीतर जाने की चेष्टा करने लगा।

यहाँ मेरा माल से लदा हुआ बेड़ा डूबने पर हुआ। ऐसा होता तो मैं मारे दुःख और सोच के छाती फाड़कर मर जाता। वहाँ के किनारे की अवस्था से मैं बिलकुल अपरिचित था। किधर क्या है, यह कुछ भी मुझे मालूम न था। प्रवाहक्रम से आगे जाते जाते बेड़ा ऐसी जगह पहुँच गया कि उसका एक हिस्सा बालू के टीले पर चढ़ गया और दूसरा पार्श्व नीचे अगाध जल पर गया। बेड़े के पिछले हिस्से पर अधिक दबाव पड़ जाने के कारण वह पानी में धँस गया। ज़रा और दबाव पड़ते ही इतने कष्ट से संग्रह किया हुआ मेरा सब सामान पानी में गिर जाता। मैं तुरन्त जी पर खेलकर

सन्दूकों को पीठ से ठेल ठेलकर कुछ ऊपर की ओर खिसका लाया और बेड़े को बालू से हटाने की चेष्टा करने लगा। मेरे प्राणपण से ज़ोर लगाने पर भी बेड़ा अपनी जगह से ज़रा भी न हिला। मैंने पीठ के बल से सन्दूकों को ठेल ठेलकर रक्खा था, इससे मेरी पीठ की नसें जकड़ गई थीं। मैं अच्छी तरह हिल डोल भी नहीं सकता था। मैं सारे बदन का ज़ोर पीठ पर लगाकर सन्दूक़ से लगकर आध घंटे तक बैठा रहा। उतनी देर में ज्वार का जल क्रम क्रम से बढ़कर बेड़े को विषम अवस्था से सम भाव में ले आया। बेड़ा सीधा होकर उस रेतीली भूमि से छूटकर उपलाने लगा। तब मैं लग्गी से ठेलकर उसे धीरे धीरे खेता हुआ आगे की ओर बढ़ा ले चला। खाड़ी के भीतर जा करके मैंने एक नदी का मुहाना देखा। ज्वार का जल अभी ख़ूब वेग से ऊपर की ओर चढ़ रहा था। मैं साकांक्ष दृष्टि से मुहाने के आस-पास बेड़ा लगाने की जगह देखने लगा। मैं स्थल भाग की ओर बहुत दूर तक जाना नहीं चाहता था। कारण यह कि किनारे के आस-पास रहने से कभी कोई जहाज़ मिल जाने की आशा थी।

आख़िर मुहाने के पास एक सुभीते की जगह देखकर मैंने बड़े बड़े कष्ट और परिश्रम से बेड़े को वहाँ ले जाकर तटस्थ भूमि में भिड़ाने की चेष्टा की। किन्तु किनारे की भूमि इतनी ऊँची ढलुवाँ थी कि फिर मेरा बेड़ा किनारे से लगकर उलटने

पर हो गया। तब मैं थोड़ी देर तक ज्वार के और अधिक होने की प्रतीक्षा से ठहर गया। ज्वार के बढ़ने से जब पानी कछार के ऊपर तक पहुँच गया, तब मैंने बेड़े को किनारे लगाकर अपनी सब चीज़ों को उतार उतारकर सूखी ज़मीन पर ला रक्खा।

मैं अब अपने रहने के लिए एक रक्षित स्थान खोजने लगा। क्या मालूम मैं कहाँ हूँ, यह देश है या टापू? मनुष्यों की यहाँ बस्ती है या नहीं? हिंस्र जन्तुओं या नृशंस लोगों का यहाँ भय है या नहीं,—मैं यह कुछ न जानता था। वहाँ से कोई एक मील पर एक पहाड़ दिखाई दे रहा था। एक बन्दूक़ और गोली-बारूद लेकर मैं अपने रहने की जगह ठीक करने चला। बड़े बड़े कष्ट से पहाड़ की चोटी पर चढ़कर देखा कि मैं एक टापू में आ गया हूँ। चारों ओर पानी ही पानी नज़र आता था, कहीं स्थल का चिह्न भी दिखाई न देता था। पच्छिम ओर तीन-चार मील पर एक पहाड़ और दो छोटे छोटे टापू देख पड़ते थे। मैंने ख़ूब ग़ौर करके देखा, वे दोनों द्वीप ग़ैर आबाद थे और मनुष्य तथा हिंस्र पशुओं से बिलकुल ख़ाली थे। वहाँ पक्षी असंख्य देखने में आये। वैसे पक्षी अब तक मैंने कभी न देखे थे। उन पक्षियों में कौन खाद्य थे और कौन अखाद्य, इसका भी मैं निश्चय न कर सका। मैंने एक बाज़ पक्षी की क़िस्म की चिड़िया मारी।

जब से संसार की सृष्टि हुई है तब से, मालूम होता है, इस द्वीप में इसके पूर्व कभी बन्दूक़ की आवाज़ न हुई थी।

बन्दूक़ की आवाज़ सुनकर चिड़ियाँ विचित्र कलरव करके आकाश में उड़ने लगीं। जिस पक्षी को मैंने मारा था उसका मांस बहुत ख़राब था, खाने के योग्य नहीं था।

यह देख सुनकर मैं अपनी वस्तुओं के निकट लौट आया और ऐसी आयोजना करने लगा जिससे निर्विघ्नतापूर्वक रात कटे। मैंने चारों ओर बक्स रखकर उसके ऊपर तख़्ता रक्खा और झोपड़े के क़िस्म का छोटा सा कुटीर बना लिया।

अब मैंने फिर जहाज़ पर से कुछ वस्तुएँ ले आने का इरादा किया। मैं अपने मन में तर्क-वितर्क करने लगा कि बेड़े को ले जाने में सुविधा है या नहीं, पर कोई सुभीता न देख पड़ा। तब भाटे के समय पूर्ववत् नीचे की राह से जाने का ही मैंने निश्चय किया। इस दफ़े मैं अपने बदन के कपड़े उतारकर झोपड़े में रख गया।

मैंने पहले की तरह जहाज़ में जाकर फिर एक बेड़ा बनाया। पहली बार ठोकर लगने से मैं चेत गया। अब की बार मैंने न तो बहुत बड़ा बेड़ा बनाया और न उस पर ज़्यादा बोझ ही रक्खा। फिर भी मैं अनेक आवश्यक वस्तुएँ जहाज़ पर से ले आया। चन्द क़िस्म के हथियार, लोहे की छड़, बन्दूक़, गोली-बारूद और सान चढ़ाने की कल आदि अनेक वस्तुओं का संग्रह कर लिया। इनके अतिरिक्त पुरुषों के पहनने की कुल पोशाकें, जहाज़ का पाल, बिछौना और बिछौने की चादरें आदि ले आया। मैं जब जहाज़ पर से चीज़ें लाने

गया था तब मेरे मन में इस बात का खटका था कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे खाने-पीने की चीज़ें उठाकर कोई ले न जाय। किन्तु लौटकर देखा तो मेरे घर में कोई न आया था, केवल एक वनविड़ाल एक सन्दूक़ के ऊपर बैठा था। वह मुझे अपनी ओर आते देख दौड़कर अलग जा बैठा। वह बड़े निश्चिन्त भाव से बैठकर मेरे मुँह की ओर ताकने लगा, मानो वह मेरे साथ परिचय करना चाहता हो। मैंने उसकी ओर बन्दूक़ दिखलाई किन्तु बन्दूक़ की पहचान न रखने के कारण वह ज्यों का त्यों बैठा रहा—डरा नहीं। तब मैंने उसके आगे एक बिस्कुट फेंक दिया। वह अपनी जगह से उठा और उसे सूँघकर खाने लगा। बिस्कुट खाकर वह कृतज्ञता की दृष्टि से प्रसन्नता-पूर्वक मेरी ओर देखने लगा मानो वह और लेना चाहता था। किन्तु मेरे पास खाने की फ़ालतू सामग्री न थी इसलिए उसको और न दे सका। तब वह वहाँ से चला गया।

दूसरी खेप की चीज़ें ले आने पर मैंने एक तम्बू बनाया। धरती में कई खूँटे गाड़कर उसके ऊपर मैंने पाल फैलाकर एक वस्त्रागार बना लिया।

इसके अनन्तर जो वस्तुएँ धूप में या पानी में बिगड़ने योग्य थीं उन्हें मैंने तम्बू के भीतर रक्खा और सन्दूक़ों को तम्बू के चारों ओर इस ढँग से रक्खा जिसमें कोई मनुष्य या हिंस्र पशु मुझ पर एकाएक आक्रमण न कर सके। फिर तम्बू

के द्वार पर कई एक तख़्ते खड़े करके एक ख़ाली बक्स सीधा खड़ा करके टिका दिया। इस प्रकार चारों ओर अच्छी तरह घेर घार करके मैं ज़मीन में एक बिछौना बिछाकर सो रहा। मैंने अपने सिरहाने दो पिस्तौल और पास ही एक बन्दूक़ भरकर रख ली और निश्चिन्त होकर ख़ूब सोया। बहुत दिनों पर बिछौने का शयन, पूर्वरात्रि का जागरण और दिन भर का परिश्रम, शीघ्र ही मेरी गाढ़ निद्रा के कारण हुए।

एक मनुष्य के लिए मेरे घर का प्रबन्ध काफ़ी हो चुका था, किन्तु मैंने उतने पर ही सन्तुष्ट न होकर जहाज़ पर से और और चीज़ें ले आने का संकल्प किया। प्रतिदिन भाटे के समय जाकर जहाज़ पर से पाल और कैम्बिस काटकर ले आता था; रस्सी, डोरी, भीगी हुई बारूद का पीपा, छुरी, कैंची, लोहे की छड़ें, लकड़ी और तख़्ते आदि जो मिल जाता उसे उठाकर वहाँ से डेरे पर मैं रोज़ लाने लगा। तीसरी बार की खोज में फिर कुछ चपातियाँ, एक बर्तन भर मैदा, और चीनी मिली। इन चीज़ों को मैं बड़ी हिफ़ाज़त से ले आया। चौथी बार मैंने अपने बेड़े पर इतना बोझा रक्खा कि जो किनारे आते आते उलट गया। उस पर जितनी चीज़ें थीं उनके साथ साथ मैं भी पानी में गिर पड़ा। उससे मेरी विशेष हानि नहीं हुई। मेरी लाई हुई उन चीज़ों में बहुत सी ऐसी थीं जो पानी में डूबीं नहीं, उतराने लगीं। सिर्फ़ लोहे की वस्तुएँ डूब गईं। कितनी ही वस्तुओं को मैं तैर-

कर पानी में से खींच लाया और कितनी ही वस्तुओं को भाटे के समय ढूँढ़कर निकाल लाया।

इस तरह तेरह दिन बीते। इस बीच मैं ग्यारह बार जाकर जहाज़ पर से—अकेले जहाँ तक हो सका—आवश्यक वस्तुएँ उठा लाया। मैं समूचे जहाज़ को टुकड़े टुकड़े करके धीरे धीरे ऊपर ले आता, किन्तु इतने में वायु का वेग प्रबल हो उठा। फिर भी भाटे के समय मैं बारहवीं बार गया। जहाज़ की एक दराज़ में अस्तुरा, कैंची, काँटा, छुरी और कुछ रुपये मिले। रुपयों को देखकर मैंने मन ही मन हँसकर कहा—"बेकार है! तुम्हारी अपेक्षा मेरे निकट अभी एक छुरी का मूल्य कहीं बढ़कर है।" एक बार मैंने सोचा, रुपया लेकर क्या करूँगा? किन्तु फिर भविष्य की बात सोचकर उन्हें भी रख लिया। देखा, आकाश में बादल उमड़ रहे हैं। मैं एक बेड़ा बनाने की बात सोच रहा था और कुछ कुछ उसकी तैयारी भी कर रहा था। पन्द्रह मिनट के भीतर ही पानी बरसने लगा और उलटी हवा बहने लगी, अर्थात् किनारे से समुद्र की ओर। वायु की प्रतिकूलता में किनारे तक बेड़ा ले जाना असंभव होगा और ज्वार आने के पहले स्थल भाग में न लौट जायँगे तो नीचे के रास्ते से लौट जाना भी असंभव है, यह सोचकर मैं पानी में उतर पड़ा। देखते ही देखते हवा ने ज़ोर पकड़ा, समुद्र में तरङ्ग पर तरङ्ग उछलने लगी। मेरी पीठ पर गठरी बँधी थी, इसलिए मैं बड़ी कठिनता से किसी तरह तैरकर ऊपर आया।

मैंने अपने नव-निर्मित गृह में जाकर बेखटके रात बिताई। सवेरे उठकर देखा, जहाज़ का कहीं नाम-निशान तक नहीं। यह देखकर मैं अत्यन्त विस्मित हुआ। किन्तु मैं इतने दिनों में जहाज़ से सब चीज़ें ढो ढोकर ले आया था और कोई चीज़ लाने को न रह गई थी। यह मेरे लिए विशेष सन्तोष का कारण हुआ।

इस समय मैंने जहाज़ के अलक्षित होने की चिन्ता छोड़कर दूसरे काम में मन लगाया।

क्रूसो का क़िला

मैंने अपने रहने के स्थान को निरापद करने पर पूरा ध्यान दिया। जङ्गली असभ्य मनुष्य वा हिंस्र पशु मेरा कोई नुक़सान न कर सकें, इसके लिए कैसा घर बनाना चाहिए—मैं यही सोचने लगा। एक बार यह सोचता था कि ज़मीन में सुरङ्ग खोदकर उसी में रहूँगा, फिर जी में होता कि तम्बू के भीतर ही रहूँगा। आख़िर मैंने दोनों तरह से रहने का निश्चय किया।

मैं उस समय जहाँ था वह जगह रहने के लायक़ न थी। समुद्र के किनारे की भूमि, सील होने के कारण, स्वास्थ्यकर नहीं होती; दूसरे पीने का पानी भी वहाँ अच्छा न था। इसलिए मैं अपने रहने के लिए उपयुक्त स्थान खोजने लगा।

मैंने सोचकर देखा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ इतनी बातें होनी चाहिएँ;—प्रथम जगह स्वास्थ्यकर हो, दूसरे मीठा

पानी हो, तीसरे धूप का बचाव हो, चौथे हिंस्र मनुष्य और पशुओं से आत्मरक्षा हो सके, पाँचवें समुद्र का दृश्य हो। यदि जहाज़ को जाते देखूँगा तो किसी तरह भगवान् की कृपा से उद्धार हो सकेगा। कारण यह कि मैं तब भी उद्धार की आशा को एकदम छोड़ न बैठा था।

घूमते घूमते एक पहाड़ की तलहटी में मुझे समतल भूमि मिली। वहाँ हर तरह का सुभीता देख पड़ा। इस स्थान की बग़ल में पहाड़ इतना बड़ा था कि कोई प्राणी उस तरफ़ से उतरकर मुझ पर आक्रमण न कर सकता था।

पहाड़ में एक जगह गुफा की तरह खुदा था, किन्तु वह असली गुफा न थी। एक प्रकार का गड्ढा था।

मैंने उसी तृणसंकुल हरित-भूमि में, पर्वतस्थित खोह के समीप, तम्बू खड़ा करने का विचार किया।

खोह के सामने दस गज़ हटकर, बीस गज़ व्यास में, मैंने धनुषाकार एक अर्धवृत्त का चिह्न अङ्कित किया। इस अर्धवृत्त के ऊपर मैंने बल्लियाँ गाड़कर एक घेरा डाला; पहली पंक्ति के पीछे छः इञ्च दूरी पर फिर एक पंक्ति-बद्ध बल्लियों का घेरा बनाया। बल्लियों को मैंने ख़ूब मज़बूती के साथ गाड़ा था, और उनका सिरा अच्छी तरह बल्लम की तरह पैना कर एक सा कर दिया था। जङ्गल से बल्लियों के उपयुक्त लकड़ी काटकर लाने और उसके सिरे छीलकर गाड़ने में मेरा बहुत समय लगा और परिश्रम तो करना ही पड़ा। बल्लियाँ

गड़ जाने पर दो पंक्ति-बद्ध बल्लियों के बीच की जगह को जहाज़ की रस्सी से उनकी ऊँचाई के बराबर भर दिया। इसके बाद भीतर से उनकी सहायता के लिए तिरछी मेखें गाड़ दीं। यह घेरा ऐसा सुदृढ़ हुआ कि किसी मनुष्य या हिंस्र पशु के मुझ पर आक्रमण करने की आशङ्का न रही।

इस घेरे के भीतर जाने-आने के लिए मैंने कोई दर्वाज़ा न रक्खा। एक छोटी सीढ़ी के द्वारा घेरे को लाँघकर जाने-आने की व्यवस्था की। इस प्रकार क़िले की रचना करके मैं ख़ूब निश्चिन्त होकर रात में सोने लगा। किन्तु बाद को मैंने समझा, इस टापू में मेरा कोई दुश्मन नहीं है। मेरी इतनी सावधानी निरर्थक हुई। इस क़िले के भीतर मैंने अपनी वस्तुओं को पहली जगह से बड़े परिश्रम के साथ ढो ढोकर ला रक्खा। उस प्रदेश में वर्षा बहुत होती थी, इस कारण मैंने दोहरा तम्बू अर्थात् एक के भीतर और एक तम्बू खड़ा किया और ऊपर के तम्बू को तिरपाल से ढँक दिया।

बहुत दिनों तक मैं बड़े परिश्रम से ये सब काम कर ही रहा था, कि एक दिन काली घटा घिर आई। सारा आकाश-मण्डल काले बादलों से भर गया और इसके साथ ही पानी बरसने लगा। बिजली कड़कने लगी। बिजली की चमक की तरह मेरे हृदय में धक से एक बात याद हो आई, मेरी बारूद! यदि उसमें आग लग जाय तब तो सर्वनाश हो जायगा। मेरी आत्मरक्षा और आहार-संग्रह करने का उपाय

एकदम नष्ट हो जायगा। बारूद में आग लग जाने से अन्यान्य वस्तुओं के साथ मैं भी उड़ जा सकता था—यह चिन्ता पहले मेरे मन में न थी। क्योंकि बारूद से उड़ जाने पर मैं किस तरह, कब मर जाता, यह जानने का अवसर ही न मिलता तो फिर मृत्यु से डरता ही क्यों ?

वृष्टि बन्द होने पर, बारूद रखने के लिए, मैं छोटी छोटी थैलियाँ और बक्स बनाने लगा। बारूद के बक्स अलग अलग रक्खे जायँगे तो एक लाभ होगा। वह यह कि यदि आग लगेगी भी तो सब एक साथ न जलेंगे। यह सोचकर मैं उसी की व्यवस्था करने लगा। मेरे पास प्रायः तीन मन बारूद थी। मैंने उसे सौ हिस्सों में बाँटकर पहाड़ के नीचे गढ़ा खोद खोदकर पृथक् पृथक् गाड़ रक्खा और उन सब जगहों पर भली भाँति निशान भी कर दिया, जिससे खोद-कर निकालते समय गड़बड़ न हो। मैंने पूरा प्रबन्ध कर दिया जिससे वे बक्स वर्षा के जल में भीग न जायँ। जिस पीपे में पानी घुस जाने से बारूद भीग गई थी उसके लिए कोई चिन्ता न थी। उसे पहाड़ की खोह में रख दिया। यह सब करते धरते मेरे पन्द्रह दिन कट गये।

क्रूसो की कर्मकारिता

जब मैं क़िला बना रहा था तब प्रति दिन एक बार काम से छुट्टी पाकर बन्दूक़ हाथ में लेकर यह देखने के लिए बाहर

घूमने जाता था कि खाने के उपयुक्त कोई चीज़ मिलती है या नहीं। इससे उस द्वीप का परिचय पाने का भी सुयोग मिलता था।

मैंने देखा कि इस द्वीप में बकरे बहुतायत से हैं; पर वे अत्यन्त डरपोक और बड़ी फुर्ती से भागते थे। उनके पास तक पहुँचना बड़ा कठिन था। बहुत कोशिश से पहले पहल मैंने एक बकरी का शिकार किया। उसके एक छोटा सा बच्चा था। वह उस समय दूध पी रहा था, यह देखकर मुझे बड़ा कष्ट हुआ। जब उस बच्चे की नवप्रसूता माँ धरती पर लोट गई तब बच्चा चुपचाप उसके पास खड़ा हो रहा। यह देखकर मैं दौड़कर उसके पास गया और उसे गोद में उठा लिया। इसके बाद जब मैं उसे नीचे उतारकर बकरी को कन्धे पर उठाकर ले चला तब वह बच्चा मेरे पीछे पीछे मेरे किले तक आया। मैं उस बच्चे को गोद में उठाकर किले के अन्दर ले गया। मैंने उसे पोसना चाहा पर अभी तक उसे खाना न आता था। वह कुछ भी न खाता था। यह देख मैंने उसे भी मारकर अपने उदरानल की ज्वाला शान्त की। इन दोनों बकरों से बहुत दिनों तक मेरा खाना चला। मेरे पास रोटियाँ बहुत कम थीं, इसलिए मैं उन्हें बहुत बचाकर ख़र्च करता था। मांस मिल जाने से मैं बहुत निश्चिन्त हो गया।

३०वीं सितम्बर को दो-पहर के समय मैंने इस जनशून्य एकान्त स्थान में पहले पहल पैर रक्खा। यहाँ आये जब

दस बारह दिन हुए तब मैंने सोचा कि मेरे पास पञ्चाङ्ग (यन्त्री) नहीं है। तिथि का निर्णय करना पीछे कठिन हो जायगा। इसलिए मैंने एक तख़्ते पर अपनी छुरी से बड़े बड़े अक्षरों में लिखा—

१६५६ ई० की ३०वीं सितम्बर को मैं यहाँ किनारे आ लगा।

इसके बाद उस तख़्ते को एक लम्बे से चौकोर खूँटे में लटकाकर मैंने वहाँ गाड़ दिया जहाँ पर मैं पहले किनारे पर आ लगा था।

उस चौकोर खूँटे में प्रतिदिन मैं छुरी से एक एक चिह्न करने लगा। प्रति सातवें दिन का दाग़ कुछ बड़ा कर देता था, और महीने की पहली तारीख़ का दाग़ उससे भी बड़ा कर देता था। इस प्रकार मैंने अपनी यन्त्री बना करके तिथि, सप्ताह, महीना और वर्ष जानने का उपाय कर लिया।

मैं जहाज़ पर से कुछ कोरा काग़ज़, क़लम, रोशनाई, तीन चार कम्पास, नक़्शा, किताब और बाइबिल की पुस्तकें ले आया था। हमारे जहाज़ पर दो बिल्लियाँ और एक कुत्ता था। मैं पहली ही बार जाकर जहाज़ पर से दोनों बिल्लियों को ले आया था। कुत्ता आप ही तैरकर मेरे पीछे पीछे चला आया। यही तीनों इस समय मेरे संगी साथी थे। बिल्ली और कुत्ते ने बहुत दिनों तक मेरा बहुत कुछ उपकार किया था। मैं चाहता था कि वे मेरे साथ बातें करें,

पर ऐसा होना कब सम्भव था ! जो हो, मैं उनके साथ रहने से बहुत ख़ुश था।

जब तक मेरे पास रोशनाई रही तब तक मैं सब बातों का विवरण बहुत सफ़ाई से लिखता जाता था। पर जब स्याही चुक गई तब मैं किसी उपाय से भी स्याही न बना सका।

घर-द्वार बना लेने पर मुझे कई वस्तुओं की कमी का अनुभव होने लगा। खनती, कुदाल, खुरपी, आल-पीन, सुई और डोरा तथा परिधेय वस्त्र के न रहने से मेरे गृहस्थी के कामों में बाधा पड़ने लगी। प्रत्येक कार्य का सम्पादन बहुत विलम्ब और कठिनता से होने लगा। इससे पहले तो जी में बड़ा रंज होता था, किन्तु फिर मैंने सोचा कि कोई काम जल्दी होने ही से क्या लाभ। और काम ही क्या है, जिसके लिए समय बचाऊँगा ? जब तक जिस काम में लगा रहूँगा तब तक उसी को मैं अपना कर्त्तव्य समझूँगा।

मैंने धीरे धीरे अपनी सब वस्तुओं को घर में सिलसिलेवार रख दिया। अब जिन आवश्यक वस्तुओं का अभाव था और जिनके बिना कष्ट होता था उन्हें तैयार करने का इरादा किया। टेबल और कुरसी के न रहने से मैं अपने जीवन का थोड़ा सा समय भी सुख से न बिता सकता था। न मैं कुछ लिख सकता था, न बैठकर कुछ पढ़ सकता था। खाने में भी कठिनाई होती थी। मैंने टेबल-कुरसी बनाना आरम्भ किया। मैंने इसके पहले कभी मिस्त्री का काम न किया था,

किन्तु परिश्रम और अध्यवसाय के द्वारा मैंने शीघ्र ही उस काम में सफलता प्राप्त की। मेरे पास सब प्रकार के औज़ार न थे, तथापि कुछ हथियारों के बिना ही मैंने बहुत सी चीज़ें बना लीं। किन्तु इन कामों में मेरा बहुत समय नष्ट होता था और परिश्रम भी अधिक करना पड़ता था। पर उस समय मेरे परिश्रम और समय का मूल्य ही क्या था? किसी न किसी तरह कुछ परिश्रम और व्यावहारिक कामों के लिए समय का विभाग करना ही पड़ता। जो औज़ार मेरे पास न था उसका काम मैं बुद्धि से लेता था। मान लो, मेरे पास (लकड़ी चीरने का) आरा नहीं था और मुझे तख़्ते की आवश्यकता हुई, उस हालत में मैं कुल्हाड़ी से पेड़ काट गिराता था और उसके दोनों ओर की लकड़ी छीलकर एक चपटा चौड़ा सा तख़्ता तैयार कर लेता था। उस तख़्ते पर रन्दा फेरकर चिकना कर लेता था। इस तरकीब से, बहुत परिश्रम करने पर, एक पेड़ से सिर्फ़ एक मोटा सा तख़्ता तैयार होता था, पर हो तो जाता था।

जहाज़ पर से मैं जो तख़्ता लाया था उससे पहले पहल मैंने एक टेबल और एक कुरसी बनाई। इसके बाद पेड़ से तख़्ता निकालकर उसके द्वारा घर में ताक़ (रैक) बनाया और उस पर सब चीज़ें क़रीने से रख दीं जिसमें ज़रूरी चीज़ जब चाहें उस पर से निकाल लें।

यहाँ मैं अपना रोज़ रोज़ का काम, विचार और घटना आदि दैनिक वृत्तान्त, लिखकर डायरी तैयार करने लगा। इसमें

मैंने अपनी चित्त-वृत्ति के अनुसार अनेक प्रकार की बातें लिखी थीं। निदान जब मेरी रोशनाई चुक गई तब मुझे लाचार होकर लिखने से हाथ खींचना पड़ा।

द्वीप का परिदर्शन

इस निरानन्दकारी द्वीप में आये मुझे दस महीने से ऊपर हुए। मालूम होता है, इस द्वीप की सृष्टि होने से लेकर अब तक, मेरे सिवा, कोई मनुष्य यहाँ न आया था। इस समय इस टापू को एक बार अच्छी तरह देखने की इच्छा हुई।

१५ जुलाई से मैंने इस द्वीप की देख-भाल करना आरम्भ किया। मैं जिस जगह खाड़ी के भीतर बेड़े से उतरा था उस खाड़ी में कछार ही कछार जाकर देखा कि उसके किनारे कहीं कहीं हरित क्षेत्र हैं। एक जगह देखा कि तम्बाकू के बड़े बड़े पेड़ बहुतायत से उगे हैं। कई एक पेड़ जंगली ऊख के भी देख पड़े। आज यहीं तक देखकर लौट आया।

दूसरे दिन और आगे बढ़कर एक जंगल से घिरी हुई जगह पहुँचा। वहाँ पेड़ों में भाँति भाँति के परिचित और अपरिचित फले हुए फलों को देखकर मैं अत्यन्त आह्लादित हुआ। परिचित फलों में देखा कि कितने ही पके तरबूज़ लगे हैं और रस से परिपूर्ण अंगूर के गुच्छे के गुच्छे पके हुए हैं। यह विचित्र मधुमय आविष्कार देख मैं अंगूर के गुच्छे तोड़कर

खाने लगा। मैं जानता था कि अधिक अंगूर खाने से कितने ही लोगों को ज्वर हो आता है और उससे उनकी मृत्यु हो जाती है। इस भय से मैंने अधिक नहीं खाये। मैंने इन फलों का संग्रह करना चाहा, और उन्हें सुखाकर किसमिस की तरह रखना चाहा। इन्हें सुखाकर रखने से यह लाभ सोचा कि जब अंगूरों का समय न रहेगा तब भी मधुर और पुष्टिकारक खाद्य की कमी न होगी।

मैंने सारा दिन वहीं बिताया। रात को भी घर लौटकर नहीं आया। इस द्वीप में प्रथम दिन जैसे पेड़ पर चढ़कर रात बिताई थी उसी तरह आज की रात भी बिताई। सबेरे उठकर लगातार चार मील उत्तर ओर जाकर एक पहाड़ की तलहटी में पहुँचा। वह स्थान हरियालियों और भाँति भाँति के पेड़-पौधों से ऐसा सुशोभित मालूम होता था जैसा कोई सुन्दर उद्यान हो। नारियल, नारङ्गी, कागज़ी और बीजपूरक नींबू के पेड़ इस अधिकता से उपजे थे कि एक उपवन सा प्रतीत होता था। किन्तु ये सब जङ्गली थे और फल भी उनमें कम ही थे। मैंने कुछ नींबू तोड़ लिये। पानी में नींबू का रस डालकर जो शरबत बनाया वह बड़ी अच्छी ठंडाई और बलकारक जँचा। बरसात का मौसम करीब आ पहुँचा। इसलिए अभी से बरसात के लिए खाद्य-सामग्री का सञ्चय करना आवश्यक जान जहाँ तक हो सका अंगूर, नींबू आदि फल तोड़ लिये। दूसरी बेर थैली लाकर और

उन्हें उसमें भरकर घर ले आने का विचार किया। तीन दिन बाद मैं घर को लौट आया। अभी मैंने तम्बू को ही घर बना रक्खा था।

घर आते आते जो अंगूर ख़ूब पके थे वे आप ही आप फट गये और उनका रस बह गया। नींबू ठीक थे। किन्तु बहुत तो ला नहीं सका था।

१६ वीं तारीख़ को दो छोटी थैलियाँ लेकर मैं फल बटोरने के लिए फिर रवाना हुआ। कल जिन पेड़ों में गुच्छे के गुच्छे फल लदे थे, आज उनमें अधिकांश कटे फटे और खाये हुए तथा नीचे गिरे पड़े थे। यह देखकर मैंने समझा कि किसी जङ्गली जानवर ने इन फलों की ऐसी दुर्दशा कर डाली है। किन्तु उस जन्तु का मैं ठीक ठीक पता न लगा सका। जो हो, जितने फल थे वे ही मुझ अकेले के लिए काफ़ी थे। जितने मुझसे बने उतने नींबू ले लिये। किन्तु अंगूर मारे रस के फटे जा रहे थे। वे थैली में भरकर ले जाने योग्य न थे। यह समझकर मैंने अंगूर की डाल को झुका देना ही अच्छा समझा। इससे अंगूरों के दब जाने का भय न था और दूसरा फ़ायदा यह कि वे धूप में सूख भी जायँगे।

घर लौटकर मैं उस रमणीय स्थान के विविध फलों की बात सोचने लगा। मैं ही यहाँ का निष्कण्टक एकाधिप हूँ, इस सम्पूर्ण द्वीप पर मेरा ही एकाधिपत्य है। अब मेरे मन में यह ख़याल पैदा हुआ कि मैंने जहाँ घर बनाया है वह जगह

इस द्वीप में सब स्थानों की अपेक्षा निरानन्दकर है। उस प्राकृतिक उद्यान में यदि कहीं एक निरापद स्थान मिल जाय तो वहीं रहने लगूँगा। यह मैंने अपने मन में निश्चय किया।

उस प्राकृतिक उपवन में घर बनाने की लालसा बहुत दिनों तक मेरे मन में रही। किन्तु आगे-पीछे की बातें सोचकर उस लालसा को मन से हटा दिया। मैंने फिर यह बात सोची कि समुद्र के तट पर हूँ। कदाचित् कोई सुयोग यहाँ से जाने का मिल भी सकता है। जो अभाग्य मुझ अकेले को खींचकर यहाँ ले आया वह किसी दिन मेरे सदृश किसी दूसरे हतभाग्य को भी लाकर मेरे पास पहुँचा सकता है। यहाँ रहने से यह घटना कदाचित् हो भी सकती है, किन्तु समुद्र-तट से दूर पहाड़ या जङ्गल में आश्रय लेने से उद्धार की आशा एकदम छोड़ ही देनी होगी। जिस किसी अभिप्राय से क्यों न हो, वह स्थान मुझे इतना पसन्द था कि जुलाई तक का मेरा समय वहीं कट गया। मैंने वहाँ एक कुञ्जभवन बनाकर चारों ओर से उसे अच्छी तरह घेर दिया। ऊँचे ऊँचे खम्भों से घेरे को ख़ूब मज़बूत कर दिया। यहाँ भी उसी तरह सीढ़ी से होकर जाने-आने की व्यवस्था की। यहाँ कभी कभी लगातार तीन चार रातें बड़े मज़े में कट जाती थीं। यह मेरे दिल बहलाने की जगह हुई और वह रहने की।

यह सब करते धरते अगस्त का महीना आ पहुँचा और पानी बरसना शुरू हुआ। यद्यपि तम्बू खड़ा करके उसमें

बिल्ली तीन बच्चों को साथ लेकर आ गई। उसे देखकर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ--पृ० ८२।

रहने का सब सामान ठीक कर लिया था, तथापि वहाँ झड़ी से बचने के लिए कोई पर्वत की ओट न थी। अगस्त से लेकर कुछ दिन अक्तूबर तक इस तरह वर्षा हुई कि घर से बाहर निकलना मेरे लिए कठिन हो गया। वर्षा आरम्भ होने के पहले अङ्गूर के कोई दो सौ गुच्छे सुखाकर मैंने रख लिये थे।

कुछ दिन से मेरी बिल्ली कहाँ चली गई थी, उसका कुछ पता न था। मैंने समझा, शायद वह मर गई। वर्षा आरम्भ होते ही देखा कि वह तीन बच्चों को साथ लेकर आ गई। उसे देखकर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। किन्तु उस दिन से मैं बिल्लियों के उपद्रव से हैरान हो गया। झुण्ड की झुण्ड बिल्लियाँ आने लगीं। तब मैं उनको भगाने की फ़िक्र में लगा। आख़िर जब मैं उन्हें यों न भगा सका तब गोली मारना शुरू किया।

बरसात के पानी में भीगने के भय से मैं बाहर न जाता था। इधर खाद्य-सामग्री भी समाप्त हो चली। मैं सुयोग पाकर दो दिन बाहर निकला। एक दिन एक बकरा और दूसरे दिन एक कछुआ शिकार में मिला। कछुआ खाने में बड़ा स्वादिष्ठ था। आजकल मेरे खाने का यह नियम था कि सबेरे सूखे अंगूरों का एक गुच्छा, दोपहर को बकरे या कछुए का भुना हुआ मांस और रात को कछुए के दो तीन अंडे खाता था। मेरे पास ऐसा कोई बर्तन न था जिसमें मांस को पकाकर शोरवा बनाता।

वर्षा बन्द होने पर मैं गुफा को खोदकर पार्श्व की ओर बढ़ाने लगा। उससे मेरे घेरे के बग़ल में जाने-आने का एक दर्वाज़ा सा बन गया। किन्तु यह द्वार ठीक नहीं जान पड़ा। मैं पहले घेरे के भीतर जैसा निश्चिन्त होकर रहता था वैसा अब न रह सकता था। यद्यपि इस द्वीप में सबसे बड़ा जानवर, जो देखने में आया, बकरा ही था तो भी किसी के अतर्कित आक्रमण की आशङ्का बनी रहती थी।

कृषि-कर्म्म

आज ३० वीं सितम्बर है। आज इस द्वीप में आने का मेरा वार्षिक दिन है। लकड़ी के तख़्ते पर तारीख़ के चिह्नों को गिनकर देखा, यहाँ आये ३६५ दिन हो गये। आज के दिन मैंने उपवास किया। दिन भर भूखा रहकर मैंने बड़े विनीत भाव से केवल परमेश्वर का भजन किया। सूर्यास्त होने पर एक बिस्कुट और थोड़े से सूखे अंगूर खाकर पारण किया। इसके पहले, धर्म क्या चीज़ है इसे कुछ न समझकर, मैं पर्व के दिन भी परमेश्वर का नाम न लेता था। इस समय मैंने अपनी काष्ठ-पत्री (पत्रा) की दिन-संख्या के चिह्नों के सात सात विभाग करके रविवार का निर्णय कर लिया। पीछे से मुझे मालूम हुआ कि गिनती में एक दिन किसी तरह कम हो गया है। मेरे पास स्याही बहुत कम रह गई थी,

इसलिए जीवन की विशेष घटना को छोड़ और दैनिक समाचार नहीं लिख सकता था।

मेरे घर के पास अकस्मात् कुछ जौ और धान के पौधे उपजे थे। उनमें से मैंने तीस बालें धान की और बीस जौ की, बीज बोने के लिए, रख छोड़ी थीं। बरसात के बाद मैंने सोचा कि बीज बोने का यही उपयुक्त समय है। मैंने अपने काठ के कुदाल से ज़मीन खोदकर उसे दो हिस्सों में बाँटा। बीज बोते समय इस बात पर ध्यान गया कि "ज़मीन की पहचान और फ़सल बोने का समय मैं ठीक ठीक नहीं जानता, अतएव एक ही बार सब बीजों को बो देना बुद्धिमानी न होगी।" यह सोचकर मैंने एक एक मुट्ठी बीज दोनों में से रखकर बाक़ी बो दिया। मैंने यह बड़ी अक्लमन्दी का काम किया, क्योंकि बरसात बीत जाने पर वृष्टि के अभाव से एक भी बीज अंकुरित न हुआ। किन्तु दूसरे साल वही बीज, वर्षा का पानी पाकर, सबके सब ऐसे उग आये जैसे नया बीज बोया गया हो। परन्तु उस समय बीज को निष्फल होते देख मैं खेती के उपयुक्त ज़मीन ढूँढ़ने लगा। मेरे कुञ्जभवन के पास एक ज़मीन का टुकड़ा था। उसे मैंने खेत के लायक़ पसन्द करके, जोत गोड़कर, आबाद किया और फ़रवरी के अन्त में बीज बोया। मार्च और अपरैल की वर्षा का पानी पाकर बड़े सुन्दर पौदे निकले और फले भी ख़ूब। किन्तु इस दफ़े भी मैं सब बीज बोने का साहस न कर सका।

इसलिए मुझे पूरे तौर से फ़सल भी न मिली। जो हो, दो बार परीक्षा करने से मुझे अभिज्ञता हो गई कि खेती का ठीक समय कब होता है। साल में दो बार बीज बोने और फ़सल तैयार करने का समय आता है।

धान के पौदे क्रमशः बढ़ने लगे। नवम्बर में आकर वर्षा रुक गई। मैं फिर अपनी विनोदवाटिका में गया। यद्यपि कई महीनों से वहाँ नहीं गया था तथापि वहाँ जिन वस्तुओं को जैसे रख आया था उन्हें उसी रूप में पाया। कुञ्जभवन के चारों ओर जिन पेड़ों का घेरा दिया था, वे अब अच्छी तरह लग गये हैं और उनकी डालें तथा पत्ते चारों ओर फैल गये हैं। मैंने उनके नूतन डाल-पत्तों को छाँटकर एक सा कर दिया। तीन वर्ष में वे पेड़ से झङ्खाड़ होकर, पचीस फ़ुट व्यास के एक वृत्ताकार स्थान को अपनी शाखाओं से ढककर, शोभायमान होने लगे। उन्होंने एक ऐसा सुन्दर छायाशीतल कुञ्जवितान निर्माण किया कि उसकी शोभा बरनी नहीं जाती। यह देखकर मेरे मन में यह इच्छा हुई कि अपने निवासस्थान के सामने अर्धवृत्ताकार में इन पेड़ों का एक घेरा बनाऊँ। पहले के घेरे से आठ फ़ुट के अन्तर पर इन पेड़ों को मैंने पंक्तिबद्ध रोप दिया। पेड़ शीघ्र ही लग गये और पल्लवित होकर प्रथम तो घर के आच्छादक और दूसरे रक्षा के कारण हो उठे।

यहाँ विलायत की तरह ठण्ड और गरमी नहीं पड़ती थी। यहाँ साल में दो मौसम होते थे; एक वर्षा और दूसरा वसन्त

अर्थात् जाड़े और गरमी का मध्य समय होता था। वर्षा का दारमदार हवा पर था। जब मौसमी हवा चलती थी तब बीच बीच में भी पानी बरस जाता था। वर्षा में भीगकर मैं एक बार बीमारी से बहुत कष्ट भोग चुका था, इस कारण अब की वर्षा में यथासम्भव घर ही में रहता था। इस अवकाश के समय टोकरी बुनने के लिए मैंने बहुत चेष्टा की किन्तु इसके लिए उपयुक्त सामग्री न मिलती थी। मैंने सोचा कि जिन पेड़ों से मैंने घर का घेरा बनाया है उनकी पतली डाल से टोकरी बन सकती है। इसलिए दूसरे दिन कुञ्जभवन में जाकर कुछ पतली डालें काटकर कोशिश की तो मालूम हुआ कि टोकरी बढ़िया बन सकती है। उसके दूसरे दिन कुल्हाड़ी लेकर गया और एक बोझ डालें काटकर सूखने के लिए घेरे के भीतर रख दीं। जब वे डालें मुरझाकर काम लायक़ हो गईं तब उन्हें अपने घर पर उठा लाया। मैंने देश में अपने घर पर टोकरी बनानेवालों को टोकरी बुनते देखा था और कुछ कुछ सीखा भी था। इस समय वह विद्या काम आ गई। मैंने छोटे बड़े कितने ही टोकरे बना डाले। यद्यपि वे ख़ूबसूरत नहीं बने तथापि घर के काम चलाने लायक़ तो हो गये। अपनी फ़सल रखने के लिए कितने ही टोकरों को ख़ूब गहरा बनाया। मैं गरमी के दिनों में बैठकर अधिकतर टोकरी ही बुनता रहा।

अब भी दो तीन प्रधान वस्तुओं की कमी बनी रही। एक तो कुछ बोतलों के सिवा पतली चीज़ रखने को कोई बर्तन न

था और न कोई रसोई बनाने ही का पात्र था। दूसरे तम्बाकू पीने का नल भी न था।

द्वीप का पुनर्दर्शन

मैं पहले कह आया हूँ कि समस्त द्वीप देखने की मेरी इच्छा थी। मेरे कुञ्जभवन के पास ही समुद्र था। मैं उसी ओर समुद्र के किनारे किनारे घूमने की इच्छा से बन्दूक़, कुल्हाड़ी, कुत्ते, यथेष्ट गोली-बारूद, दो डिब्बे बिस्कुट और एक बड़ी थैली में सूखे अंगूर लेकर रवाना हुआ। समुद्रतट पर जाकर पहले पश्चिम ओर की स्थल-भूमि देखी। किन्तु कुछ निश्चय नहीं कर सका कि वह किस द्वीप या महादेश का किनारा है। अनुमान किया, वह किनारा पन्द्रह-बीस मील से दूर न होगा। मैंने यही मान लिया कि यह अमेरिका ही का कोई अंश होगा और वहाँ असभ्य लोग रहते होंगे। अहा! यदि मैं वहाँ किसी तरह पहुँच सकता तो विधाता का सदय विधान जानकर हृदय से कृतज्ञ होता।

फिर मैंने यह सोचा कि यदि वह स्पेन का राज्य होगा तो एक न एक दिन कोई जहाज़ इस रास्ते से जाते आते ज़रूर दिखाई देगा। यदि ऐसा न होगा तो निश्चय कर लूँगा कि यह असभ्य लोगों का मुल्क है और वे असभ्य कुछ ऐसे वैसे न होंगे, वे ज़रूर नर-भक्षक राक्षस होंगे।

इन बातों को सोचते-विचारते मैं धीरे धीरे आगे बढ़ा। मैंने जिस ओर अपने रहने के लिए घर बनाया था उस ओर से इस तरफ़ का समुद्रतट अधिक रमणीय मालूम होने लगा। ख़ूब लम्बा-चौड़ा मैदान हरियाली, भाँति भाँति के फूलों और तरु-लताओं से शोभायमान था। झुण्ड के झुण्ड हरे रङ्ग के सुग्गे इधर से उधर आकाश को सब्ज़ करते हुए उड़े क्या जा रहे थे मानो आकाश में कोमल घास के खेत बहे जाते थे। यदि मैं एक सुग्गे को पकड़ सकता तो उसे पालता और पढ़ना सिखाता। बड़ी युक्ति से मैंने एक दिन एक तोते के बच्चे को लाठी की झपट मारकर नीचे गिराया। उसे पकड़कर मैं घर पर लाया और यत्नपूर्वक पढ़ाने लगा। बहुत दिनों बाद उसका कण्ठ खुला। आख़िर उसने बोलना सीखा। वह बड़ी कोमलता से मेरा नाम लेकर मुझे पुकारने लगा।

मैं एक दिन में दो मील से अधिक रास्ता नहीं चलता था किन्तु देश की दशा देखने के लिए मैं दिन भर इस प्रकार घूमता रहता था कि रात बिताने के लिए अड्डे पर आते आते एकदम थककर पड़ रहता था। पेड़ के ऊपर या ज़मीन में थोड़ी सी जगह घेर कर उसके भीतर रात बिताता था जिसमें कोई जन्तु, मेरी निद्रित अवस्था में, मुझ पर एकाएक आक्रमण न कर सके।

इस तरफ़ समुद्रतट पर आकर देखा कि कछुए और पक्षी बहुत थे। पक्षी प्रायः सब मेरे पहचाने हुए थे। जो परि-

चित न भी थे उनका भी मांस बहुत स्वादिष्ट था। तब मैंने समझा कि जिधर द्वीप का सबसे ख़राब अंश था उधर ही मैंने घर बनाया है। वहाँ डेढ़ वर्ष के भीतर मुझे इने गिने तीन कछुए मिले थे।

मैं जितना चाहता उतना पक्षियों का शिकार कर सकता था। किन्तु बारूद-गोली शीघ्र चुक जाने की आशङ्का से पक्षियों को यथेच्छ न मार सका। मैं चिड़ियों के शिकार की अपेक्षा बकरों के शिकार को ज़्यादा पसन्द करता था। कारण यह कि एक बकरे से कई दिनों का खाना मज़े में चल जाता था। मेरे घर की तरफ़ से द्वीप के इस हिस्से में बकरों की संख्या भी बहुत अधिक थी। किन्तु यह भाग द्वीप के और भागों की तरह ऊँचा नीचा न था। इधर की भूमि समतल थी। इसलिए वे मुझको दूर से देखते ही बड़ी तेज़ी से भाग जाते थे। उनका पीछा मैं कहाँ तक कर सकता।

इधर का सामुद्रिक तट यद्यपि मुझे अधिक रमणीय जँचता था तथापि मुझे अपने वासस्थल को उठाकर इस तरफ़ लाने की इच्छा न होती थी। ऐसे सर्वांशसम्पन्न घर को तोड़कर नई जगह में आने को जी नहीं चाहता था। मैं इस तरफ़ सिर्फ़ घूमने ही आया था, जी मेरा अपने हाथ के बनाये हुए घर की ओर ही लगा था। समुद्र के किनारे किनारे मैंने अन्दाज़न बारह मील जाकर घर लौट आने की इच्छा की। अपने घूमने की सीमा को निर्दिष्ट रखने की इच्छा से मैंने समुद्र-

तट पर एक लम्बा सा खम्भा गाड़ दिया। वही मेरे पश्चिम ओर के भ्रमण का अन्तिम चिह्न हुआ। मैंने निश्चय किया कि घर जाकर अब पूरब ओर की यात्रा करूँगा और उधर से घूमते घूमते जब चिह्नस्वरूप गड़े हुए खम्भे तक आ जाऊँगा तब समझूँगा कि मेरी द्वीप-परिक्रमा पूरी हुई।

द्वीप का पूरा पूरा परिचय पाने के लिए मैं जिस राह से गया था उस राह से न लौटकर दूसरे रास्ते से लौटा। लौटते समय मेरे कुत्ते ने एक बकरी के बच्चे को पकड़ लिया। मैं झट दौड़कर गया और उसके ग्रास से उसे छुड़ा लिया। मैं दो-चार बकरों को पालकर उनकी संख्या बढ़ाना चाहता था। यह इसलिए कि शायद गोली-बारूद घट भी गई तो मेरे खाने को कुछ टोटा न रहे। मैंने पहले ही सोच लिया था कि इस बकरी के बच्चे को घर ले जाकर पालूँगा। अब एक गर्दानी (गले की रस्सी) बना करके उसके गले में बाँध दी और उसमें एक रस्सी बाँधकर उसे खींचते हुए किसी तरह अपने कुञ्जभवन में ले गया। मैं घर लौटने के लिए व्यग्र हो रहा था, क्योंकि घर छोड़े एक महीना हो गया था। बकरे को खींचकर घर ले जाने में विलम्ब होता, इसलिए उसे कुञ्जभवन में ही बाँध रक्खा।

बहुत दिनों के बाद घर लौटकर बिछौने पर सोने से जो आराम और सुख मिला उसका वर्णन नहीं हो सकता। चिर-वियोग के बाद प्रिय-सम्मिलन का सुख और परदेशी को

स्वदेश लौटने का सुख भी इस सुख के आगे तुच्छ है। मैंने इस निरुद्देश यात्रा में जो कुछ सुख का अनुभव किया था उससे कहीं बढ़कर सुख घर आने पर मिला। इससे मैंने सङ्कल्प किया कि अब से कभी अधिक दूर न जाऊँगा।

मैंने घर आकर एक सप्ताह विश्राम किया। इधर कई दिनों तक मैं तोते के लिए एक पिंजरा बनाता रहा। कुञ्जभवन में बँधे हुए बकरी के बच्चे की बात मुझे एकाएक स्मरण हो आई। मैं उसे घर ले आने की इच्छा से रवाना हुआ। वहाँ जाकर देखा, वह मारे भूख-प्यास के अधमरा सा हो गया है। मैंने पेड़ से हरी हरी पत्तियाँ तोड़कर उसे खिलाई। वह भूख से ऐसा व्याकुल था कि खाने के लोभ से पालतू कुत्ते की भाँति आपही मेरे पीछे पीछे आने लगा। मेरे हाथ से दाना-घास पाकर वह खूब हिल गया। मेरे साथ वह सखा का सा व्यवहार करने लगा। मैं भी उसे जी से प्यार करने लगा।

फ़सल

इस द्वीप में मेरा तीसरा साल आरम्भ हुआ। प्रथम वर्ष की तरह दूसरे साल का वृत्तान्त यद्यपि मैं सविस्तर वर्णन नहीं करता तो भी पाठकों ने समझ लिया होगा कि मैं आलसी बनकर बैठ न रहा था। शिकार खेलना, घर बनाना, खाद्य-सामग्री तथा आश्रम के उपयुक्त वस्तुओं का संग्रह करना

इत्यादि सब काम मुझी को करना पड़ता था। उपकरण न होने से सीधा काम भी मेरे लिए परिश्रमसाध्य और समय-सापेक्ष हो जाता था।

मैं इस द्वीप में उतरने की तिथि तीसवीं सितम्बर को बराबर, पर्व दिन की भाँति पवित्र मानकर, उत्सव मनाता था। पहले जब दुःख के भार से मेरा मन व्याकुल हो उठता था तब मैं रोकर सान्त्वना की खोज करने लग जाता था, किन्तु अब और तरह की सान्त्वना को न खोजकर बाइबिल पढ़ता हूँ। एक दिन मेरा मन बड़ा ही उदास था। मैं सबेरे बाइबिल लेकर पढ़ने बैठा। पन्ना उलटाने के साथ पहले ही इस वाक्य पर दृष्टि पड़ी—ईश्वर का कथन है "मैं अपने भक्तों को कभी नहीं छोड़ता, किसी भी अवस्था में नहीं।" अहा, कैसा चमत्कृत वाक्य है, कैसी मधुमयी वाणी है! मानो स्वयं भगवान् मुझको सान्त्वना देकर यह बात प्रत्यक्ष रूप से कह रहे हैं। तो अब भय क्या? मैं भी उसी जगत्पिता का एक पुत्र हूँ।

इसी प्रकार काम करते और सोचते विचारते हेमन्तकाल उपस्थित हुआ। अब मेरी धान और जौ की फ़सल के पकने का समय आया। धान के पौदे ख़ूब हरे भरे थे किन्तु मैंने देखा कि धान के विनाशक शत्रुओं से मेरा सर्वनाश होने की सम्भावना है। बकरे और वे जङ्गली जानवर—जिनको मैंने एक क़िस्म का ख़रगोश मान लिया था—धान के पेड़ों की मधुरता चखकर नित्य रात रात भर मेरे ही खेत में पड़े रहते

थे और जहाँ पौदे ज़रा बढ़ने लगते तहाँ उन्हें नोचकर खा डालते थे। इससे उन पेड़ों को झाड़ बाँधने का अवकाश नहीं मिलता था।

इन दुष्ट जन्तुओं से सस्यरक्षा का एकमात्र उपाय बाड़ी लगाना था। बड़ी शीघ्रता से काम करने पर भी उस छोटे से खेत को घेरने में मुझको कोई तीन सप्ताह लगे।

पशुओं के उपद्रव से तो छुटकारा मिला, पर अब पक्षियों ने उत्पात मचाना शुरू किया। धान में बाल निकलते ही भाँति भाँति के पक्षी मेरा सर्वनाश करने के लिए अवसर पाकर खेत में आने लगे। ज्योंही मैं खेत में पहुँचता था त्योंही वे सब के सब उड़कर इधर उधर पेड़ों पर जा बैठते थे और मेरे वहाँ से चले जाने की प्रतीक्षा करते थे। खेत में जाकर मैंने देखा कि इन पक्षियों ने धान के बहुत से पौधों को नष्ट कर डाला है। किन्तु अब भी कुछ समय था। क्योंकि सब धान पके नहीं थे। जिस तरह होगा बचे हुए धान की रक्षा करनी ही होगी, नहीं तो ये सस्य-घातक पक्षी धान को नि:शेष करके मुझे अन्न के बिना मार ही डालेंगे।

मैं खेत से कुछ ही दूर गया हूँगा कि वे सब पक्षी साकांक्ष दृष्टि से देखने लगे कि मैं गया कि नहीं। मेरे ज़रा आँख के ओट होते ही वे झुण्ड के झुण्ड पेड़ से उतरकर फिर खेत में गिरने लगे। मैं, सबके उतर आने तक ठहर न सका। मुझे अत्यन्त क्रोध चढ़ आया। बड़ी तेज़ी से घेरे के पास जाकर

मैंने उन चिड़ियों पर गोली चला दी। उनमें से तीन पक्षी मर गये और कुछ घायल हुए। मैंने उन तीनों को डोरी में बाँधकर खेत के तीन तरफ़ लटका दिया। इससे आशातीत उपकार हुआ। उन पक्षियों ने खेत में आना तो छोड़ा ही, साथ ही इसके जितने दिन वे तीनों मृत पक्षी टँगे रहे उतने दिन उन्होंने उस तरफ़ आने का नाम तक नहीं लिया।

दिसम्बर के आख़ीर में फ़सल अच्छी तरह पक गई। काटने का समय आ पहुँचा। किन्तु उसे काटें कैसे? एक हँसुए की आवश्यकता थी। जहाज़ से जो ज़ंग लगी हुई तलवार लाया था, उसको हँसुए की तरह टेढ़ा कर लिया। मेरा खेत ही कितना था और काटनेवाला भी मैं अकेला ही था। किसी तरह उसी अपने बनाये हँसुए से काम निकल गया। धान की बालें काटकर टोकरे में भरीं। पेड़ों को खेत में ही छोड़ दिया, लेकर क्या करता। धान की बालें घर पर उठा लाया और लाठी से पीटकर उनके दाने छुड़ा लिये।

मेरे आनन्द और उत्साह की सीमा न रही। ईश्वर की कृपा होगी तो समय पाकर अब मेरे आहार का अभाव मिट जायगा। किन्तु इतने पर भी मेरी असुविधा का अन्त न था। मैं न जानता था कि किस तरह जौ पीसकर उसका आटा निकाला जाता है, आटा पिसने पर किस तरह वह छाना जाता है, छान लेने पर किस तरह उसकी रोटी बनती है और किस तरह सेंकी जाती है। कैसे क्या होगा, इसकी चिन्ता

छोड़कर मैंने इस दफ़े की सारी फ़सल बीज के लिए रख छोड़ी और बीज बोने के समय से पहले अपने खाने-पीने की सामग्री सञ्चय करने में जुट गया।

एक साधारण रोटी पकाने के लिए कितनी सामान्य सामान्य वस्तुओं की आवश्यकता होती है, इस पर प्रायः बहुत लोग ध्यान नहीं देते। एक तो मेरे रहने का ठिकाना नहीं, दूसरे कोई संगी साथी भी नहीं। खेती करने का कोई सामान नहीं। मेरे पास न हल है न बैल; न कुदाल है न खनती। काठ का कुदाल जो बनाया था वह ख़राब हो गया तो भी उससे किसी किसी तरह काम चलाया। दूसरी दिक्क़त यह थी कि बीज बोने के बाद हिगाने की ज़रूरत थी। उसके लिए हेंगा (लकड़ी का भारी लम्बा तख़्ता) चाहिए। मेरे पास वह नहीं था। मैं एक पेड़ की मोटी सी डाल काटकर ले आया और उसे घसीटता हुआ खेत में इधर उधर घूमा। उसे घसीटकर ले चलने से खेत में जो चिह्न पड़ गया उसी से काम चल गया। फ़सल उगने पर फिर उसकी हिफ़ाज़त के लिए बहुत कुछ करना पड़ा। बाड़ लगाना, पकने पर काटना, अनाज अलग करना आदि कितने ही काम करने पड़े। इसके बाद आटा पीसने के लिए जाँता, छानने के लिए चलनी आदि की आवश्यकता हुई। इसके बाद आटा माँड़कर रोटी बनाने और सेंकने का नम्बर था। ये सब काम किसी तरह मुझको करने ही पड़ते थे।

इस दफ़े बीज बोने के लिए बहुत लम्बा चौड़ा खेत चाहिए। इसलिए कुछ ज़्यादा खेत ठीक करना होगा। यह सोचकर मैंने सात आठ दिन में एक और काठ का कुदाल बना लिया। पर यह भारी और कुछ भद्दा बना। इसके चलाने में मुझे बड़ी मेहनत पड़ती थी। मैंने अपने घर के बहुत ही नज़दीक दो क्यारी खेत जोत-गोड़कर ठीक किया। इसके बाद उन पेड़ों की डालों से खेत को चारों ओर से अच्छी तरह घेर दिया जिनकी डाल रोपने से लग जाती है। इस समय बरसात शुरू हो गई थी, इसलिए जभी कुछ फुरसत मिल जाती थी तभी बाड़ी लगा देता था। इसमें मुझे तीन महीने लगे। वृष्टि बन्द होने पर मैं घेरा बनाता था और वृष्टि होने के समय घर में बैठकर तोते को पढ़ाता था। मैंने तोते का नाम रक्खा था "आत्माराम"। वह बड़े स्पष्ट स्वर में अपना नाम लेकर पुकारता था—"आत्माराम"। इस द्वीप में आकर मैंने अपनी बोली के सिवा यही पहले पहल दूसरे का कण्ठ-स्वर सुना। अहा! सुनने में क्या ही मधुर लगता था।

नौका-गठन

जब मैं इन झमेलों में उलझा हुआ था तब भी मेरा मन इस जनशून्य द्वीप से छुटकारा पाने के लिए चिन्तित रहा करता था। मैंने इस द्वीप के अन्य भाग से जब से दूर से स्थल-

चिह्न देखा था तब से मेरा जी वहाँ जाने के लिए आतुर हो रहा था। यदि मैं महादेश के किसी अंश में पहुँच जाऊँगा तो घूमते फिरते किसी न किसी दिन स्वदेश का मुँह देख सकूँगा, अथवा जनसमूह में पहुँच जाने से भी कोई न कोई उपाय होगा। मैं मन में यही मन के लड्डू खा रहा था। किन्तु उस समय यह चिन्ता मेरे मन में एक बार भी उदित न होती थी कि यदि कहीं असभ्य जङ्गली मनुष्यों या हिंस्र पशुओं के बीच पहुँच गया तो मेरी क्या दुर्दशा होगी—वे दुष्ट जन्तु मुझे किस निर्दयता के साथ मारकर खा जायँगे। मेरे चित्त को तो एक यही चिन्ता घेरे रहती थी कि इस द्वीप से कब अन्यत्र जाऊँगा।

इस समय उस एकजूरी लड़के की और आफ्रिका के उपकूल में जिसने बचाया था उस लम्बे जहाज़ की बात याद आने लगी। किन्तु वह तो अब मिलने का नहीं। मैं उस डोंगी की खोज में गया जो हम लोगों के जहाज़ के साथ आई थी; जिस पर सवार होकर हम लोग डूबे थे और जो समुद्र की लहर से ऊपर आकर सूखे में उलट पड़ी थी। वह जहाँ की तहाँ पड़ी थी किन्तु समुद्र की तरङ्ग और वायु के धक्के खाकर वह उलट गई थी। उसके आस पास चारों ओर बालू जम गई थी और पानी वहाँ से बहुत दूर हट गया था। नाव ज्यों की त्यों थी, कहीं टूटी फूटी न थी। यदि कोई सहायता करनेवाला होता तो मैं ठेल ठालकर किसी तरह नाव को पानी

में ले जाता। इससे मेरा बहुत काम चलता। मैं सहज ही मंज़िल को जा सकता।

यद्यपि मैं जानता था कि नाव को सीधा करना मेरे सामर्थ्य से बाहर की बात है तथापि असाध्य साधन होता है या नहीं—यह देखने के लिए मैं जङ्गल से लकड़ी काटकर ले आया और उसकी ठेक लगाकर नाव को उलटाने की चेष्टा करने लगा। मेरे शरीर में जितना बल था उसे लगा करके मैं थक गया, पर नाव को हिला तक न सका। इसके बाद नाव के नीचे की बालू खोदकर उसे उलटाने की चेष्टा करने लगा। तीन चार सप्ताह तक मैंने जान लड़ाकर परिश्रम किया, बड़ी बड़ी चेष्टाएँ कीं, पर सभी व्यर्थ हुईं। जब किसी तरह उसे उलटा न सका तब उस नाव की आशा छोड़ दी। किन्तु इससे कोई यह न समझे कि मैंने इसके साथ ही समुद्र पार होने की आशा भी छोड़ दी। नहीं, उपाय जितना ही कठिन प्रतीत होने लगा मेरा आग्रह भी उतना ही बढ़ने लगा।

अब मैं यह सोचने लगा कि क्या मैं स्वयं एक नई डोंगी नहीं बना सकता? यह सोचकर मैंने एक पेड़ काट डाला। यह पेड़ ख़ूब मोटा और लम्बा था। उसके नीचे का हिस्सा एक सा सीधा, बाईस फ़ुट से भी कुछ ज़्यादा लम्बा, था। उसकी जड़ का व्यास पाँच फ़ुट दस इञ्च और बाईस फ़ुट के ऊपर का व्यास चार फ़ुट ग्यारह इञ्च था। उसके ऊपर का हिस्सा कुछ पतला सा होकर शाखा-प्रशाखाओं में विभक्त हो

गया था। पेड़ को मैंने किसी तरह काटकर गिरा दिया। इसकी जड़ काटने में बीस दिन लगे और चौदह दिन इसके ऊपर का हिस्सा काटने और डाल-पात छाँटने में लगे। इसके बाद उस तने को नाव के आकार में गढ़ने में पूरा एक महीना लगा। तदनन्तर रुखानी और बसूले से छील छालकर बड़े परिश्रम से एक सुन्दर डोंगी तैयार कर ली। यह इतनी बड़ी थी कि इसमें छब्बीस आदमी ख़ुशी से बैठकर समुद्र-यात्रा कर सकते थे। इसलिए यह नौका मुझ अकेले को और मेरे माल असबाब को ढोकर ले जाने के लिए बहुत ही उपयुक्त हुई।

नाव बन गई, पर उसे जल में ले जाने का उपाय क्या है? मेरे सब परिश्रम व्यर्थ हुए। नौका पानी से क़रीब सौ गज़ के फ़ासले पर थी। मैंने नाव को लुढ़काकर ले जाने के लिए मिट्टी खोदकर ज़मीन को ढलुआ बनाया। मेरी यह युक्ति भी ख़ाली गई। बहुत चेष्टा करने पर भी नाव अपनी जगह से न हिली। तब मैंने विचार किया कि समुद्र से नाला खादकर नाव के पास तक पानी ले आऊँगा, इससे नाव सहज ही पानी पर तैरने लगेगी। समुद्र से नाव तक नाले की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई के परिमाण का हिसाब लगा करके देखा कि उतना बड़ा नाला खोदने में मुझ अकेले को कम से कम दस-बारह वर्ष लगेंगे। तब एकदम हतोत्साह होकर मैंने इस सङ्कल्प को त्याग दिया। इस नाव के बनाने से जो मेरे मन में पश्चात्ताप हुआ उसका वर्णन नहीं हो सकता। हाँ,

इससे मैंने एक शिक्षा ज़रूर पाई—आगे पीछे का बिना विचार किये किसी काम में हाथ डालना ठीक नहीं।

इस समय मेरे एकान्तवास का चौथा साल पूरा हुआ। यहाँ अपने आने की प्रथम तिथि को पूर्ववत् पर्व की भाँति मानकर उत्सव मनाया। ईश्वर की कृपा से मैं इस समय सांसारिक विषय सम्बन्ध से बहुत कुछ विरक्त हो गया था; मानो मैं संसार के सम्पर्क से विमुक्त होकर सदेह परलोकवास कर रहा हूँ। यहाँ मैं ही एक निष्कण्टक बादशाह था। अब मुझे किसी वस्तु की कमी के कारण कोई कष्ट न था। कोई व्यर्थ की वासना अब मन को पीड़ित नहीं करती थी। इसके सिवा इस एकाधिप-सम्पत्ति-सम्भोग में लेशमात्र अहङ्कार न था। यहाँ मैं ढेर का ढेर अन्न उपजा सकता था; पके अंगूरों से घर भर सकता था। अपनी इच्छा के अनुसार जितने चाहिएँ उतने कछुए, बकरे, भाँति भाँति के पक्षी और लकड़ियाँ ले आ सकता था। किन्तु इतना लेकर मैं करता क्या? एक व्यक्ति के लिए जितना यथेष्ट हो सकता है उतना ही मैं लेता था। अधिक लेकर क्या करता? इस समय अपनी अवस्था की बात सोचकर मुझे थोड़ा सा यही ज्ञान हुआ कि वस्तुओं का मूल्य आवश्यकता के ही अनुसार होता है। उत्तम से उत्तम पदार्थ तभी तक मूल्यवान् गिना जाता है जब तक लोग उसे आवश्यक समझते हैं। आवश्यकता न रहने पर उसका कुछ मोल नहीं। संसार का सर्वप्रधान लोभी

अथवा कृपण मेरी अवस्था में पड़कर एक अच्छा दानी बन जाता, इसमें सन्देह नहीं। मेरे पास कुछ रुपया था, यह पहले ही पाठकों को मालूम हो चुका है। मैं इस समय मटर, सेम, मूली, शलगम प्रभृति तरकारियों के एक एक बीज के लिए या एक बोतल स्याही के लिए मुट्ठी भर रुपया देने को प्रस्तुत हूँ। जिस रुपये के लिए संसार के कितने ही लोग दिन-रात लालायित रहते हैं वह रुपया मेरे नज़दीक इस समय कोई चीज़ नहीं। इन बातों को सोच विचारकर मेरा मन ईश्वर के प्रति दृढ़ भक्ति से आर्द्र हो उठा। मैंने विशुद्ध भाव से ईश्वर की उपासना की और उन्हें अनेकानेक धन्यवाद दिये। मैं इस समय निश्चिन्त मन से अपनी अवस्था का सुविचार कर प्रसन्न था।

वस्त्रों की चिन्ता

मेरी स्याही क्रमशः घटने लगी और मैं थोड़ा थोड़ा पानी मिलाकर उसे बढ़ाने लगा। आख़िर वह ऐसी फीकी हो गई कि काग़ज़ के ऊपर उसका कोई चिह्न ही न देख पड़ता था। जब तक काम चलाने योग्य कुछ स्याही थी तब तक मैं अपने जीवन की विशेष विशेष घटनाएँ लिख लिया करता था।

एक दिन मैं अपनी डायरी की आलोचना करते करते घटनाओं की एकता देखकर अत्यन्त विस्मित हुआ। ३० वीं सितम्बर को मेरा जन्म हुआ था और इसी तारीख़ को मेरा

यहाँ का एकान्तवास भी आरम्भ हुआ। जन्म और विजन-वास का आरम्भ एक ही दिन! जिस तारीख़ को मैं अपना देश का घर छोड़ करके भागा, उसी तारीख़ को मैं दास रूप में बन्दी होकर शैली टापू में गया था। जिस तारीख़ को मैं यारमाउथ मुहाने में जहाज़ डूबने से बाल बाल बचा, उसी तारीख़ को मैं शैली से भागा।

स्याही के साथ रोटी का भी अभाव हो गया। यद्यपि मैंने बहुत अन्दाज़ से ख़र्च किया तो भी जहाज़ पर से लाई हुई सब रोटियाँ ख़तम हो गईं। स्वयं अपने हाथ से रोटी बनाने के पहले प्राय: एक वर्ष तक मैंने रोटी नहीं खाई। किन्तु भगवान् की दया से वह कमी भी बड़े विचित्र ढङ्ग से दूर हो गई।

मेरे पहनने के कपड़े भी अब धीरे धीरे फटने लगे। एक भी सूती कुर्ता मेरे पास नया न था; सभी पुराने और फटे थे। नाविकों के सन्दूक़ में जो छींट के कई कुर्त्ते मिले थे उन्हीं को यत्नपूर्वक पूँजी की तरह सँभालकर रक्खा था; कारण यह कि किसी किसी समय सूती कपड़े को छोड़कर दूसरा कपड़ा पहना ही न जा सकता था। यद्यपि यह देश ग्रीष्मप्रधान है, किसी कपड़े की उतनी आवश्यकता नहीं, तथापि मैं नङ्गा रहना हर्गिज़ पसन्द न करता था। मैं यहाँ एकाकी था फिर भी अपने शरीर की मुझे आप ही लज्जा होती थी। इसके अतिरिक्त यहाँ धूप इतनी कड़ी पड़ती थी कि खुला बदन रहने से शरीर में फफोले पड़ जाते थे। कुर्त्ता पहने रहने से

उतनी गरमी नहीं जान पड़ती थी बल्कि कुर्त्ते के भीतर हवा जाने से ठण्ढक मालूम होती थी। मुझे एक टोपी की भी ज़रूरत थी। ख़ाली सिर धूप में फिरने से सिर में दर्द होने लगता था।

यह सब सोच-विचारकर मैंने एक तरकीब से काम लिया। अपने जिन पुराने कपड़ों को अकारथ समझकर मैंने त्याग दिया था उन्हें जोड़-जाड़कर कुछ बना सकता हूँ या नहीं, इसकी जाँच कर लेना मैंने उचित समझा। मैं रफ़ू करने में तो अनाड़ी था ही, दर्ज़ी के काम में और भी अनाड़ी था। इसलिए उन कपड़ों से जो कुछ बनाया वह एक विचित्र ढँग की वस्तु हुई। फिर भी वह मेरे काम चलाने योग्य हो गई।

मैंने अब तक जितने पशुओं को मारा था उनके चमड़ों को फेंक न दिया था, बल्कि उन्हें धूप में अच्छी तरह सुखाकर एक लकड़ी में लटकाकर रख दिया था। उनमें से कितने ही तो धूप में सूखकर ऐसे सख़्त हो गये थे कि उनसे कोई काम लेना कठिन था। पर उनमें कई एक मुलायम भी थे। उसी चमड़े की पहले मैंने एक टोपी बनाई। चमड़े का चिकना हिस्सा नीचे रहने दिया और ऊन को ऊपर कर दिया। टोपी बनाने में सफलता प्राप्त करके मैंने उस चमड़े की कुछ पोशाकें भी बनानी चाहीं। कुछ दिन में ख़ूब अच्छी ढीली ढाली कुछ पोशाकें तैयार कर लीं। उनकी काट छाँट बहुत भद्दी थी, यह मुझे स्वीकार करना ही पड़ेगा। जो हो, उनसे मेरा काम मज़े में चल जाता था। वृष्टि में भी वे न भीगती

थीं। ऊन पर से होकर पानी तुरन्त नीचे गिर पड़ता था। वे मज़े में बरसाती कपड़ों का काम देती थीं।

इस प्रकार मैं बड़े आराम से अपने को ईश्वर की कृपा के ऊपर निर्भर कर एकान्तवास करने लगा।

नौका को पानी में ले जाना

इस प्रकार एकान्तवास करते मुझे पाँच वर्ष बीत गये। खेती करना, अंगूर सुखाकर रखना, शिकार खेलना आदि नियमित कामों को छोड़कर मैं इस बीच में कोई विशेष काम न कर सका। यदि अपने नियमित नित्यकर्म में कुछ विशेषता थी तो यही कि मैं एक डोंगी बना रहा था। अज्ञानी की भाँति मैंने जहाँ पहली डोंगी बनाई थी वहाँ न मैं नाली खोदकर पानी ला सका और न डोंगी को ही लुढ़काकर पानी तक ले जा सका। वह जहाँ बनाई गई वहीं, मेरी अविवेचना की स्मारक होकर, पड़ी रही। इसके बाद मैं ऐसी जगह एक पेड़ की तलाश करने लगा, जहाँ सहज ही नाला खोदकर पानी ले जा सकूँ। इधर उधर खोजते खोजते समुद्र-तट से आध मील पर नीची जगह में नाव के उपयुक्त एक पेड़ मिल गया। उसे काटकर बड़े कष्ट से मैंने फिर एक डोंगी बनाई। अब रही नाला खोदकर लाने की बात। सो मैंने छः फ़ुट चौड़ा और चार फ़ुट गहरा नाला खोदना शुरू कर दिया।

आध मील नाला खोदकर पानी लाने में मुझे दो वर्ष लगे। किन्तु समुद्र में नाव को उतारकर ले जाने के उत्साह में इस कठिन परिश्रम को मैंने कुछ भी न समझा। आख़िर मेरी डोंगी पानी में बह चली।

नौका पानी में तैरने लगी सही, किन्तु इससे मेरा मतलब सिद्ध न हुआ। यह मेरे मतलब के लायक़ न थी। चालीस मील समुद्र पार करके इस डोंगी के सहारे मुझे दूसरे देश में जाने का साहस नहीं होता था इसलिए इस इरादे को एक प्रकार से छोड़ दिया। अस्तु, अभी नाव मिल गई है, एक बार इस द्वीप को चारों ओर परिक्रमा करके देखूँगा। मेरे राज्य में कहाँ क्या है, कहाँ तक उसकी सीमा है, इसे भी देखूँगा।

इसके लिए मैं नाव पर आवश्यक वस्तुओं का आयोजन करने लगा। पहले उस पर एक मस्तूल लगाया। जहाज़ के पाल के टुकड़े से एक पाल तैयार किया। नाव के अगले हिस्से में और अधःप्रदेश में खाने-पीने की चीज़ें रखने के लिए दो बक्स बनाये। नाव के ऊपर छपरी तो थी नहीं, इसलिए छतरी ही को तानकर छपरी की तरह खड़ा कर दिया।

इस प्रकार सब सामान दुरुस्त करके मैं नाव को समुद्र के किनारे किनारे ले चला। समुद्र में दूर तक जाने का साहस न होता था। एक दिन अपने राज्य की सीमा देखने की इच्छा हुई। मैंने खाने-पीने की सब सामग्री नाव में रख ली। दो दर्जन जौ की रोटियाँ, एक हाँड़ी भर भूने चावल,

(आजकल मैं इसी खाद्य को ज़्यादा पसन्द करता था,) एक घड़ा पानी, बन्दूक़ और बिछौने के लिए दो एक कपड़े ले लिये।

मैं अपने राजत्व या द्वीपान्तर-वास के छठे साल अपनी काष्ठअङ्कित तिथि-गणना के अनुसार छठी नवम्बर को द्वीप देखने के लिए नाव पर सवार हुआ। जितना रास्ता चलने की आशा की थी उससे कहीं अधिक मार्ग मुझको चलना पड़ा। द्वीप बहुत बड़ा न था। किन्तु द्वीप के पूरब ओर समुद्र के भीतर दो मील तक पहाड़ और पत्थर की बड़ी बड़ी चट्टानें थीं जिनमें कितनी ही पानी के ऊपर निकली थीं और कितनी ही डूबी थीं। उसके सामने समुद्र की ओर आध मील चौड़ा बालू का मैदान था। इतनी दूर चक्कर लगाकर जाने में मुझे बहुत समय लगा।

पहले, मार्ग की यह अवस्था देखकर मैं आगे बढ़ना नहीं चाहता था—कौन जाने, कितनी दूर तक समुद्र की ओर जाना होगा। कहीं गया भी तो फिर लौटूँगा कैसे ? तब मैं लङ्गर डालकर सोचने लगा। (मैंने जहाज़ के टूटे फूटे लोहों से एक साधारण लङ्गर भी बना लिया था।) मैंने डोंगी से उतरकर सूखे रास्ते से पहाड़ के ऊपर चढ़कर बालू के मैदान की दौड़ देखी। देखकर मुझे साहस हुआ। मैं फिर वहाँ से रवाना हुआ।

थोड़ी दूर जाते न जाते मेरी नौका एक प्रखर प्रवाह में जा पड़ी। यद्यपि मेरी नाव किनारे के बहुत ही समीप थी तथापि मैं ज़ोर करते करते थक गया पर उसको किनारे तक

न ला सका। मैंने देखा कि मेरी बाईं ओर एक भँवर था, उसी का उलटा स्रोत मुझे ठेलकर सुमुद्र की ओर लिये जा रहा था। मैंने नाव खेने का लग्गा रख दिया। वह अपने मन से उस तीक्ष्ण धार में निकल चली। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो बैठ रहा। इस बार मैंने अपने को गया ही समझा। यदि डूबने से बच भी जाऊँगा तो भी महासमुद्र में पड़कर बे-दाना-पानी के मर मिटूँगा। साथ में जो कुछ खाने-पीने की चीज़ें हैं वे कै दिन चलेंगी? इन बातों को सोचकर मैं उसी निर्जन टापू के लिए व्याकुल हो उठा। नाभिकुण्ड से बार बार यह शब्द प्रतिध्वनित होने लगा, 'हाय! मैं कहाँ जा रहा हूँ? न मालूम किस किनारे पर मेरी यह छोटी सी नौका लगेगी?' किनारे से मैं बहुत दूर जा पड़ा। साथ में कम्पास (दिङ्निर्णायक यन्त्र) भी न था। यदि रात हो जाय या कुहरा फैल जाय तो दिशा का भी ज्ञान न कर सकूँगा। भाग्यक्रम से दो-पहर पीछे प्रतिकूल हवा बहने लगी। मैंने पाल गिरा दिया। कुछ दूर जाकर देखा कि स्रोत भी उलटा बह रहा है—वह उसी भँवर का परवर्तित स्रोत था। मैंने बड़ी ख़ुशी से उस सोते में नाव छोड़ दी। जिन लोगों ने फाँसी की तख़्ती पर खड़े होकर मुक्ति-संवाद सुना होगा या जो बधिक के हाथ की चमचमाती हुई नङ्गी तलवार के वार से बच गये होंगे वही मेरे उस समय के आनन्द का अनुभव कर सकेंगे। वही समझेंगे कि उस समय मुझे कितना हर्ष हुआ होगा।

भँवर के वेग में पड़कर मैं द्वीप के जिस ओर से रवाना हुआ था, फिरती बार उसकी दूसरी ओर जा पड़ा। अन्दाज़न् पाँच बजे दिन को मैंने बड़े कष्ट से नाव को खेकर किनारे लगाया।

मैंने ज़मीन में पाँव रखते ही सबसे पहले घुटने टेककर अपने प्राणत्राण के निमित्त परमेश्वर को धन्यवाद दिया। मैंने अब निश्चय किया कि मुझको इसी टापू में रहना होगा, यही ईश्वर को मञ्ज़ूर है; किन्तु मैं उसको न मानकर अन्यत्र जाने को चेष्टा करता हूँ तो भी वे मेरे इस विरुद्धाचरण को बार बार क्षमा करते हैं। इस कारण, उनसे बढ़कर दयालु कौन होगा! मैं ऐसा थका था कि पेड़ के नीचे लेटते ही सो गया।

जब मैं जागा तब मन में यह भावना हुई कि किस रास्ते से घर लौट चलना चाहिए? जिस रास्ते से आया हूँ उसी रास्ते से? उस रास्ते से जाने का तो साहस नहीं होता। जिस राह से आया हूँ उसके विपरीत मार्ग से? कौन जाने, उस ओर फिर मेरे लिए कोई विपद प्रतीक्षा कर रही हो। आख़िर मैंने यही निश्चय किया कि कोई मुहाना मिल जाय तो नाव को वहाँ बाँधकर पैदल ही घर जाऊँगा।

दूसरे दिन सबेरे मैंने कोई तीन मील रास्ता किनारे किनारे चलकर एक छोटी नदी का मुहाना पाया। नाव को उसी मुहाने में ले जाकर बाँध दिया।

ऊपर आकर मैंने देखा कि एक बार पैदल घूमते घूमते मैं जिस ओर आया था उसी तरफ़ आ गया हूँ। इससे चित्त में

बड़ा ही विश्राम मिला। मैं नाव पर से केवल अपनी छतरी और बन्दूक उतारकर ले आया और वहाँ से अपने घर की ओर रवाना हुआ। साँझ को मैं अपने कुञ्जभवन में जा पहुँचा।

अपरिचित पद-चिह्न

एक दिन मैं दोपहर को अपनी नाव की ओर जा रहा था। तब समुद्र के किनारे बालू के ऊपर किसी आदमी के पैर का चिह्न देखकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ। पदचिह्न देखते ही मैं वज्राहत की तरह स्तब्ध होकर खड़ा हो रहा। चारों ओर दृष्टि उठाकर देखा, कान लगाकर सुना, परन्तु न कहीं किसी को देखा और न किसी को कुछ बोलते सुना। तब ऊँची जगह चढ़कर देखा; समुद्र के किनारे किनारे इधर उधर घूमकर पता लगाया किन्तु सिवा उस एकमात्र पदचिह्न के और कहीं कुछ देख न पड़ा। फिर मैंने सोचा, वह चिह्न मेरे मन का भ्रम तो नहीं है, इसलिए मैं उस चिह्न को फिर अच्छी तरह देखने गया। देखा, भ्रम नहीं, वह सचमुच मनुष्य के पैर का चिह्न था। पैर की उँगलियाँ, तलुवा और एँड़ी आदि प्रत्येक अंश का स्पष्ट चिह्न विद्यमान है। मैं किसी तरह निर्णय न कर सका कि यह पद-चिह्न यहाँ कैसे पड़ा। मैं हतबुद्धि हो चिन्ताकुल चित्त से अपने किले में भाग आया। मैं उतनी दूर कैसे आया, चलकर या उड़कर?—उस समय इसका मुझे कुछ ज्ञान न था। दो तीन

डग आगे चलता था, फिर पीछे की ओर घूमकर देखता था, कि कोई आ तो नहीं रहा है। प्रत्येक पेड़ पौधे के पास जाते ही मेरा कलेजा काँप उठता था। दूर से पेड़ के तने को देख-कर मुझे मनुष्य का भ्रम होता था।

जब मैं अपने क़िले के भीतर पहुँचा तब मेरी बुद्धि ठिकाने आई। मैं किस रास्ते से गया था और किस रास्ते लौटकर क़िले के भीतर पहुँचा—यह कुछ मुझे याद न था। मैं भय से ऐसा घबरा गया था कि मुझे तन मन की भी कुछ सुध न रही।

उस रात को मुझे नींद नहीं आई। मैं रात भर भय का काल्पनिक चित्र देखता रहा। अद्भुत हास्यजनक चिन्ता तरह तरह से चित्त को मथित करने लगी। आख़िर मैं यह सोच-कर निश्चिन्त हुआ कि किसी असभ्य जाति की डोंगी शायद तीक्ष्ण धार में पड़कर या हवा के झोंके से किनारे पर आ लगी होगी; उसके बाद वे लोग इस निर्जन द्वीप के स्थलमार्ग से चले गये होंगे।

इस भावना का मन में उदय होते ही मैंने भगवान् को धन्यवाद दिया कि कुशल हुई, मैं उस समय वहाँ उपस्थित न था; और यह भी अच्छा ही हुआ कि उन लोगों ने मेरी नौका नहीं देखी, देखते तो वे इस द्वीप में मनुष्य की बस्ती का अनुमान करके ज़रूर मुझे ढूँढ़ते। अब नौका ही मेरी दुर्भावना का कारण हो उठी। असभ्य लोग यदि नौका देख-

कर मेरा पता लगा लें तो वे मुझे मारकर खा ही डालेंगे। यदि उन्हें मेरा पता न भी लगेगा तो भी वे मेरी खेती-बारी को नष्ट करके और बकरों को भगाकर चले जायँगे। तब मैं खाने के बिना ही मरूँगा।

अब मेरे मन में चैतन्य हुआ। अब तक मैं साल भर के ख़र्चे लायक़ अनाज उपजाकर ही यथेष्ट समझता था। भविष्य के लिए कुछ भी सञ्चय नहीं रखता था, मानो मेरी ज़िन्दगी में कभी दुर्भिक्ष का समय आवेगा ही नहीं। मैंने अपनी इस मूर्खता के लिए अपने को धिक्कार दिया और भविष्य में अब दो तीन साल के लिए खाद्य-सामग्री सञ्चय करने का सङ्कल्प किया।

ऐसा ही सोच विचार करते कई सप्ताह बीत गये। किसी तरह वह सुन्दर उपदेश चित्त से न हटता था। एक दिन एकाएक मेरे मन में यह भावना हुई कि वह पद-चिह्न मेरा ही तो न था? जब मैं नाव से उतरा था तब का तो चिह्न नहीं है? इस बात का ख़याल होते ही मेरा मन प्रफुल्ल हो उठा। भय दूर हुआ। मैंने अकारण इतना क्लेश पाया। अपनी इस मूर्खता पर मुझे बड़ी हँसी आई। कितने ही गँवार आदमी जैसे अपनी छाया को देखकर भूत के भय से अभिभूत होते हैं उसी तरह मैंने अपना पद-चिह्न देखकर भय से इतना क्लेश पाया। मारे हँसी के मैं लोट-पोट हो गया। कितने ही लोग भ्रम में पड़कर ऐसे ही भाँति भाँति के क्लेश सहते हैं।

इस नई भावना से साहस पाकर तीन दिन बाद मैं फिर बाहर निकला। घर में कुछ खाने की वस्तु भी न थी, और इस बात का स्मरण हुआ कि तीन दिन से बकरियों का दूध भी नहीं दुहा गया है। न मालूम उससे उन्हें कितना कष्ट होता होगा। सम्भव है, कितनी ही बकरियों का दूध एकदम सूख गया हो। सब सोच विचारकर मैं क़िले से बाहर निकला। बाहर तो निकला पर एकदम निडर नहीं हुआ। कुछ दूर आगे जाता और फिर पीछे की ओर ताकता था। किसी किसी दफ़े पीठ पर की टोकरी फेंककर घर भाग जाने को जी चाहता था।

इस प्रकार डरता हुआ दो-तीन दिन तक घर से बाहर आया गया। डरने की जब कोई जगह न देखी तब मन में कुछ विशेष साहस हुआ और उस पदचिह्न को देखने के लिए फिर समुद्र-तट पर गया। जाकर देखा, जहाँ पैर का चिह्न था वहाँ पर ख़ाली पैरों मैं कभी नहीं गया था; दूसरे मेरा पैर भी उतना लम्बा न था। इससे मेरा हृदय फिर भय से काँप उठा। मैं अपने हृत्कम्प को किसी प्रकार न रोक सका। मेरा सम्पूर्ण शरीर थर-थर काँपने लगा। तब मैंने अपने मन में यही समझा कि इस द्वीप में कोई बाहर का आदमी आया है या इसी द्वीप के किसी अंश में मनुष्य का निवास है। सम्भव है, किसी दिन एकाएक किसी मनुष्य से भेंट हो जाय। अब मैं अपनी रक्षा के लिए क्या उपाय करूँ, इसका कुछ निश्चय न कर सका।

डरने से लोगों की बुद्धि लुप्त हो जाती है। पहले मन में यही आया कि घेरे को तोड़-ताड़कर बकरों को जङ्गल में भगा दूँ, खेत को खोदकर उजाड़ डालूँ और कुञ्जभवन आदि स्थान को नष्ट-भ्रष्ट कर दूँ। इससे कोई मेरा पता न पावेगा। कुछ देर के बाद खूब सोचकर देखा तो जान पड़ा कि ऐसा करने से उस विपत्ति की अपेक्षा लाख गुना अधिक विपत्ति का भय उठ खड़ा होगा। मैं वैसा कुछ न कर सका।

यह द्वीप महादेश से अधिक अन्तर पर नहीं है इसलिए यहाँ मनुष्य का आना भी असम्भव नहीं। तब जो इतने दिनों से किसी का दर्शन नहीं हुआ है यह मेरा परम सौभाग्य है। मैं इस द्वीप में पन्द्रह वर्ष से निवास कर रहा हूँ; इतने दिन बाद यह कौन सा उत्पात आ खड़ा हुआ। जो हो, यहाँ असभ्यों के आने पर छिप सकूँ, ऐसा कोई निरापद स्थान ढूँढ़ निकालना आवश्यक है।

नया आविष्कार

मैंने अपने क़िले की पीछेवाली गुफा को खोदकर बड़ा किया था, इससे मेरे क़िले के भीतर घुसने का एक छोटा सा दर्वाज़ा बन गया था। इस बेजा काम के लिए इस समय मुझे अनुताप होने लगा। उस छेद को बन्द कर देने के लिए मैंने फिर एक घेरा बनाने का सङ्कल्प किया। पहले खम्भों का

घेरा बनाया था, तदनन्तर दूसरा घेरा दरख़्तों का बनाया था। इसको बारह वर्ष हुए। उसके बाद इस समय फिर ख़ूब मज़-बूती के साथ खम्भों का अर्ध-चन्द्राकार एक तीसरा घेरा बनाया। इस घेरे के भीतर हाथ जाने लायक़ सात छेद रहने दिये। घेरे के बीच की जगह को मिट्टी से भर दिया और उसके ऊपर चल फिरकर उसे अच्छी तरह पैरों से दबा दिया। इसके अनन्तर उन सातों छेदों में अपनी सातों बन्दूक़ें रख दीं। वे कहीं गिर न पड़ें इसलिए लकड़ी की एक-एक टेक लगाकर उन्हें अच्छी तरह स्थिर कर दिया। यदि अब मेरे क़िले पर कोई आक्रमण करेगा तो मैं एक साथ दो मिनट के भीतर सात बन्दूक़ें छोड़ सकूँगा। कई महीनों के कठिन श्रम से यह सब काम सम्पन्न हुआ। इसके बाद घेरे के बाहर बहुत दूर तक पेड़ की डालें काटकर गाड़ दीं। दो वर्ष में मेरे घेरे के सामने एक उपवन सा बन गया। पाँच छः वर्ष में वह उपवन बड़े दुर्भेद्य वन के रूप में परिणत हुआ। अब उस घने जङ्गल को देखकर कोई यह न समझेगा कि इसके भीतर कोई रहता है। मैं इस समय दो सीढ़ियों के ऊपर से होकर क़िले के भीतर जाता-आता था। एक सीढ़ी बाहर जाने की और एक भीतर आने की थी। दोनों सीढ़ियों को भीतर रख लेने से सहसा कोई मेरे घर में प्रवेश करेगा, इसकी सम्भावना न थी। इस प्रकार अपनी प्राणरक्षा का, जहाँ तक मेरी बुद्धि की दौड़ थी वहाँ तक, मैंने प्रयत्न किया।

मैं केवल अपने घर को ही सुरक्षित करके निश्चिन्त न हुआ। अब मुझे अपने पालतू बकरों की चिन्ता हुई। अब मुझे शिकार का क्लेश उठाना नहीं पड़ता और न गोली-बारूद ख़र्च करनी पड़ती है। उन बकरियों से सहज ही में मेरे भोजन की सामग्री मिल जाती है। अतएव किसी तरह इन उपयोगी जन्तुओं की रक्षा करनी चाहिए।

इसके लिए मैंने दो उपाय सोच निकाले। एक तो यह कि कहीं गुफा बनाकर उसके भीतर बकरों को बन्द करके, अथवा छोटे छोटे घेरे बना करके उनमें थोड़े थोड़े बकरों को कुछ दूर दूर के फ़ासले पर, रक्खा जाय। दूसरा उपाय कुछ अच्छा जान पड़ा। यदि एक घेरे के बकरे किसी तरह खो भी जायँगे तो दूसरे घेरे के बकरे-बकरियों से उनके वंश की वृद्धि होती रहेगी।

इसके लिए मैं कई दिनों तक द्वीप के गुप्त स्थानों की खोज में घूमता रहा। एक बार पहले जिस स्थल-मार्ग से आने के समय मैं रास्ता भूलकर भटकने लग गया था वहीं, एक घने वन के भीतर, एक स्थान मेरे मन के अनुकूल मिला। ऐसे घने जङ्गल में घेरा लगाने के निमित्त मुझे विशेष कष्ट न उठाना पड़ा। इस जगह को घेरकर मैंने दो बकरों और दस बकरियों को लाकर यहाँ रक्खा और पूर्व के घेरे को भी घेरकर ख़ूब मज़बूत कर दिया।

मैं एक और जगह की तलाश करने लगा। द्वीप के पच्छिम ओर समुद्र के किनारे जाकर मैंने बहुत दूर एक नाव

की तरह कुछ देखा। उसको देखते-देखते मेरी आँखें चौंधिया गईं तथापि वह इतनी दूर थी कि ठीक ठीक निश्चय न कर सका कि वह क्या है। जहाज़ में मुझे दो चार दूरबीनें मिली थीं, पर इस समय एक भी मेरे साथ न थी। पहाड़ के ऊपर चढ़कर देखा तो भी उसका कुछ निश्चय न कर सका। तब मैंने पहाड़ से उतरकर सङ्कल्प किया कि अब बिना दूरबीन साथ में लिये बाहर न निकलूँगा। आख़िर वहाँ से आगे बढ़ा। जाते जाते मैं ऐसी जगह पहुँचा जहाँ इसके पहले कभी न गया था। वहाँ जाकर मैंने जो कुछ देखा, उससे निश्चय किया कि यहाँ मनुष्य के पैरों का चिह्न देखना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस ओर जङ्गली लोग प्रायः आते हैं। उनके पैरों के बहुत चिह्न यहाँ देख पड़े। इस कृपा के लिए मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि मैं जिधर हूँ उधर ये लोग नहीं जाते हैं।

मैंने दक्खिन और पूरब की ओर समुद्र के किनारे जाकर देखा कि मनुष्य की खोपड़ी, हाथ, पाँव और हड्डियाँ बहुतेरी इधर-उधर बिखरी पड़ी हैं। यह देखकर मेरे आश्चर्य और भय की सीमा न रही। एक जगह मैंने एक अग्निकुण्ड भी देखा। मालूम होता है, वे राक्षस उस अग्निकुण्ड के चारों ओर बैठकर मनुष्य का मांस खाया करते हैं।

यह दृश्य देखकर मैं अपनी विपदा की बात भूल गया। इन नर-पिशाचों के राक्षसी व्यवहार की बात ने मेरे हृदय में घर कर लिया। मैंने उस भीषण दृश्य की ओर से अपनी

दृष्टि फेर ली। मेरा जी घूमने लगा। मूर्च्छित होने की तरह एक प्रकार से मैं अचेत हो गया।

आखिर ख़ूब वमन कर डालने पर मेरा शरीर कुछ हलका सा हुआ। वहाँ से झटपट मैंने बड़े बड़े कदम बढ़ाकर अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

मार्ग में जब मुझे कुछ होश हुआ तब ईश्वर की दया के लिए मेरा हृदय कृतज्ञ हो उठा। उन्होंने इतने दिनों से मुझे इन राक्षसों के हाथ से बचाया है, इससे मैंने सजल नेत्रों से उनको धन्यवाद दिया।

इस प्रकार ईश्वर की उदारता को मन ही मन सोचता हुआ मैं घर पहुँचा। घर पहुँचकर मैं अपने को बहुत कुछ निरापद समझ स्वस्थ हुआ। तब मैंने सोचा कि वे असभ्य राक्षस इस द्वीप में किसी को खोजने या कुछ लेने की आशा से अक्सर नहीं आते। मैं अट्ठारह वर्ष से यहाँ हूँ, पर एक दिन भी किसी मनुष्य की सूरत नहीं देखी। शायद और भी अट्ठारह वर्ष यहाँ रहूँगा, तब भी किसी को न देखूँगा। अब मुझे इतना सावधान होकर रहना चाहिए जिससे मैं स्वयं उन धूर्तों के चंगुल में न जा फँसूँ। इस भय से मैंने दो वर्ष तक अपने घर की सीमा के बाहर पैर न रक्खा। यहाँ तक कि मैंने अपनी डोंगी की भी कुछ ख़बर न ली। उसकी आशा मैंने एकदम छोड़ दी। उसे लाने के लिए जाकर यदि मैं असभ्यों के सामने पहुँच जाऊँ तो मेरी जो दशा होगी वह मैं

जानता हूँ या विधाता जानते हैं। इसलिए मैंने एक और नाव बनाने का सङ्कल्प किया।

अभी मेरी जीवन-यात्रा के लिए अभाव-जनित कोई कष्ट न था। केवल इन अभागे राक्षसों के भय से मेरी बुद्धि स्तब्ध हो गई थी; इसलिए कोई नवीन वस्तु बनाने की उत्पादिका शक्ति भी मन्द हो गई थी। यदि कुछ चिन्ता थी तो उन्हीं राक्षसों की। दिन-रात उनकी चिन्ता मेरे चित्त को घेरे रहती थी। कभी कभी मैं यह सोचता था कि वे हतभागे जो महा-मांस खाते हैं, सो इस राक्षसी वृत्ति से किसी तरह उनका मैं उद्धार कर सकता हूँ या नहीं? उन नर-मांस-भक्षियों को इस दुराचार का कुछ दण्ड दे सकता हूँ या नहीं। ऐसे ही न मालूम कितनी अद्भुत और असम्भव बातों को मैं सोचता रहता था। राक्षसों को इस द्वीप में न आने देने के लिए कितने ही उपाय सोचता था किन्तु यह सोची हुई बात एक भी काम में परिणत न होती थी। होती कैसे? असम्भव बातें सोचता रहता था, कारण यह कि सङ्कल्पित काम करने के लिए मुझे उनका सामना करना पड़ेगा। मैं अकेला और वे बीस-बाईस से गिनती में कम न रहते होंगे। मैं उनका शासन क्या करूँगा, मुझी को वे खा डालेंगे।

कभी कभी जी चाहता था कि जहाँ वे लोग आग जलाते हैं वहाँ मैं दो-तीन सेर बारूद गाड़ दूँ तो उसमें आग का संयोग होते ही उनमें से कितने ही अपने आप उड़ जायँगे।

किन्तु मेरे पास बारूद बहुत कम बच रही थी। अभी उसे इस तरह ख़र्च करने को मैं राज़ी नहीं हुआ। अतएव इस इरादे को भी छोड़ देना पड़ा।

गुफा का आविष्कार

पहले की सोची हुई एक भी बात जब चरितार्थ न हो सकी तब मैंने सोचा कि मैं किसी जगह अपनी बन्दूक़, पिस्तौल और तलवार लेकर छिप रहूँगा और राक्षसों को देखते ही उन पर धड़ाधड़ गोलियाँ चलाऊँगा। प्रत्येक बार की गोली में दो तीन को मारूँगा, और दो एक को घायल भी करूँगा। इसके बाद उनके बीच में कूद पड़ूँगा और कितनों ही पर सफ़ाई से तलवार का हाथ जमाऊँगा। इससे जो वे बीस-बाईस भी होंगे तो भी मैं उन पर विजय प्राप्त कर सकूँगा।

यही उपाय सबसे अच्छा जान पड़ा। मैं जब तब इसी उपाय को सोचता था। इस बात की चिन्ता बराबर मेरे चित्त में बनी रहती थी। मैं कभी कभी स्वप्न भी देखा करता था कि उन राक्षसों को मार रहा हूँ।

इस काम पर मैं यहाँ तक आरूढ़ हुआ कि अपने को अच्छी तरह छिपाने योग्य एक गुप्त स्थान की खोज में घूमने लगा। मैंने पहाड़ की तराई में एक ऐसी जगह ढूँढ़ निकाली जहाँ छिपकर मैं राक्षसों की नौका देख सकूँ और जङ्गल में

कई एक ऐसी जगहें ठीक कर रक्खीं जहाँ पेड़ की आड़ में छिपकर उन पर एकाएक गोली बरसा सकूँ।

जब तक उत्साह था तब तक मुझे अकारण बीस-बाईस मनुष्यों को मारने की इच्छा अत्यन्त प्रबल थी। किन्तु उन लोगों को कहीं न देखकर जब मेरा उत्साह घट गया—जब तमोगुण की मात्रा कुछ कम हुई—तब शान्त चित्त से सोचकर मैंने देखा कि उन बेचारों का दोष क्या था जो मैं इतने दिनों से उनको मारने पर उद्यत था। मनुष्य का मांस खाना उनके देश का रिवाज है। उन लोगों ने कभी अच्छी शिक्षा नहीं पाई है; केवल अपनी प्रकृति की उत्तेजना से जो उनके जी में आता है, करते हैं। उन लोगों के गुण-दोष की विवेचना करने का मुझे क्या अधिकार है? उन लोगों ने अब तक मेरा क्या बिगाड़ा है? हम लोग भी तो जीवहिंसाजनित क्लेश का कुछ विचार न करके उदर-तृप्ति के लिए पशु को मार डालते हैं, युद्ध में पकड़े गये शत्रु-पक्ष के सैनिकों को बन्दी करके उनकी हत्या करते हैं।

इन बातों को भली भाँति सोचने से मेरा अयुक्त हत्या का उत्साह एकदम कम हो गया। तब मुझे मालूम हुआ कि यह मैं सरासर अन्याय करने चला था। जब वे लोग मुझ पर आक्रमण करेंगे तब जो उचित होगा, किया जायगा। इसके पूर्व उन लोगों को छेड़ना आप ही अपनी मृत्यु को बुलाना है। यदि मैं उन सबों को न मार सकूँगा तो मेरी क्या गति होगी।

इस सावधानी और सुबुद्धि का साथ धर्मभाव ने दिया। मैं जो रक्तपात के पाप से बच गया एतदर्थ मैंने परमेश्वर को बार बार धन्यवाद दिया। इसी तरह एक वर्ष और बीता।

अब आग का जलाना कठिन हो गया। क्या मालूम दूर से धुएँ को देखकर कोई यहाँ आ जाय। इसलिए कोयलों से काम लेने की सूझी। मैं एक दिन कोयले बनाने के लिए अपने कुञ्जभवन में लकड़ियाँ काट रहा था। वहाँ मैंने एक झुरमुट के पास, पहाड़ के नीचे, एक गढ़ा देखा। मैं पेड़ से उतरा और कुतूहल से उसे देखने गया। बड़ी मुश्किल से झुरमुट के पत्तों को हटाकर मैंने गढ़े के मुँह के सामने जाकर देखा, जगह मेरे पसन्द लायक़ थी। उसके भीतर मैं खड़ा हो सकता था तथा दो आदमी और भी मेरे पास ही खड़े हो सकते थे। यह गुफा देखकर मेरे आनन्द की सीमा न रही। मैंने इसी के भीतर अपना गुप्त स्थान बनाने का निश्चय किया। यदि कोई असभ्य इस कन्दरा के मुँह के पास तक आवेगा तो भी वह सहसा इसके भीतर घुसने का साहस न करेगा। मेरे सिवा दूसरा कोई इसके भीतर घुसने का साहस करता या नहीं, इसमें सन्देह है।

मैंने गुफा के भीतर प्रवेश किया। भीतर बहुत ही अँधेरा था। अच्छी तरह देखने के लिए आँखें फाड़कर देखा कि किसी के दो नेत्र उस अँधेरे में तारों की तरह चमक रहे हैं। वह मनुष्य था या शैतान? कौन जाने क्या था। मैंने उसके शरीर का और आकार तो देखा नहीं, देखा सिर्फ़

वही एक अद्भुत ज्योतिर्मय पदार्थ। तब मैं एक ही छलाँग में कूदकर गुफा के बाहर निकल आया।

कुछ देर के बाद सँभलकर फिर मैंने साहस किया। एक धधकती हुई लकड़ी लेकर मैं गुफा के भीतर घुसा। तीन चार डग जाते न जाते एक कष्ट-जनक दीर्घ श्वास और कराहने का शब्द सुनकर मैं पूर्ववत् डर गया। मेरा शरीर पसीने से तर हो गया। बार बार रोंगटे खड़े होने लगे। कुछ देर बाद फिर साहस किया और यह सोचा कि भगवान् सर्वत्र रक्षक हैं— "जाको राखे साइयाँ मारि सकै नहिं कोय।" मैं फिर गुफा में गया और उस प्रज्वलित लकड़ी को ऊपर उठाकर देखा कि एक बहुत बूढ़ा बकरा मरणासन्न पड़ा है। मैंने उसे हाथ से ज़रा ढकेला तो उसने उठने की चेष्टा की, पर वह उठ न सका। तब मैंने कहा कि अच्छा, इसे यहीं पड़ा रहने दो। यदि कोई साहस करके भीतर आवेगा तो मेरी ही भाँति भयभीत होगा।

मैंने अब स्थिर होकर अच्छी तरह देखा। गुफा बहुत बड़ी न थी, ज़्यादा से ज़्यादा भीतर का विस्तार बारह फुट होगा। वह न तो गोल थी न चौकोर, उसका कोई निर्दिष्ट आकार न था। गुफा के एक तरफ़ एक पतली सुरङ्ग थी। कौन जाने, वह कहाँ कितनी दूर तक गई है। आज मेरे पास बत्ती न थी, इससे आज उसके भीतर न गया। कल बत्ती और चकमक साथ में लेकर इसमें प्रवेश करूँगा। इसके भीतर घुटनों के बल जाना होगा।

दूसरे दिन अपने हाथ से बकरे की चर्बी की बड़ी बड़ी छः बत्तियाँ बनाईं। उन्हें साथ लेकर मैं गुफा के भीतर गया और घुटनों के बल सुरङ्ग में घुसा। लगभग दस गज़ भीतर घुसकर मैंने सोचा, कौन जाने मैं कहाँ जा रहा हूँ। कुछ और आगे बढ़ने पर सुरङ्ग की छत ऊँची देख पड़ी। मैंने खड़े होकर देखा, कि एक छोटी सी कोठरी है, ऊँचाई अन्दाज़न बीस फ़ुट होगी। मैंने वहाँ जो विलक्षण दृश्य देखा, वैसा कभी कहीं न देखा था। इस गुफा की दीवार और छत से मेरी बत्ती के प्रकाश का लाख गुना प्रत्यालोक मेरे चारों ओर प्रतिफलित होने लगा। वह बड़ा उज्ज्वल और विचित्र था; बड़ा अद्भुत चमत्कार था। दीवारों में हीरे जड़े थे या सोने के पत्तर मढ़े थे—कुछ मालूम न हुआ। यह कोठरी बड़े आराम की थी। नीचे की ज़मीन ख़ूब सूखी और साफ़ थी। बीच में पत्थर के टुकड़े बिछे थे। कहीं एक भी कीड़ा-मकोड़ा न था। यहाँ मेरे लिए एक मात्र प्रवेश की असुविधा थी; किन्तु इस सङ्कीर्ण पथ से सुरङ्ग और भी सुरक्षित है, यह जानकर मैंने इसे सुभीता ही समझा।

इस गुफा के आविष्कार से मेरे हर्ष की सीमा न रही। जिन वस्तुओं की मुझे विशेष चिन्ता थी, उन्हें अब शीघ्र ही लाकर यहाँ रख देना चाहा। गोली, बारूद और फ़ालतू तीन बन्दूक़ों को पहले यहाँ लाकर रक्खा। जिस बारूद के पीपे में पानी पैठ गया था उसे तोड़कर देखा, तीन चार

इश्व बारूद चारों ओर पानी पड़ने से जमकर बैठ गई थी, उसके भीतर पानी न पहुँचा था। इसलिए पीपे के बीच की बारूद बहुत अच्छी थी। यह विस्मय मेरे लिए विशेष आनन्दवर्द्धक हुआ। इस पीपे से मैंने तीस सेर बढ़िया बारूद निकाली।

वह बूढ़ा बकरा दूसरे दिन मर गया। उसको खींचकर बाहर फेंकने की अपेक्षा मैंने उसे वहीं गाड़ देना अच्छा समझा। मैंने गढ़ा खोदकर उसे वहीं गाड़ दिया।

मैं अब बिलकुल निर्भय हो गया। पाँच सौ असभ्य आवेंगे तब भी मेरा पता न पावेंगे।

द्वीप में असभ्य

देखते ही देखते इस द्वीप में मेरे तेईस वर्ष कट गये। मैं इस निर्जन प्रवास-वास में ऐसा असभ्य हो गया था कि असभ्यों का भय न रहता तो मैं बूढ़े बकरे की भाँति शान्ति-पूर्वक यहीं वृद्ध होकर अपना जीवन बिता देता। मैंने यहाँ अपना जी बहलाने का भी प्रबन्ध कर लिया था।

दिसम्बर का महीना है। खेती का समय है। मैं ख़ूब तड़के बिछौने से उठकर बाहर मैदान में गया। समुद्र के किनारे अन्दाज़न दो मील पर आग जलते देखकर मैं अचम्भे में आ गया। यह आग द्वीप के अपर भाग में न थी, मेरे दुर्भाग्य से मेरे ही घर की ओर थी।

मैं भय और आश्चर्य से स्तब्ध होकर अपने कुञ्जभवन के भीतर छिप रहा। कदाचित् अलक्षित भाव से वे असभ्यगण मुझ पर आक्रमण करें, इस भय से मैं आगे बढ़ने का साहस न कर सका। वहाँ भी देर तक ठहरना उचित नहीं समझा। क्या जानें, यदि मेरे खेत या मेरे हाथ का कोई काम देखने से उन्हें यहाँ मनुष्य-वास का गन्ध मिले तब तो वे लोग मेरा पता लगाये बिना न छोड़ेंगे। यह सोचकर मैं अपने क़िले के पास दौड़ आया और बाहर जो कुछ चीज़ें थीं उन्हें क़िले के भीतर रख दिया, जिसमें किसी को यह न मालूम हो कि यहाँ कोई आदमी रहता है। फिर भीतर जाकर बाहर की सीढ़ी खींच ली।

अब मैं कुछ स्थिर होकर आत्म-रक्षा का प्रबन्ध करने लगा। बन्दूक़ों को भरा और क़िले की दीवार से सटाकर रख दिया। अब मैं ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करने लगा। मैं क़िले के भीतर दो घण्टे किसी तरह बैठा, फिर बाहर की ख़बर लेने के लिए व्यग्र हो उठा। मेरे पास चर तो था नहीं जिसे जासूसी के लिए भेजता। कुछ देर और अपेक्षा करके सीढ़ी लगाकर पहाड़ के ऊपर ठहराव की जगह उतर आया। फिर सीढ़ी को पहाड़ से लगाकर उसकी चोटी पर चढ़ गया। वहाँ लेटकर स्थिर दृष्टि से देखा, आग के चारों ओर नौ असभ्य बैठे हैं, जो सब के सब नङ्गे हैं। ऐसा जान पड़ा जैसे वे लोग राक्षसी वृत्ति को चरितार्थ करने के लिए मनुष्य का मांस पका रहे हों।

उन लोगों के साथ दो डोंगियाँ थीं। दोनों को खींचकर उन्होंने बालू के ऊपर ला रक्खा है। अभी भाटा था, शायद ज्वार आने पर नाव को बहाकर ले जाने की अपेक्षा से वे लोग बैठे हैं। पीछे उन लोगों को अपने घर की ओर और इतने सन्निकट आते देखकर मैं तो भय से सूखकर काठ हो गया। किन्तु इतना मैं समझ गया कि वे लोग भाटा पड़ने के समय आते हैं और ज्वार आते ही चल देते हैं। इसलिए ज्वार के समय मैं ख़ूब निश्चिन्त होकर खेती-बारी का काम कर सकूँगा। यह सोचकर मैं ख़ुश हुआ।

ज्वार आने के एक आध घण्टा पहले ही से वे लोग आग की परिक्रमा करके नाना प्रकार के अङ्गविक्षेप के साथ नाचने लगे। मैं दूरबीन के द्वारा उन लोगों का अङ्गविक्षेप स्पष्ट रूप से देख रहा था। वे बिलकुल नङ्ग धड़ङ्ग थे। एक भी वस्त्र उनके शरीर पर न था। वे लोग पुरुष थे या स्त्री, अथवा उनमें कितने पुरुष और कितनी स्त्रियाँ थीं, यह इतनी दूर से मैं नहीं जान सका।

ज्वार आते ही उन लोगों ने नाव खोल दी और लग्गा लेकर नाव खेने लगे। उन लोगों को जाते देखकर मैं झटपट दोनों कन्धों पर दो बन्दूकें, कमरबन्द में दो पिस्तौल और हाथ में नङ्गी तलवार लेकर जिधर उन नृशंसों को देखा था उधर ख़ूब ज़ोर से दौड़कर गया। इतना बड़ा बोझ लेकर वहाँ पहुँचते प्रायः दो घण्टे लग गये। वहाँ जाकर देखा कि

छोटी बड़ी सब मिलाकर पाँच डोंगियाँ आई थीं। वे सबकी सब एक साथ समुद्र के अपर तट में जा रही हैं। कैसा भयङ्कर दृश्य है। उस समय भी वहाँ आग के चारों ओर उन लोगों के प्रचण्ड आनन्द का कारण दग्ध नरमांस और नर-कपाल जहाँ तहाँ बिखरे पड़े थे। यह हृदय-विदारक दृश्य देखकर उन नर-मांस-खादकों को मारने की प्रवृत्ति और भी प्रबल हो उठी।

वे लोग कभी कभी यहाँ आते थे। इसके बाद पन्द्रह महीने तक उन लोगों के आने का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया तो भी मैं बराबर भयभीत बना रहता था। सदा विपत्ति के भय से दबा रहना बड़ी विडम्बना है। इसकी अपेक्षा विपत्ति का आ जाना कहीं अच्छा है। मैं भी नर-खादकों के भय से मन ही मन पक्का नरघाती बन गया। इस दफ़े उन लोगों के आने पर किस उपाय से उन्हें मार डालना होगा, इसी की चिन्ता सदा मन में लगी रहती थी। रात में ख़ूब अच्छी नींद नहीं आती थी। मैं भयङ्कर स्वप्न देखकर चौंक उठता था। यों ही महीने पर महीना बीतने लगा।

द्वीप के पास जहाज़ का डूबना

क्रम क्रम से मई महीना आया। उस दिन सोलहवीं तारीख़ थी। मेरी काठ की यन्त्री की गणना से यही ठीक था। दिन भर आँधी के साथ साथ पानी बरसता रहा। रात में

भी हवा का वेग कम न हुआ। वज्र-विद्युत् का प्रभाव भी ज्यों का त्यों बना रहा। मैं बैठकर बाइबिल पढ़ रहा था। एकाएक समुद्र में तोप का धड़ाका सुनकर मैं चकित हुआ। मैं आश्चर्यान्वित होकर झट अपने आसन से उठ बैठा। सीढ़ी के सहारे पहाड़ की चोटी पर चढ़कर मैंने देखा, जिस तरफ़ स्रोत के प्रखर वेग में पड़कर मेरी नाव बह चली थी उसी ओर आग की झलक दिखाई दी। मैंने निश्चय किया कि वहीं से तोप की आवाज़ आई है। यथार्थ में थी भी यही बात। आध मिनट के बाद फिर तोप का शब्द सुन पड़ा। कोई जहाज़ तूफ़ान में पड़कर साहाय्य का सङ्केत कर रहा है। मेरी समझ में झट एक बात आ गई। मेरे आस-पास वहाँ जितनी सूखी लकड़ियाँ थीं सबको मैंने इकट्ठा किया और चकमक से आग बनाकर उसमें बत्ती लगा दी। आग लगते ही बल उठी। ऐसा करने का मेरा यह अभिप्राय न था कि मैं उस जहाज़ की कुछ सहायता कर सकूँगा। मेरा इरादा तो यह था कि वही शायद मेरी कुछ सहायता कर सकें। मेरे द्वारा प्रज्वलित आग का प्रकाश जहाज़ के लोगों ने देख लिया। मेरी आग की ज्वाला ऊपर की ओर उठते ही पहले तोप की आग की झलक देख पड़ी फिर पीछे शब्द सुन पड़ा। उसके बाद धड़ाधड़ तोप की आवाज़ होने लगी। मैंने सारी रात बैठकर आग जलाई। सुबह होने पर बहुत दूर समुद्र में कुछ दिखाई दिया, किन्तु दूरबीन लगाकर भी मैं ठीक न कर सका कि वह क्या था।

मैं दिन भर बार-बार उसी ओर देखने लगा किन्तु उससे कुछ फल न हुआ। मैंने सोचा कि कोई जहाज़ लङ्गर डाले ठहरा है। मैं बन्दूक़ लेकर झट पहाड़ से उतरा और द्वीप के दक्षिण ओर दौड़ा गया। वहाँ पहाड़ पर चढ़कर नैराश्य भाव से देखा, वह एक टूटा हुआ जहाज़ था। उसी भँवर के पास वह पहाड़ से टकराकर टूट जाने के कारण जलमग्न हो गया है। उसके नाविक और यात्री क्या हुए, कहाँ गये, इसका कुछ पता नहीं। उस भग्न जहाज़ को देखकर मैं बहुतेरा अनुमान करने लगा। मैं जिस अवस्था में था उसमें उन लोगों की विपत्ति में समवेदना प्रकट करने के अतिरिक्त और साहाय्य कर ही क्या सकता था! शायद दूसरे जहाज़ ने उन लोगों का इस विपद से उद्धार किया हो; किन्तु उसका कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया। तो क्या इतने जीव सब के सब एक साथ डूब मरे? हाय! यदि उनमें से एक भी आदमी बचकर मेरे पास आता, तो मैं सङ्गी पाकर कितना ख़ुश होता! उसके साथ बात-चीत करके जी का बोझ हलका करता। उन नौकारोहियों में कोई बचा या नहीं, यह मुझे मालूम न हुआ। किन्तु कई दिनों के बाद एक जलमग्न लड़के का मृत कलेवर उतराता हुआ समुद्र के किनारे आ लगा था। उसकी पोशाक नाविक की थी। वह किस देश या किस जाति का था यह उसे देखकर मैं न जान सका। उसके पाकेट में दो अठन्नियाँ और एक तम्बाकू पीने का

नल था। तम्बाकू के नल को मैंने रुपये से कहीं बढ़कर मूल्यवान् समझा।

तूफ़ान रुक गया था। मैं अपनी डोंगी पर चढ़कर उस भग्न जहाज़ को देखने के लिए अत्यन्त उत्कण्ठित होने लगा। पर वह रात तो मैंने नाव ही पर बिताई। सबेरे ज्वार आते ही मैंने डोंगी खोल दी। दो ही घण्टे में प्रखर-प्रवाह के सहारे उस टूटे हुए जहाज़ के पास जा पहुँचा। जहाज़ की दुर्दशा देखकर मेरी छाती फट गई। वह दो पहाड़ों के बीच में पड़कर चूर-चूर हो गया है। उसका अगला और पिछला हिस्सा समुद्र की तरङ्ग-ताड़ना से भग्न हो गया है। जहाज़ की गढ़न देखकर मैंने समझ लिया कि वह स्पेन देश का था।

जहाज़ के पास डोंगी के पहुँचते ही जहाज़ पर एक कुत्ता मेरी ओर झुक-झुककर भूँकने लगा। मेरे बुलाते ही वह समुद्र में कूद पड़ा। मैंने उसे अपनी डोंगी पर चढ़ा लिया। वह बेचारा मारे भूख-प्यास के अधमरा सा हो गया था। मैंने ज्योंही उसके आगे एक रोटी फेंकी त्योंही वह उसे एक ही बार में निगल गया। तब उसे पीने को थोड़ा सा पानी दिया। यदि मैं उसे पानी पीने से न रोकता तो शायद वह इतना पानी पी लेता कि पेट फटने से मर जाता। इसके बाद मैं जहाज़ के ऊपर गया। देखा, रसोईघर में दो आदमी एक दूसरे से चिपके हुए मरे पड़े हैं। इस कुत्ते के सिवा जहाज़ पर एक भी प्राणी जीता न मिला। दो सन्दूक़ मिले। उनमें क्या है, यह

देखे बिना ही उन्हें उठाकर मैं अपनी डोंगी पर ले आया। कमरे के भीतर कई बन्दूकें और बारूद की थैलियाँ थीं। बन्दूकों की आवश्यकता न थी। केवल बारूद उठाकर ले आया। कितने ही काठ के बर्तन, ज़ञ्जीर, चिमटा और कोयला खोदने के कुदाल मिले। ये चीज़ें बड़ी आवश्यक थीं। इन चीज़ों और कुत्ते को लेकर मैं लौट चला, कारण यह कि भाटा शुरू हो गया था।

मारे परिश्रम के थककर मैं साँझ को अपने द्वीप में लौट आया। इतना थका था कि नाव से उतरने का साहस न हुआ। उस रात को नाव में ही सो रहा। जहाज़ से लाई हुई नई चीज़ों को घर न ले जाकर नवीन गुफा के भीतर रखने का निश्चय किया। सबेरे उठकर सब चीज़ों को किनारे उतारकर ले गया और देखने लगा कि कौन कौन चीज़ें हैं।

सन्दूक खोला। उसमें बहुत सी ज़रूरी चीज़ें मिलीं। सन्दूक में मुख्य चीज़ें थीं आटा, बोतल में भरी कुछ मिठाई, अच्छी अच्छी कमीज़ें, डेढ़ दर्जन रूमाल और छींट का गुलूबन्द। इस उष्ण-प्रधान देश में हाथ मुँह पोंछने के लिए रूमाल की बड़ी आवश्यकता थी। दूसरे सन्दूक में रुपये, सोने का पत्र और बारूद थी।

यद्यपि ये चीज़ें प्रयोजनीय थीं परन्तु ऐसी न थीं जिनसे मेरा विशेष उपकार होता। रुपया बहुत मिला ही तो किस काम का, वह तो अभी मेरे पैर की धूल के बराबर है। उसकी न यहाँ कुछ उपयोगिता है और न कुछ मोल है। दो तीन

जोड़े जूतों के बदले में ये सब रुपये ख़ुशी से दे सकता था। बहुत दिनों से जूते न होने से कष्ट हो रहा था। जहाज़ के रसोईघर में जो दो आदमी लिपटे हुए मरे पड़े थे, उनके पैरों से मैं दो जोड़े जूते खोलकर लाया था और दो जोड़े सन्दूक़ में मिल गये। किन्तु ये पहनने में उतने सुखप्रद न थे।

इस जहाज़ में बहुत धन-रत्न थे। किन्तु जिस भाग में वे सब थे वह जल में डूब गया था; नहीं तो मैं कई नाव सोने, चाँदी और रुपयों से अपनी गुफा को भर देता। इस अवस्था में भी मेरे पास धन की कमी न थी। यथेष्ट धन था, तथापि उस धन से मैं धनवान् थोड़े ही था।

मैं उन चीज़ों को ढोकर ले आया और यथास्थान रख दिया। फिर नाव को अड्डे में ले जाकर बाँध आया। इसके बाद मैं घर गया। वहाँ सब चीज़ें ज्यों की त्यों रक्खी थीं। अब मैं विश्राम करने की इच्छा से निश्चिन्त हो घर में रहने लगा। प्रायः बाहर न जाता था। यदि कभी जाता भी था तो पूरब ओर। क्योंकि उस ओर असभ्यों के आने की सम्भावना कम थी, इससे उस तरफ़ जाने में बन्दूक़-बारूद आदि का भार ढोना न पड़ता था। इस तरह और दो साल गुज़र गये। किन्तु मैं अपने लिए आप ही शनिग्रह था। मैं अपने को कहीं स्थिर न रहने देता था। कभी जी में आता था कि एक बार फिर उस भग्न जहाज़ में जाऊँ; कभी मन में यह तरङ्ग उठती थी कि किसी तरह महा समुद्र के पार हो जाऊँ।

यदि अफ़्रिका का वह जहाज़ मेरे पास रहता तो जैसे होता मैं समुद्र में धँस पड़ता। जो लोग अपनी अवस्था में सन्तुष्ट नहीं रहते उन लोगों में मेरा नम्बर सब से ऊपर है। उन लोगों के लिए मैं ही शिक्षा का स्थल और ज्वलन्त उदाहरण हूँ। मैं अपने बाप के घर से असन्तुष्ट होकर, न मालूम कितनी दुर्दशा भोगकर, ब्रेज़िल में एक प्रकार से कुछ स्थिति पा गया था, किन्तु वहाँ भी सुख से रहना नसीब न हुआ। फिर मेरे सिर पर भूत सवार हुआ। मैं फिर शनिग्रह के फेर में पड़ा। कितने ही कष्ट सहे। अब भी मैं सुख से हूँ तथापि मुझे अपनी अवस्था पर सन्तोष नहीं। इसके बाद न मालूम और कितना दुःख कपार में लिखा है। किसी ने सच कहा है—सन्तोषेण विना पराभवपदं प्राप्नोति मूढो जनः।

भृत्य-प्राप्ति

अपने इस द्वीपनिवास के चौबीसवें साल के मार्च महीने की एक बदली की रात में मैं बिछौने पर लेटा था। शरीर में किसी प्रकार की अस्वस्थता न थी, और न मन में ही किसी प्रकार की ग्लानि या शोच था फिर भी न मालूम नींद क्यों न आती थी। मैं पड़ा ही पड़ा अपने जीवन की घटनावली को सोच रहा था। पल पल में मेरे मन का भाव बदलने लगा। अपनी हालत की बात सोच-सोचकर भगवान् की असीम करुणा के लिए मेरा हृदय कृतज्ञता से परिपूर्ण होने लगा।

धीरे धीरे असभ्यों की चिन्ता ने और उनके घृणित आचार, निर्दय व्यवहार आदि ने फिर मेरे मन पर अधिकार जमाया। यदि उन लोगों के चंगुल में पड़ जाऊँ तो क्या करूँगा, उन लोगों से किसी तरह कुछ सहायता पाकर इस निर्जन टापू से मेरा उद्धार हो सकता है या नहीं, इत्यादि अनेक विषयों को सोचते सोचते मेरा मस्तिष्क गरम हो उठा मानों ज्वर चढ़ आया हो। अन्त में मेरी आँखें लग गईं और मैं सो गया।

सोकर मैंने सपना देखा,—मानों ग्यारह असभ्य दो डोंगियों पर सवार होकर इस टापू में आये हैं और एक सहाय-हीन मनुष्य को मारकर खाने का उद्योग कर रहे हैं। वह ज़रा मोहलत पाकर भाग निकला और मेरे क़िले के सामने उपवन में छिप रहा। मैं उसे इस अवस्था में देखकर एका-एक उसके सामने गया और प्रसन्नता से उसे आश्वासन देने लगा। उसने बड़े विनीत भाव से मुझसे सहायता की प्रार्थना की। मैं उसको सीढ़ी के सहारे क़िले के भीतर ले आया। तब से वह मेरा सेवक हो गया।

जब मैं जागकर उठा तब स्वप्न की बात सोचकर मेरी तबीयत बहुत ख़राब हो गई। जो हो, इस प्रकार एक भृत्य मिल जाने की चिन्ता ने मेरे मन में घर कर लिया। मैंने सोचा, यदि एक असभ्य भृत्य-रूप में मिल जाय तो उसकी सहायता से मैं महादेश को जा सकता हूँ और उन राक्षसों के साथ सद्भाव रखने से मेरा उद्धार भी हो सकता है।

मैंने दूरबीन लगाकर देखा कि उन लोगों ने अग्निकुण्ड प्रज्वलित किया है और उसके चारों ओर घूम घूमकर वे विचित्र अङ्ग-भङ्गी के साथ नाच रहे हैं।—पृ० १३६

इस स्वप्न ने मेरे मन पर ऐसा प्रभाव डाला कि मैं प्रति दिन समुद्र की ओर देख देखकर डोंगी आने की प्रतीक्षा करने लगा। मैं व्यर्थ की प्रतीक्षा में एक तरह थक सा गया। इसी तरह डेढ़ वर्ष बीत गया।

डेढ़ वर्ष बाद एक दिन मैं सबेरे घर के बाहर आकर अवाक् हो गया। द्वीप के जिस भाग में मेरा घर था उसी ओर देखा कि समुद्र के किनारे पाँच डोंगियाँ बँधी हैं। उन पर एक भी सवार नहीं, सभी उतरकर कहीं चले गये हैं। अरे बाप! एक दम पाँच पाँच डोंगियाँ! न मालूम, इन पर कितने लोग आये होंगे! मुझे बाहर ठहरने का साहस न हुआ। मैं क़िले के भीतर आकर उनका हाल जानने के लिए छटपटाने लगा। उन लोगों के ऊपर आक्रमण करने का सभी सामान ठीक कर मैं अवसर की अपेक्षा करने लगा। अपेक्षा करते करते मैं अकुला उठा। तब बन्दूकों को ज़मीन में रखकर मैं सीढ़ी लगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। मैंने दूरबीन लगाकर देखा, कि उन लोगों ने अग्निकुण्ड प्रज्वलित किया है और उसके चारों ओर घूम घूमकर वे विचित्र अङ्ग-भङ्गी के साथ नाच रहे हैं।

मैं यह देख ही रहा था कि इतने में वे लोग नाव के पास से दो हतभागों को खींचकर ले गये। उन दोनों को मारकर वे राक्षस अभी खा डालेंगे। एक को लाठी मारकर उसी समय गिरा दिया और उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गों को काटकर टुकड़े टुकड़े कर डाला। दूसरा आदमी, अपनी मृत्यु की अपेक्षा

उसने धरती छूकर बड़े विनीत भाव से प्रणाम किया और मेरा पैर उठाकर अपने सिर पर रक्खा।—पृ० १४१

स्तम्भित और चकित हो गया। उससे न अब भागते ही बनता था और न मेरी ओर आते ही। वह कुछ देर जड़वत् खड़ा रहकर फिर भागने का मौक़ा देखने लगा। मैंने फिर उसे पुकारा। वह कुछ आगे की ओर बढ़ा। इसके बाद वह दो एक डग मेरी ओर आता और फिर खड़ा हो रहता। यों ही रुक रुककर वह आता था और भय से थरथर काँपता था। शायद वह मन ही मन सोच रहा था कि जो दशा मेरा पीछा करनेवालों की हुई है वही अब को बार मेरी होगी। मैंने उसको इशारे से यथासम्भव आश्वासन देकर फिर पुकारा। तब वह साहस करके दस बारह क़दम मेरी ओर आता और झुक झुककर प्रणाम करता था। मैंने फिर मुसकुराकर इशारे के द्वारा उसको अपनी ओर बुलाया। आख़िर डरते डरते वह मेरे पास आया। उसने धरती छूकर बड़े विनीत भाव से प्रणाम किया और मेरा पैर उठाकर अपने सिर पर रक्खा। मैंने धरती से उठाकर इशारे से, जहाँ तक सम्भव था, उसे आश्वासन दिया। जिसको मैंने धक्का मारकर गिरा दिया था वह मरा नहीं था, सिर्फ़ मूर्च्छित हो गया था। अब वह धीरे धीरे सचेत होकर उठ रहा था। यह देखकर उस विद्रावित ने मुझसे क्या कहा, उसका एक अक्षर भी मेरी समझ में न आया। फिर भी उसने मेरे कानों में मानो अमृत बरसाया। कारण यह कि पच्चीस-छब्बीस वर्ष बाद आज ही पहले पहल मनुष्य का कण्ठस्वर सुन पड़ा। वह गिरा हुआ

आदमी होश होने पर उठ बैठा। तब मेरा वह आनन्द जाता रहा। मैंने झट उसकी ओर बन्दूक उठाई। यह देखकर उस पलायित व्यक्ति ने मुझसे तलवार माँगी। मेरी कमर में नङ्गी तलवार लटक रही थी। मैंने उसको तलवार दे दी। तलवार लेकर वह एक ही दौड़ में अपने शत्रु के पास गया और एक ही वार में उसका सिर धड़ से उड़ा डाला। वे लोग काठ की तलवार का इस्तेमाल करके ही ऐसे सिद्धहस्त होते हैं। उनकी तलवार काठ की होती है सही, किन्तु वह ऐसी पैनी होती है कि एक ही हाथ में बेखटके गला काट सकती है।

दुश्मन का सिर काटकर वह मारे खुशी के उछलने लगा। विचित्र ढङ्ग से अङ्ग-विक्षेप करते, नाचते हुए उसने तलवार और कटे सिर को मेरे सामने लाकर रख दिया। फिर उसने उस निहत मनुष्य के पास जाने की अनुमति चाही। मैंने कह दिया, जाओ। वह उसके पास जाकर चुपचाप खड़ा हो रहा, तदनन्तर उसे उलटा पलटाकर देखने लगा। उसके हृदय के पास जहाँ गोली लगी थी उस जगह को उसने बड़े ध्यान से देखा। किन्तु मैंने उसे किस तरह मारा, यह कुछ भी उसकी समझ में न आया। तब वह उसका धनुष-बाण उठाकर मेरे पास ले आया। अब मैंने उसको अपने साथ चलने का इशारा किया; और उसको समझा दिया कि इन दोनों की तलाश में और लोग भी आ सकते हैं। तब उसने भी सङ्केत के द्वारा अपने मन का भाव व्यञ्जित किया कि इन

मुर्दों को बालू में गाड़ देना अच्छा होगा, इससे कोई देख न सकेगा। मैंने गाड़ने की अनुमति दी। उसने तुरन्त हाथ से बालू हटाकर पन्द्रह मिनट के भीतर दोनों मुर्दों को बालू के नीचे छिपा दिया। तब उसको मैं अपनी नई गुफा में ले गया। वहाँ जाकर मैंने उसको रोटी, किसमिस और पानी पीने को दिया। उसको बड़ी भूख और प्यास लगी थी। दौड़ने से वह थक भी गया था। मैंने एक जगह धान का पयाल बिछाकर बिछौना बना लिया था, वही दिखाकर उसको लेटने के लिए कहा। वहीं जाकर वह लेट रहा और सो गया।

वह अच्छा हट्टा कट्टा तन्दुरुस्त और लम्बा था। उसकी उम्र पचीस छब्बीस वर्ष के लगभग होगी। चेहरे पर कोमलता का चिह्न झलकता था, स्वरूप कुछ भयानक न था। पुरुषोचित सौन्दर्य के साथ साथ स्निग्धता का मेल उसकी शारीरिक शोभा को बढ़ा रहा था, जो देखने में बड़ा ही अच्छा मालूम होता था। ख़ासकर उसका हँसना बड़ा ही सरल और मीठा था। उसके सिर के बाल काले और लम्बे थे। अफ़्रिका-वासियों की भाँति टेढ़े और रूच न थे। ललाट चौड़ा था, बड़े बड़े नेत्र आनन्द और उत्साह से भरे हुए थे। शरीर का रङ्ग बिलकुल काला न था। साँवला सा था, जो देखने में बुरा नहीं बल्कि दृष्टिरोचक था। मुँह गोल था, नाक छोटी सी पर चिपटी न थी। गला पतला और दाँत हाथी-दाँत की तरह ख़ूब सफ़ेद थे। सारांश यह कि वह देखने में कुरूप न था।

फ़ाइडे की शिक्षा

आध घण्टे तक उस पलायित व्यक्ति की आँखें झपी रहीं। इसके बाद वह जाग उठा और गुफा से निकलकर मेरे पास आया। मैं बाहर बकरी दुह रहा था। वह मुझको देखते ही दौड़कर मेरे पास आया और मेरे प्रति दासत्व और कृतज्ञता का भाव प्रकट करने लगा। वह मेरे पैर को अपने माथे पर रखकर अपनी इच्छा से दासत्व स्वीकार करने लगा। मैं उसके सङ्केत से उसका मानसिक भाव अच्छी तरह समझ जाता था। मैंने भी उसको अच्छी तरह समझा दिया कि मैं तुम्हारे आचरण से सन्तुष्ट हूँ। थोड़े ही दिनों में मैं उसके साथ बातचीत करने लगा। मैंने उसे बोलना सिखला दिया।

पहले मैंने उसे यह समझा दिया कि तुम्हारा नाम मैंने फ़ाइडे (शुक्रवार) रक्खा है, क्योंकि शुक्रवार को ही वह मुझे मिला था। यह भी सिखला दिया कि तुम मुझको प्रभु कहा करो। उसको हाँ, नहीं, आदि अँगरेज़ी के छोटे छोटे शब्द भी सिखला दिये।

एक मिट्टी के बर्तन में मैंने उसको थोड़ा सा दूध और रोटी खाने को दी और स्वयं दूध में रोटी मिलाकर खाकर दिखला दिया कि दूध-रोटी इस तरह खाई जाती है। उसने खाकर इशारे से बतलाया कि दूध-रोटी खाने में बहुत बढ़िया है। उसी के साथ मैंने गुफा के भीतर रात बिताई।

सबेरे उठकर मैंने उससे कहा—"चलो तुमको कुछ कपड़े दूँ।" यह सुनकर वह बहुत ख़ुश हुआ और मेरे साथ चला। अभी तक वह एक प्रकार से नङ्गा ही था।

गुफा से चलकर हम दोनों वहाँ आये जहाँ फ़ाइडे ने दोनों असभ्यों की लाश को गाड़ रक्खा था। फ़ाइडे ने ठीक जगह दिखलाकर इशारा किया—"आओ, हम लोग इन्हें उखाड़कर खा लें।" इससे मैंने अत्यन्त क्रोध प्रकट करके अपनी घृणा सूचित की। मैंने इशारे से दिखाया कि ऐसी बात कहने से मुझे उबकाई आती है। ऐसी बात फिर कभी न कहना। मैंने उसको वहाँ से चले आने का इशारा किया। उसने बड़े विनीत भाव से मेरी आज्ञा का पालन किया।

इसके बाद मैं उसको साथ लेकर पहाड़ पर चढ़ा। दूर-बीन लगाकर देखा तो अग्निकुण्ड के पास एक भी असभ्य न था। उन लोगों की डोंगियाँ भी न थीं। वे अपने साथियों की कोई खोज ख़बर न लेकर उधर के उधर ही चले गये। तब मैंने वहाँ जाकर देखना चाहा कि वे लोग वहाँ क्या कर रहे थे। मैंने दो बन्दूकें आप लीं और फ़ाइडे तीर-कमान को कन्धे पर लटकाकर एक हाथ में मेरी तलवार और दूसरे हाथ में मेरी बन्दूक़ लेकर मेरे साथ साथ चला। फ़ाइडे तीर चलाने में बड़ा ही दक्ष था। वहाँ पहुँचकर मैं हक्काबक्का सा हो रहा। मेरा जी भिन्ना उठा, किन्तु फ़ाइडे के मन में ज़रा भी घृणा उत्पन्न न हुई। वहाँ के भीषण दृश्य का वर्णन

करते मेरा हृदय काँपता है। मैंने देखा कि चारों ओर मुर्दों की ठठरियाँ पड़ी हैं, इधर उधर अधजला, आधा खाया हुआ नर-मांस बिखरा पड़ा है; कहीं हड्डियाँ लहू-मांस से भरी पड़ी हैं, कहीं सूखी हड्डियों का ढेर लगा है। मनुष्य के रक्त से भूमि लाल हो गई है। तीन मुण्ड और पाँच हाथ कटे पड़े हैं। फ़ाइडे ने सङ्केत द्वारा मुझसे कहा—वे लोग चार क़ैदियों को लाये थे, जिनमें से तीन आदमियों को मारकर खा गये, चौथा मैं ही था। दोनों दलों में ख़ूब युद्ध हुआ था। युद्ध में जो बन्दी होते हैं उनकी प्रायः यही दशा होती है।

मैंने फ़ाइडे से कहा कि उन ठठरियों, अधजले मांस और हड्डियों को एकत्र करके उनमें आग लगा दे। वह नर-मांस खाने के लिए फ़ाइडे की लार टपक रही थी। उसको खाने के लिए उद्यत देखकर मैं उस पर बहुत बिगड़ा। मेरी अत्यन्त घृणा और चिढ़ने का भाव देखकर वह रुक गया। मैंने उसे समझा दिया कि अब तू नरमांस खायगा तो मैं तुझे मार डालूँगा।

उन नर-कङ्कालों को अच्छी तरह जलाकर मैं अपने घर लौट आया। फ़ाइडे को एक जोड़ी सूती पाजामा दिया और चमड़े का कुरता और टोपी सीकर दी। फ़ाइडे अपने प्रभु की ऐसी पोशाक पहनने को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। किन्तु पहले पहल कपड़ा पहनने में उसे बड़ा ही कष्ट होता था। ऐसा जान पड़ता था जैसे पोशाक ने उसे चिमटकर पकड़ लिया हो। धीरे धीरे कपड़े पहनने का उसे अभ्यास हो गया।

अब मुझे इस बात की फ़िक्र हुई कि इसको रहने के लिए कहाँ जगह देनी चाहिए। इसको ऐसी जगह रखना चाहिए जहाँ यह आराम से रह सके और मैं भी निर्भय होकर रहूँ; क्योंकि राक्षसी प्रकृति के मनुष्य का विश्वास ही क्या? क्या मालूम किस दिन उसकी चित्त-वृत्ति कैसी हो? उसका राक्षसी स्वभाव जिस घड़ी प्रबल हो उठेगा उस घड़ी सर्वनाश होना ही सम्भव है।

मैंने सोच-विचारकर निश्चय किया कि बाहर और भीतर के घेरों के बीच की जगह में उसके लिए एक तम्बू खड़ा कर देना चाहिए। मैंने एक छोटा सा तम्बू खड़ा कर दिया। यहाँ से गुफा के पासवाले दर्वाज़े से मेरे तम्बू में जाने का एक रास्ता था। उसमें मैंने फाटक लगा दिया और ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि फ़ाइडे अब सहज ही मेरे घेरे के भीतर आकर मुझ पर आक्रमण न कर सकेगा। यदि किसी दिन घेरे को लाँघकर मुझ पर आक्रमण करने का सङ्कल्प करेगा भी तो वह बिना खड़खड़ाहट के न आ सकेगा; कारण यह कि मैंने खम्भों पर एक छप्पर खड़ा करके उसे पेड़ की डाल-पातों से छाकर उस पर धान का पयाल बिछा दिया था। उस छप्पर के नीचे मेरा तम्बू था। जहाँ सीढ़ी लगाकर मैं बाहर निकलता था वहाँ की जगह ख़ाली थी। उसमें भी मैंने किवाड़ लगा दिये। रात को मैं सब अस्त्र-शस्त्र अपने पास रखकर सोता था।

किन्तु इतना सावधान होकर रहने की कोई ज़रूरत न थी; क्योंकि फ़ाइडे की अपेक्षा विशेष विश्वासपात्र, विनीत और

निश्छल भृत्य हो सकता है, यह मैं नहीं जानता। न तो वह कभी क्रोध करता था, न उसके चेहरे पर विरक्ति का भाव झलकता था। वह सदा प्रसन्न और सभी कामों में अग्रसर रहता था।

यह देखकर मैंने समझा कि विधाता ने मानव जाति को सर्वत्र एक ही प्रकार के गुणों से भूषित किया है। मैं फ़्राइडे के आचरण से अत्यन्त प्रसन्न होकर उसको अपना कामधन्धा और भाषा सिखलाने लगा। अभी मेरे दिन बड़ी ख़ुशी से कटते थे।

दो तीन दिन बाद मैंने सोचा कि फ़्राइडे को नरमांस खाने का स्वाद भुलाने के लिए अन्य जन्तुओं का मांस खिलाना आवश्यक है। एक दिन सबेरे उसको साथ लेकर मैं जङ्गल की ओर चला। मैं अपना पालतू बकरा काटने को जा रहा था, किन्तु मार्ग में मैंने देखा कि एक वृक्ष की छाया में एक बकरी सो रही है और उसके पास दो बच्चे बैठे हैं। मैंने फ़्राइडे को पकड़कर चुपचाप खड़ा रहने का इशारा किया। इसके बाद गोली चलाई जिससे एक बच्चा मर गया।

कई दिन हुए, फ़्राइडे ने इसी तरह दूर से अपने शत्रु को मारे जाते देखा था। वह मारे डर के थर थर काँपने लगा। ऐसा जान पड़ा कि अब वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ेगा। वह कुर्ता उतारकर अपने शरीर को चकित-दृष्टि से देखने लगा कि कहीं आहत तो नहीं हुआ है। मैंने उसको धमकाया कि अब की बार मैं तुम्हें मारूँगा। तब वह दौड़कर मेरे पास आया और मेरे पैरों से लिपटकर न मालूम क्या क्या विनय

करने लगा। उसकी बातें तो मेरी समझ में आईं नहीं, हाँ इतना मैंने ज़रूर समझा कि वह मुझसे प्राण-भिक्षा चाहता है।

मैंने उसे अच्छी तरह समझा दिया कि मैं तुझे न मारूँगा। उसको मैंने बकरी का मरा हुआ बच्चा दिखला दिया। वह अवाक् होकर बड़े गौर के साथ उसको देखने लगा। मैंने फ़ाइडे की आँख बचाकर उसी समय फिर बन्दूक़ में गोली भर ली। मैंने देखा कि एक पेड़ पर एक सुग्गा बैठा है। फ़ाइडे को वह पक्षी और अपनी बन्दूक़ दिखाकर समझा दिया कि इस दफ़े मैं उस पक्षी को मारूँगा और इसके बाद इशारे से पेड़ के नीचे की जगह बतलाकर यह भी कह दिया कि वह मरकर यहीं गिरेगा। मैंने बन्दूक़ की आवाज़ की। सुग्गा मरकर पेड़ के नीचे गिर पड़ा। फ़ाइडे फिर मेरी ओर देखकर चुप हो रहा। उसने मुझको बन्दूक़ भरते नहीं देखा था। उसने अपने मन में समझा कि बन्दूक़ के भीतर मृत्यु विचित्र ढङ्ग से ढेर की ढेर घुसी है। उसका विस्मय और भय दूर होने में बहुत दिन लगे। यदि मैं उसे न रोकता तो वह शायद मेरा और बन्दूक़ का पूजन करता। वह बहुत दिनों तक साहस करके भी बन्दूक़ को छूता न था।

मैं बकरी के मरे बच्चे को अपने घर उठा लाया और उसका बहुत बढ़िया झोल बनाया। मांस के साथ मुझको नमक खाते देखकर फ़ाइडे को बड़ा आश्चर्य हुआ। इशारे के द्वारा उसने मुझसे कहा—"छिः, नमक खाते हो! उसका

कैसा बुरा स्वाद होता है।" उसने मेरी देखादेखी थोड़ा सा नमक मुँह में डालकर थूक दिया और कुल्ला करके वह फिर भोजन करने बैठा। मैंने भी उसको दिखलाकर बे नमक का माँस मुँह में रखकर उसी की तरह थूक दिया। किन्तु वह किसी तरह नमक खाने को राज़ी न हुआ।

दूसरे दिन मैंने उसको कबाब खिलाया। उसके आनन्द का क्या पूछना है! उसने बारबार उमँगकर मुझे समझाया कि यह बड़ा ही अच्छा है, खाने में ख़ूब स्वादिष्ठ है। उसने कहा, "अब मैं कभी नर-मांस न खाऊँगा"।

तब मैंने उसको धान कूटना और आटा पीसना आदि सिखलाया। उसने बात की बात में ये सब काम सीख लिये। इसके बाद मैंने उसको रोटी बनाना सिखलाया। थोड़े ही दिनों में वह घर के काम-धन्धों में मेरे ही ऐसा प्रवीण हो गया।

अब मुझे दो व्यक्तियों के आहार की चिन्ता हुई। मैंने खेती का कारबार बढ़ाया। ज़्यादा ज़मीन तैयार की। फ़्राइडे बड़ी ख़ुशी के साथ अपने मन से खेती में परिश्रम करने लगा।

क्रूसो और फ़्राइडे

मैं जितने दिनों से इस द्वीप में हूँ उनमें यही साल मेरे बड़े सुख का था। फ़्राइडे अब मेरी सब मोटी मोटी बातें समझ लेता था। अब वह मेरे साथ ख़ूब बात-चीत करता था। इन

बातों से भी बढ़कर फ़्राइडे की निश्छल भक्ति और विश्वास ने मुझे मुग्ध कर रक्खा था।

फ़्राइडे मुझको बहुत चाहता है सही, किन्तु मैंने जानना चाहा कि उसे अब अपने देश को लौट जाने की इच्छा है कि नहीं। एक दिन मैंने उससे पूछा—अच्छा फ़्राइडे, बतलाओ तो, तुम्हारे दल के लोग भी युद्ध में कभी विजयी हुए हैं?

फ़्राइडे—कभी कभी हो जाते हैं।

मैं—युद्ध में विजयी होकर बन्दियों को क्या करते हैं?

फ़्राइडे—करेंगे क्या? उन्हें मारकर खा डालते हैं।

मैं—तुम इसके पहले कभी इस द्वीप में आये थे?

फ़्राइडे—हाँ, कई बार।

मैं—यहाँ से महासमुद्र का उपकूल कितनी दूर होगा? इतनी दूर आने-जाने में डोंगी डूबती नहीं है?

फ़्राइडे—नहीं, डोंगी कभी मारी नहीं जाती। प्रातःकाल समुद्र में हवा और जल का स्रोत एक ओर बहता है; साँझ को विपरीत दिशा में—यह समझ लेने से समुद्रयात्रा में विपत्ति की आशङ्का नहीं रहती।

फ़्राइडे की इस बात से मैं समझ गया कि वह ज्वार-भाटे की बात कह रहा है। आख़िर मैंने फ़्राइडे के कथन से समझा कि मेरा यह द्वीप अरुणाक नदी के मुहाने पर है। उसी नदी के स्रोत की बात फ़्राइडे कह रहा है। आग्नेय (पूरब और दक्खिन) कोण में जो द्वीप देख पड़ता है वह त्रिनिडाद टापू

है। मैंने फ़्राइडे से उसके देश के सम्बन्ध में हज़ारों प्रश्न किये। उसे जहाँ तक मालूम था, सबका उत्तर दिया। उसकी जाति का नाम कारिब था। इससे मुझे मालूम हुआ कि नक़शे में जो क्यारिबी द्वीप है वहाँ के अधिवासी ये लोग हैं। फ़्राइडे ने कहा—"मेरे देश में जहाँ चन्द्रमा डूबते हैं उसके आगे अर्थात् पश्चिम दिशा में बहुत दूर आपके ऐसे गोरे लोग हैं। वे लोग भी मनुष्य-हत्या करने में नहीं चूकते।" इससे मैंने समझा कि वे लोग स्पेनवाले हैं। उन्हीं के बारे में यह कह रहा है।

मैंने पूछा—फ़्राइडे, तुम ऐसा कोई उपाय बता सकते हो जिससे मैं उन गोरे लोगों के पास तक पहुँच सकूँ।

फ़्राइडे—क्यों नहीं, ज़रूर पहुँच सकते हैं। दो डोंगियों पर जाना होगा।

दो डोंगियों पर जाना होगा, इसका मतलब मेरी समझ में न आया। बहुत पूछने पर मैंने समझा, कि दो डोंगियों से उसका मतलब दो डोंगियों के बराबर एक बड़ी नाव से है। अब से मैं अपने उद्धार की कुछ कुछ आशा करने लगा। मेरे जी में इस बात की आशा ने जड़ बाँधी कि इस असभ्य की सहायता से मेरा छुटकारा होना असम्भव नहीं है।

जब फ़्राइडे मेरी भाषा अच्छी तरह सीख गया तब मैंने उसको कुछ धर्म्म की शिक्षा देना उचित समझा। कारण यह कि धर्म-हीन जीवन भार मात्र है। धर्म-ज्ञान के बिना

जीना वृथा है। मैंने एक दिन उससे पूछा—अच्छा, कहो तो फ़ाइडे, तुमको किसने सिरजा है?

यह अद्भुत प्रश्न सुनकर फ़ाइडे कुछ चकित सा होकर बोला—"क्यों, मेरे पिता ने।" मैंने फिर हँसकर पूछा—अच्छा, ये सब समुद्र, धरती, पहाड़ और जङ्गल किसने बनाये हैं?

फ़ाइडे—"वीणामुख ने! वे सबसे रहित हैं। वे भूमि, समुद्र, चन्द्र, सूर्य और तारागणों की अपेक्षा भी पुरातन हैं। वही सम्पूर्ण संसार के सृष्टिकर्ता हैं। उन्हें सब लोग जगत्पिता कहते हैं। मृत्यु होने के अनन्तर सभी प्राणी उन्हीं वीणा-मुख के साथ जा मिलते हैं।" ईश्वर के सम्बन्ध में मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान देखकर मैं पुलकित हो उठा। मैं फ़ाइडे के इस अस्फुट भगवद्ज्ञान को और विशद करने के लिए उसको सर्वशक्तिमान् विधाता के सम्बन्ध में अनेक बातें सुनाने लगा। यद्यपि मैं स्वयं ख़ूब ज्ञानी या धार्मिक न था तथापि मैं भगवान् से ज्ञान की प्रार्थना करता था और फ़ाइडे को शिक्षा देता था। थोड़े ही दिनों में वह मुझसे भी विशेष धार्मिक हो गया। यहाँ हम लोगों का आपस में मत-विरोध नहीं, संस्कार की संकीर्णता नहीं, और शास्त्र की भी दुहाई नहीं है। हम दोनों व्यक्ति साक्षात् ईश्वर से ज्ञान प्राप्त करके उनको पहचानने की चेष्टा कर रहे हैं।

मैंने फ़ाइडे को अपना सारा जीवन-वृत्त सुनाया और उसको एक छुरी और एक कुल्हाड़ी पुरस्कार में दी। इससे

वह बेहद .खुश हुआ। फिर उसको मैंने बन्दूक़ का सारा तत्त्व सिखला दिया।

मैंने उसको यूरप का, विशेष करके इँगलैंड का, वर्णन करके सुनाया। अपने जातीय इतिहास, समाज, धर्म, वाणिज्य, शिक्षा आदि के विषय में बहुत सी बातें कहीं। एक दिन बात ही बात में मेरे जहाज़ डूबने की बात निकल आई। मैंने उसको अपने साथ ले जाकर टूटा हुआ जहाज़ दिखलाया। उसे देखकर फ़्राइडे ने कहा—"ऐसा ही एक जहाज़ मेरे देश में भी एक बार आया था। उस पर सत्रह गौराङ्ग थे। हम लोगों ने उन्हें डूबने से बचाया था।" मैंने पूछा—फिर उन लोगों का क्या हुआ? तुम लोगों ने मारकर उनका कलेवा तो नहीं कर लिया?

फ़्राइडे—नहीं, वे लोग अभी तक मेरे ही देश में हैं।

मैंने पूछा—यह क्यों? क्या तुम्हारे देशवासियों को मन्दाग्नि का रोग हो गया है? तुम लोगों की नरमांस-भक्षण में ऐसी अरुचि क्यों हो गई?

फ़्राइडे—हम लोग मनुष्य-मात्र को नहीं खाते। केवल बन्दियों को ही खाते हैं।

इसके कुछ दिन बाद एक दिन द्वीप के पूरब ओर पहाड़ की चोटी पर चढ़कर फ़्राइडे एकाएक मारे .खुशी के नाचने लगा। मैंने पूछा—क्यों फ़्राइडे, क्या है? कुछ कहो भी तो।

फ़्राइडे—"अहा, बड़ा आनन्द है, बड़ा महोत्सव है! प्रभो देखिए, देखिए, यहाँ से मेरा देश देख पड़ता है।" उसका

चेहरा हर्ष से प्रफुल्लित था, दोनों आँखों में प्रेमाश्रु भरे थे, सर्वाङ्ग पुलकित था। धन्य मातृ-भूमि! एक असभ्य सन्तान के हृदय में भी तुमने कैसा पवित्र प्रीति का सञ्चार कर रक्खा है! किन्तु उसका यह आनन्द मुझे अच्छा न लगा। मेरे मन में यह खटका हुआ कि यदि फ्राइडे किसी तरह अपने देश को चला गया तो सम्भव है वह धर्म की शिक्षा और कृतज्ञता भूलकर फिर अपनी पूर्व वृत्ति में प्रवृत्त हो जाय। इसके सिवा यदि वह अपने देश में जाकर मेरी चर्चा चलावे तो आश्चर्य नहीं कि दो तीन सौ आदमी यहाँ आकर भोज में मुझी को स्वाहा कर डालें। मैं उस बेचारे निर्दोषी को दोषी मानकर अविश्वास और उदासीनता की दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। स्वदेश के प्रति प्रीति प्रकट करना स्वाभाविक है। किन्तु उसकी यह स्वदेश-प्रीति मेरी आँखों में काँटे की तरह गड़ने लगी। मैंने अब उसके साथ पहले की तरह बातचीत करना छोड़ दिया। उसके साथ अब मैं उस तरह मिलता-जुलता भी न था। इसके अलावा उसका असली मतलब जानने के लिए मैं रोज़ रोज़ उससे अनेक प्रकार की जिरह करने लगा। मेरे प्रश्न का उत्तर वह ऐसा सरल और प्रेमपूर्ण देता था जिससे मेरे मन का भ्रम शीघ्र ही दूर हो जाता था। एक दिन मैं उससे यों प्रश्न करने लगा—

मैं—फ्राइडे, क्या तुमको अपने देश जाने की बड़ी अभिलाषा होती है?

फ़्राइडे—हाँ, होती क्यों नहीं। अपने देश जाने की इच्छा किसे नहीं होती ?

मैं—तुम वहाँ जाकर फिर उसी तरह नङ्गे, नर-मांस-भोजी और अधार्मिक बनोगे ?

फ़्राइडे—नहीं, नहीं, यह क्यों ? मैं अपने देश के लोगों को प्रेम और धर्म की शिक्षा दूँगा और नर-हत्या करने से उन्हें रोकूँगा।

मैं—तब तो वे लोग तुम्हें मार ही न डालेंगे ?

फ़्राइडे—नहीं, वे लोग धर्म-कर्म की बात सीखना बहुत पसन्द करते हैं। उन बृहत्-नौकारोही गौराङ्ग लोगों से वे लोग कितने ही विषय सीख चुके हैं, और भी सीखते होंगे।

मैं—तो क्या तुम देश लौट जाओगे ?

फ़्राइडे हँसकर बोला—जाऊँगा कैसे ? इतनी दूर तैरकर कोई कैसे जा सकता है ?

मैं—जाने के लिए तुमको एक नाव तैयार कर दूँगा।

फ़्राइडे—यदि आप चलें तो मैं भी आपके साथ साथ जाऊँगा।

मैं—अरे ! मैं चलूँ ? ऐसा होने से तो वे लोग मिलकर मुझे खा ही डालेंगे।

फ़्राइडे—आप ऐसा न समझें। मैं उन लोगों से आपकी दया और अपने ऊपर उपकार की बात कहूँगा। उनको श्रद्धा-भक्ति करना सिखलाऊँगा। मेरे देश में जो अभी सत्रह गौराङ्ग हैं उनसे तो कोई किसी तरह की छेड़-छाड़ नहीं करता।

अब मेरे मन में यह धुन समाई कि समुद्र पार जाकर उन सत्रह यूरोपवासियों के साथ किसी तरह भेंट करनी चाहिए। मैंने फ़ाइडे को ले जाकर अपनी डोंगी दिखलाई। हम दोनों उस पर सवार हुए। देखा, फ़ाइडे नाव खेने में पूरा उस्ताद है। मैंने कहा—"फ़ाइडे, चलो तुम्हारे देश को चलूँ।" फ़ाइडे गम्भीर भाव धारण कर चुप हो रहा। उसका अर्थ मैंने यही समझा कि इतनी छोटी डोंगी से समुद्रयात्रा करने का उसे साहस नहीं होता। मैंने कहा—"मेरे पास एक और बड़ी नाव है।" दूसरे दिन उसको वह नाव दिखाने के लिए ले गया। देखकर उसने कहा—हाँ, यह नाव बेशक बड़ी है। किन्तु बाईस-तेईस वर्ष से बे हिफ़ाज़त यों ही पड़ी रहने से सड़ गल गई है।

तब मैंने एक और बड़ी डोंगी बनाने का सङ्कल्प किया। मैंने कहा—"आओ, फ़ाइडे, मैं तुम्हारे देश जाने का प्रबन्ध कर दूँ।" फ़ाइडे बड़ी अप्रसन्नता के साथ बोला—मैंने आपका क्या अपराध किया है? आप इस दास पर क्यों इतने नाराज़ हैं?

मैं—असन्तुष्ट क्यों हूँगा? तुम देश जाना चाहते हो, उसी का प्रबन्ध करता हूँ।

फ़ाइडे—मैं आपको छोड़कर अकेला जाना नहीं चाहता।

मैं—वहाँ जाकर मैं क्या करूँगा?

फ़ाइडे—आप क्या नहीं करेंगे? आप मेरे देश का बहुत कुछ उपकार कर सकेंगे। धर्म कर्म और ज्ञान का उपदेश देकर मेरे देश के मनुष्यों को वास्तविक मनुष्य कहलाने योग्य बनावेंगे।

मैं—हाँ ! तुम नहीं जानते कि मैं कितना बड़ा नीच, अयोग्य और अधार्मिक हूँ । मैं न जाऊँगा, तुम अकेले जाओ।

फ़ाइडे ने झट एक कुल्हाड़ी उठाकर मेरे हाथ में दी और कहा—"लो साहब, मुझे निर्वासित करने के बदले एकदम मार ही डालो । इसमें तुम्हारी बड़ी दया होगी ।" आँसू भरी आँखों से मेरी ओर देखकर ऐसे दीन भाव से उसने कोमल वचन कहे कि मैं मुग्ध हो गया ।

द्वीप में डोंगियों की तो कुछ बात ही नहीं, बड़े बड़े जहाज़ बनाने के उपयुक्त बहुत से दरख़्त थे, किन्तु हमें तो डोंगी के योग्य एक ऐसा पेड़ चाहिए जो पानी के समीप हो ।

इतना सुभीता मिलना कठिन था। फ़ाइडे ने बहुत खोजकर एक ऐसा पेड़ ढूँढ़ लिया। उसने पेड़ की जड़ को आग से जलाकर खोखली करने का प्रस्ताव किया तो मैंने उसको लोहे के हथियार की उपयोगिता दिखला दी। उसने शीघ्र ही वह काम सीख लिया और बसूला तथा रुखानी के द्वारा एक ही महीने में डोंगी तैयार कर ली। इसके बाद छोटी छोटी चिकनी डालों को बिछाकर उनके ऊपर से थोड़ा थोड़ा लुढ़काकर नाव को पानी पर ले जाने में और पन्द्रह दिन लगे।

यद्यपि नाव बड़ी थी तो भी फ़ाइडे का इस तेज़ी से खेना देखकर मैं विस्मित हो गया। वह अब नाव खेकर मुझको समुद्र पार कर देने को राज़ी है। किन्तु नाव का कुछ और काम करना बाक़ी रह गया था। मस्तूल और पाल लगाना

था। मस्तूल की कमी न थी, फ्राइडे को एक सीधा सा पेड़ दिखलाकर मस्तूल बनाने की रीति बता दी। अब पाल का प्रबन्ध करना बाक़ी रहा। मेरे पास पुराने पाल के बहुत टुकड़े थे, किन्तु इतने दिनों से वे यों ही पड़े थे। उन्हें उलट पलट-कर देखा तो उनमें दो टुकड़े अच्छे निकले। उन्हीं दोनों टुकड़ों को जोड़कर पाल बनाया। यह करते धरते दो महीने लगे। इसके बाद पतवार बनाने में मुझे उतना ही परिश्रम करना पड़ा जितना एक छोटी सी नाव बनाने में करना पड़ता।

अब फ्राइडे को नौका-परिचालन की शिक्षा देने का अवसर आया। फ्राइडे नाव चलाना जानता था, किन्तु वह पतवार और पाल आदि के विषय में कुछ न जानता था। कब, कैसे, इनसे काम लेना चाहिए यह फ्राइडे को बता देना ज़रूरी था। मैं स्वयं नाव खेकर फ्राइडे को सिखलाने लगा। पतवार को जिधर घुमाओ उधर ही नाव घूमेगी। लग्गी से नाव न खेने पर भी पाल के ज़ोर से नाव मज़े में चलती है—यह देख सुनकर फ्राइडे चकित हो मेरे मुँह की ओर देखने लगा। आख़िर थोड़े ही दिनों में वह ख़ासा नाविक हो गया। किन्तु मैं कम्पास का रहस्य उसे किसी तरह न समझा सका।

क्रूसो के घर में नवीन अभ्यागत

मेरे इस द्वीपान्तर-निवास का सत्ताइसवाँ साल शुरू हुआ। मैंने यथाशक्ति परमेश्वर की अर्चा पूजा करके इस

स्मरणीय दिन का उत्सव किया। मेरे मन में न मालूम क्यों एक ऐसी धारणा जम गई थी कि मेरे उद्धार का दिन सन्निकट है। एक दिन मैंने फ़ाइडे को एक कछुवा पकड़ लाने का आदेश किया। फ़ाइडे जाने के बाद तुरन्त ही दौड़ता हुआ आया और घेरा लाँघकर मेरे पास पहुँचा। उसने हाँफते हाँफते कहा—प्रभो, प्रभो, सर्वनाश हुआ! बड़ी विपत्ति है।

मैंने विस्मित होकर पूछा—"क्या हुआ? कुछ कहो भी तो?" फ़ाइडे ने कहा—"अरे बाबा! एक! दो!! तीन! मैंने अपनी आँखों देखा है एक-दो-तीन।" यह सुनकर मैं अवाक् हो रहा। एक, दो, तीन क्या? बहुत सोचने पर समझा कि असभ्यों की तीन नावें किनारे आ लगी हैं। मैं फ़ाइडे को धैर्य्य बँधाने की चेष्टा करने लगा। उसकी यह धारणा थी कि वे लोग उसी को खोजने आये हैं और उसको पकड़ते ही मारकर खा जायँगे। मैंने उसको ढाढ़स बँधाकर कहा—घबराओ मत, देखो जो विपत्ति तुम पर है वही मुझ पर भी है। मैं उन सबों के साथ युद्ध करूँगा। क्या तुम मेरा साथ न दे सकोगे?

फ़ाइडे—हाँ, मैं बराबर साथ दूँगा और उन लोगों के साथ युद्ध करूँगा। परन्तु वे लोग गिनती में अधिक हैं।

मैं—इससे क्या? जो न भी मरेगा वह भय से अधमरा हो जायगा। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। तुम मेरी रक्षा करोगे न?

फ़ाइडे—आपके लिए मैं अपने प्राण तक देने को तैयार हूँ। केवल आपकी आज्ञा चाहिए।

तब मैंने उससे बन्दूक़ और पिस्तौल लाने को कहा। उनमें जो जो शस्त्र अच्छे थे उनमें गोली और छर्रे भरे। अपनी कमर में नङ्गी तलवार बाँधी और फ़ाइडे की कमर में ख़ञ्जर लटका दिया। जब हम दोनों हरवे-हथियार से लैस होकर युद्ध करने को तैयार हुए तब मैंने पहाड़ के ऊपर चढ़कर दूरबीन के द्वारा देखा कि वे लोग गिनती में इक्कीस थे, तीन आदमी बन्दी थे और तीन ही डोंगियाँ थीं। वे लोग क़ैदियों को खाने के आनन्द में मग्न हैं।

मैं पहाड़ से उतर आया। कुछ अस्त्र-शस्त्र फ़ाइडे को दिये और कुछ मैंने अपने साथ ले लिये। मैं जैसा कहूँ वैसा ही करना—यह उपदेश फ़ाइडे को देकर साथ आने को कहा।

चुपचाप वन के भीतर घुस करके हम दोनों आदमी उन असभ्य लोगों के पीछे एक पेड़ की आड़ में जा पहुँचे। फ़ाइडे ने झाँककर देखा और मुझसे कहा—"वे लोग एक बन्दी को मारकर खा रहे हैं। अब फिर दूसरे को मारेंगे। दूसरा व्यक्ति वही जलमग्न सत्रह गौराङ्गों में का एक है।" अपने देशवासी की ऐसी दुर्दशा की बात सुनकर मेरा अन्तःकरण एकदम विद्रोह से भर उठा। मैंने दूरबीन लगाकर देखा। बन्दी की पोशाक आदि से अनुमान किया कि वह यूरोप देश-वासी है। एक मज़बूत लता से उसके हाथ-पैर बँधे हुए हैं। वह किनारे पर एक तरफ़ बालू पर पड़ा है। यह देखकर मैं बीस पचीस डग और आगे बढ़ एक झुरमुट की ओट में छिप

रहा। अब मेरे और उन असभ्यों के बीच क़रीब अस्सी गज़ का फ़ासला रहा होगा।

मैंने देखा, उन्नीस आदमी एक जगह बैठे हैं और दो आदमी उस यूरोपियन को मारने गये हैं। वे दोनों निहुरकर उसका बन्धन खोल रहे हैं। अब देर करना ठीक न समझकर मैंने फ़ाइडे से कहा—"देखो, मैं जैसा करता हूँ वैसा ही तुम करो।" अब मैंने एक बन्दूक़ पास रख ली और दूसरी उठाकर निशाना ठीक किया। फ़ाइडे ने भी वैसा ही किया। मैंने कहा—"फ़ायर!" दोनों बन्दूक़ें एक साथ गरज उठीं।

मेरी अपेक्षा फ़ाइडे का लक्ष्य अच्छा बैठा। उसकी गोली से दो असभ्य हत और तीन घायल हुए। मेरी गोली से एक हत और दो आहत हुए थे, बाक़ी सब भयभीत होकर चौंक उठे। वे लोग खड़े हो चकित दृष्टि से चारों ओर ताकने लगे कि यह अलक्षित मृत्यु किस तरफ़ से आती है, किस ओर भागने से बचेंगे, इसका भी कुछ अन्दाज़ उन्हें नहीं था। हम दोनों ने फिर बन्दूक़ें मारीं। इन बन्दूक़ों में छर्रे भरे थे। इस कारण अबकी बार दो ही मरे। किन्तु छर्रे लगने से इतने अधिक लोग घायल हुए कि वे लोहू लुहान होकर, पागलों की भाँति चिल्लाते हुए, इधर उधर दौड़ने लगे। थोड़ी ही देर के बाद उन घायलों में से तीन मनुष्य धरती पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

इसके बाद हम दोनों भरी हुई एक एक बन्दूक़ लेकर झुरमुट की ओट से निकलकर बाहर आये। उन लोगों ने

ज्योंही हमारी ओर देखा त्योंही हम ख़ूब ज़ोर से गरज उठे। भारी भारी बन्दूकों को कन्धे पर रक्खे हुए हम फुर्ती से दौड़ नहीं सकते थे, तथापि जहाँ तक हो सका तेज़ी से जाकर बन्दियों के पास पहुँचे। जो बन्दियों को खाने गये थे वे दोनों आदमी तथा तीन व्यक्ति और डरकर नाव की शरण लेने जाते थे। मैंने फ़ाइडे से कहा—"मारो उन लोगों को।" फ़ाइडे साहस करके उनकी ओर कुछ दूर तक और दौड़ गया; तब तक असभ्यगण नाव पर सवार हो चुके थे और भागने को तैयार थे। इसी बीच फ़ाइडे ने दो ही गोलियों में उन लोगों का काम तमाम कर दिया।

इस अरसे में मैंने अपनी छुरी निकालकर बन्दी के हाथ-पैरों का बन्धन काट डाला और पोर्चुगीज़ भाषा में पूछा—"आप कौन हैं?" उन्होंने लैटिन भाषा में उत्तर दिया—"मैं किरिस्तान हूँ।" उत्तर तो उन्होंने दे दिया पर भूख-प्यास से वे ऐसे व्याकुल थे कि भली भाँति बोल नहीं सकते थे। मैंने झट अपनी जेब से दूध-रोटी निकालकर उनको खाने के लिए दी। तब फिर मैंने पूछा—"आप किस देश के रहनेवाले है?" उन्होंने कहा—"स्पेन के।" फिर उन्होंने अपने आकार, इङ्गित और चेष्टा से मुझे कृतज्ञता सहित अनेक धन्यवाद दिये। मैंने टूटी-फूटी स्पेनिश भाषा में कहा—"महाशय, परिचय पीछे होगा, अभी आपसे हो सके तो यह पिस्तौल और तलवार लीजिए तथा शत्रुओं को मारिए।" हथियार पाते ही मानों उन्हें नवजीवन मिल गया। उनका उत्साह और साहस सौगुना

बढ़ गया। उन्होंने बड़े वेग से जाकर तलवार से दो दुश्मनों को दो टुकड़े कर डाला। असभ्यगण अतर्कित भाव से आक्रान्त होकर कितने ही मरकर गिरने लगे और कितने ही भय से मूर्च्छित होकर गिरने लगे।

मैंने अपनी तलवार और पिस्तौल स्पेनियर्ड को दी थी। इससे मैंने अपनी भरी हुई बन्दूक़ को विशेष आवश्यकता के लिए रख छोड़ा था। मैंने फ़्राइडे को पुकारकर कहा—झुरमुट की आड़ से और दो बन्दूकें ले आओ। वह दौड़कर ले आया। मैं उसको अपनी बन्दूक़ देकर दूसरी भरने लगा। फ़्राइडे से कह दिया कि बन्दूक़ ख़ाली हो जाने पर मुझको दे देना और भरी हुई ले लेना। मैं बन्दूक़ भर ही रहा था कि एक असभ्य वीर ने हाथ में काठ की तलवार लेकर स्पेनियर्ड पर आक्रमण किया। स्पेनियर्ड दुर्बल होने पर भी बड़ा साहसी था। वह उसके साथ बड़ी बहादुरी से युद्ध करने लगा किन्तु दीर्घकाय और बलिष्ठ असभ्य ने कुछ परवा न करके स्पेनियर्ड को धक्का मारकर गिरा दिया और उसके हाथ से तलवार छीनने लगा। तब स्पेनियर्ड ने तलवार को दूर फेंककर पिस्तौल की एक ही गोली से उस नीच को मार डाला।

फ़्राइडे ने अपना ख़ञ्जर हाथ में लेकर पराजित शत्रुओं का पीछा किया और जिनको पकड़ पाया उन्हें मार डाला। स्पेनियर्ड ने मेरे पास आकर मुझसे एक बन्दूक़ माँग ली और उससे दो असभ्यों को घायल किया। इक्कीस मनुष्यों में से

केवल चार आहत और अनाहत व्यक्ति डोंगी पर सवार होकर भाग चले। फ़ाइडे ने उन पर लक्ष्य करके दो गोलियाँ मारीं।

फ़ाइडे उन लोगों का पीछा करने को प्रस्तुत हुआ। उनका भागना मुझे भी पसन्द न था। कारण यह कि वे लोग अपने देश जाकर शायद अपनी मण्डली को ख़बर दें और वहाँ से दो तीन सौ आदमी आकर हम लोगों को मारकर खा डालें। इसलिए फ़ाइडे के प्रस्ताव पर स्वीकृत होकर मैं झट कूदकर नाव पर सवार हुआ। वहाँ देखा कि एक आदमी, जिसके हाथ-पाँव बँधे हैं, डोंगी के भीतर पड़ा है और मारे डर के अधमरा सा हो रहा है। उसने सिर्फ़ शोर-ग़ुल सुना है, वह देखने तो कुछ पाया ही नहीं। अतएव उसका भयभीत होना स्वाभाविक ही था। मैंने तुरन्त उसका बन्धन काट दिया। फिर उसको उठाने की चेष्टा की; किन्तु वह उठे बिना ही गोंगाँ करने लगा। तब मैंने फ़ाइडे से कहा कि इसको समझा दो कि यह डरे नहीं और इसे कुछ खाने को भी दो। फ़ाइडे के समझाने पर वह उठ बैठा। फ़ाइडे ने ज्योंही उस व्यक्ति का मुँह देखा त्योंही उसको अपने गले से लगाकर बड़ा ही स्नेह जनाया। वह हँसकर, रोकर और नाच-गाकर ख़ुशी से पागल हो उठा। बड़ी कठिनाई से मैंने समझा कि वह फ़ाइडे का बाप था।

इस अघटित घटना से हम उन असभ्य भगोड़ों का पीछा न कर सके। कुछ देर के बाद जब मैंने समझा कि अब फ़ाइडे

का आनन्दोच्छ्वास कुछ कम हो चला है तब मैंने उसको पुकारा। वह मेरे सामने आ गया। मैंने पूछा, क्यों रे! तूने अपने बूढ़े बाप को कुछ खाने को दिया है या केवल आदर ही कर रहा है? फ़ाइडे ने कहा—"नहीं, खाने को तो कुछ भी नहीं दिया। मेरे पेट में आप ही आग लगी थी। तब मैंने अपने बैग से रोटी और मुट्ठी भर किसमिस निकालकर उसे दी। उसने सब ले जाकर बाप को दे दिया। इसके बाद वह पलक मारते ही वहाँ से ग़ायब हो गया। मैंने उसे बहुत पुकारा, पर उसने मेरी एक न सुनी। थोड़ी ही देर में वह घड़े भर जल और दो रोटियाँ लेकर हाज़िर हो गया। उसने दोनों रोटियाँ मुझको दीं और जल अपने बाप को दिया। वह पानी पीकर स्वस्थ हो गया। मुझे भी बड़ी प्यास लगी थी। मैंने भी थोड़ा सा जलपान किया।

मैंने थोड़ा सा जल स्पेनियर्ड को भी देने के लिए कहा। वह बेचारा एक पेड़ के नीचे घास पर लेटा हुआ विश्राम कर रहा था। वह बहुत थका-माँदा था। सख़्ती से बाँधे जाने के कारण उसके हाथ पैर सूज गये थे। फ़ाइडे ने रोटी और पानी लेकर उसको दिया। वह उठकर बैठा और खाने लगा। मैंने भी उसे, पास जाकर, एक मुट्ठी किसमिस दी। उसने मेरे मुँह की ओर जिस दृष्टि से देखा, वह दृष्टि कृतज्ञता के भाव से भरी थी। यद्यपि युद्ध के समय उसने ख़ूब बहादुरी दिखाई थी किन्तु इस समय वह एकदम बेसुध हो गया था।

फ़ाइडे जब तक वहाँ था तब तक मिनट मिनट पर दृष्टि फेरकर अपने पिता को देख लेता था। एक बार उसने पीछे की ओर घूमकर देखा, उसको पिता देख न पड़े। वह फ़ौरन् उठकर बूढ़े के पास जा पहुँचा। उसने जाकर देखा, उसके वृद्ध पिता आराम करने की इच्छा से सो रहे हैं। तब फिर वह हमारे पास लौट आया। मैंने उससे कहा—"स्पेनियर्ड को उठाकर नाव पर रख आओ। इसको घर ले जाना होगा।" फ़ाइडे ख़ूब बलिष्ठ था। वह स्पेनियर्ड को पीठ पर लादकर नाव पर रख आया। इसके बाद वह ऐसी शीघ्रता से नाव को खेकर ले चला कि मैं किनारे किनारे उसके साथ बराबर नहीं जा सकता था। उसने नाव को खाड़ी में ले जाकर झट उस पर से उतरकर फिर दौड़ लगाई। मैंने पूछा—"कहाँ जा रहे हो?" उसने कहा—"दूसरी डोंगी भी लाता हूँ।" प्रश्न-उत्तर समाप्त होते न होते वह दृष्टि-पथ से निकल गया। मैं पैदल चलकर खाड़ी तक पहुँचा भी नहीं कि उसने दूसरी डोंगी लाकर हाज़िर कर दी। उसने मुझे पार उतारकर उन दोनों अभ्यागतों को भी पार उतारा। वे दोनों अतिथि चलने में असमर्थ थे। मैं इन दोनों को घर तक ले चलने का उपाय सोचने लगा। झटपट एक खटोली सी तैयार करके उस पर उन दोनों को लिटाकर फ़ाइडे और मैं उठाकर घर ले आया।

अतिथि-सेवा

स्पेनियर्ड और फ़्राइडे के पिता को उठाकर हम लोग अपने पहले घेरे के भीतर तो ले आये। अब देखा कि दूसरे घेरे को लाँघकर उनको भीतर ले जाना कठिन है। घेरा काट डालने को भी जी नहीं चाहता था। तब मैंने फ़्राइडे की सहायता से शीघ्र ही एक झोंपड़ा तैयार किया। उसके ऊपर डाल-पात का छप्पर कर दिया। भीतर पयाल पर कम्बल बिछा दिया।

खाने-पीने के बाद मैंने फ़्राइडे से कहा कि युद्ध-क्षेत्र में मेरी बन्दूक़ें आदि जो चीज़ें पड़ी हों उन्हें तुम एक नाव ले जाकर उठा लाओ। उसके दूसरे दिन उसी के द्वारा कुल मुर्दों को मिट्टी में गड़वा दिया। कारण यह कि बाहर उन्हें यों ही छोड़ देने से इस द्वीप में रहना कठिन हो जाता। उसने सब काम अच्छी तरह कर दिया।

अब मेरे टापू में प्रजा की संख्या तीन हुई। पहले था मैं राजा, अब मानों हुआ सम्राट्! यह भावना मेरे मन में बड़ा ही हर्ष उपजाती थी। मैं ही समग्र द्वीप का अधीश्वर हूँ। किन्तु प्रजा के तीनों आदमियों का धर्म और मत तीन तरह का था। फ़्राइडे प्रोटेस्टेंट (protestant) किरिस्तान था, उसका पिता नास्तिक था, और स्पेनियर्ड कैथोलिक किरिस्तान था। किन्तु मैं इससे क्षुण्ण न था। मेरे राज्य में मज़हब की स्वाधीनता है।

मैं फ़्राइडे को मध्यस्थ करके अपने नवीन अतिथियों के साथ वार्तालाप करने में प्रवृत्त हुआ। मैंने फ़्राइडे के बाप से

पूछा—"तुम क्या सोचते हो कि इन चार भगोड़ों के मुँह से ख़बर पाकर असभ्यगण दल बाँधकर यहाँ आवेंगे और मुझ पर आक्रमण करेंगे?" उसने कहा—"मेरा ख़याल तो ऐसा नहीं है। जैसी तेज़ हवा बह रही थी उससे यही मालूम होता है कि नाव डूब जाने से वे लोग मर गये होंगे या दूसरे देश में पहुँच गये होंगे। दूसरे देश के लोग उन्हें जीते जी कब जाने देंगे! कदाचित् वे बचकर अपने देश को लौट भी गये होंगे तो भी अब इस देश में न आवेंगे क्योंकि वे आपस में कह रहे थे कि "दो स्वर्गीय देवों ने आकर वज्राघात से उन सबको मार डाला है।" वे असभ्य लोग आवें चाहे न आवें पर हम लोग सर्वदा चौकन्ने रहने लगे। अब हम लोग चार आदमी हुए। सौ आदमियों का सामना कर सकेंगे—ऐसा जी में भरोसा हुआ।

अब फिर छुटकारे की चिन्ता होने लगी। फ़ाइडे के पिता ने भी मुझको भरोसा दिया कि उनके देश में जाने पर सब लोग मेरे साथ सद्व्यवहार करेंगे। स्पेनियर्ड ने भी कहा कि उस देश में जो और पोर्चुगीज़ और स्पेनियर्ड लोग हैं उन लोगों के साथ कोई बुरे तौर से पेश नहीं आता। सभी लोग उनका सम्मान करते हैं। वहाँ जाने पर वे लोग भी मेरा सम्मान करेंगे। मैंने कहा—"यदि मैं वहाँ न जाऊँ और उन यूरोपियनों को यहीं बुला लूँ तो हम लोग मिलकर एक बहुत बड़ा जहाज़ बना सकेंगे। किन्तु सच तो यह है कि मनुष्य

एक विचित्र जीव होता है। जब तक उन लोगों को अपना मतलब निकालना होगा तब तक तो वे मेरा उपकार मानेंगे, पीछे से चाहे मेरा ही सर्वनाश करेंगे। जानते तो हो, स्पेन और इँगलैंड की चिरशत्रुता है।" स्पेनियर्ड ने कहा—यह बात अब नहीं है। वे लोग वहाँ बेकार पड़े हैं, इससे किसी तरह का साहाय्य पाने ही से वे कृतार्थ होंगे। आप कहें तो मैं वहाँ जाकर उन लोगों से पूछ आऊँ। उन लोगों के पास अस्त्र-शस्त्र, कपड़े-लत्ते आदि कुछ नहीं हैं। असभ्यों की दया के भरोसे बैठे हैं। वे लोग आपसे सहायता पाने पर आपकी आज्ञा के अनुसार चलेंगे, क्योंकि वे सभी भद्र और सहृदय हैं।

स्पेनियर्ड की बात सुनकर मैं उन लोगों की सहायता करने को राज़ी हुआ और उसे वहाँ भेजने का प्रबन्ध भी करने लगा। किन्तु उसने एक आपत्ति की। उस आपत्ति में दूर-दर्शिता और सत्यता दोनों का परिचय मिला। स्पेनियर्ड मेरे पास एक महीने से है। मेरा जीवन-निर्वाह किस तरह होता है, इसे वह अच्छी तरह समझ गया है। मेरे पास जो सञ्चित अनाज था वह एक आदमी के लिए यथेष्ट था किन्तु अभी तो वह चार मुँह में जाता है। उस पर यदि और यूरोपियन भाई आ जायँ तो उतने अनाज से कै दिन गुज़र होगी। इसलिए एक फ़सल अन्न ख़ूब अधिकता से उपजाकर तब उन लोगों को बुलाना ठीक होगा। नहीं तो वे लोग एक विपत्ति से निकलकर दूसरी विपत्ति में आकर अप्रसन्न हो सकते हैं।

उसकी इस सलाह से प्रसन्न होकर हम चारों आदमी खेती के काम में प्रवृत्त हुए। एक महीने बाद ज़मीन को अच्छी तरह जोत गोड़कर बीज बो दिया।

साथी मिल जाने से मैं अब निर्भय होकर टापू में जहाँ जी चाहता, जाता था। मैं चुन चुनकर पेड़ दिखलाने लगा और फ्राइडे तथा उसका बाप दोनों उन्हें काटने लगे। स्पेनियर्ड को मैंने उनकी देखभाल पर नियुक्त किया। मैंने जिस तरह एक एक पेड़ से एक एक तख्ता निकाला था उसी तरह निकालना उन्हें भी बता दिया। क्रमशः उन्होंने एक दर्जन बड़े बड़े तख्ते तैयार किये।

इसके बाद पारी बाँधकर हम और फ्राइडे एक दिन और स्पेनियर्ड और फ्राइडे का पिता दूसरे दिन बकरे पकड़ने के लिए जाने लगे। थोड़े ही दिनों में हम लोगों ने बीस पचीस बकरे और बढ़ा लिये, पचास-साठ मन सूखे अंगूर इकट्ठे कर लिये। फ़सल तैयार होने पर धान और जौ भी बहुत हुए। अनाज रखने के लिए और कितनी ही टोकरियाँ बुननी पड़ीं। खाद्य-सामग्री पूर्ण रूप से सञ्चित हो जाने पर मैंने स्पेनियर्ड से उसके साथियों को बुला लाने को कहा। उससे मैंने कह दिया कि "जो व्यक्ति शपथपूर्वक मेरा अनुगत होना स्वीकार न करे उसे न लाना। जो लोग मेरी अधीनता स्वीकार करें उनको स्वीकृतिपत्र पर मेरी अनुगामिता के विषय में हस्ताक्षर करना होगा।" उस समय मुझे इसका ख़याल न रहा कि उन लोगों

के पास स्याही, क़लम और कागज़ भी तो कुछ न होगा। जो हो, स्पेनियर्ड और फ़्राइडे के पिता डोंगी पर सवार होकर चले गये। मैंने उनके साथ दो बन्दूकें, कुछ गोली-बारूद और आठ दिन का भोजन रख दिया।

आज सत्ताइस वर्ष में अपने उद्धार की इस प्रकृत आयोजना से मेरा हृदय आनन्द से आप्लावित हो रहा था। कुँवार की पूर्णिमा की रात में अनुकूल वायु देखकर वे दोनों रवाना हुए।

क्रूसो के उद्धार की पूर्व सूचना

स्पेनियर्ड और फ़्राइडे के पिता को रवाना करके हम नित्य ही उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे। आठ रोज़ बीतने पर भी उनके दर्शन न हुए। एक दिन सबेरा हो जाने पर भी मैं बिछौने पर पड़ा रहा। फ़्राइडे दौड़कर आया और बोला—"वे आ रहे हैं।" मैं बिछौने से उछलकर उठ खड़ा हुआ और झट कपड़े पहनकर दौड़ता हुआ बाहर आया। हड़बड़ी में बन्दूक़ लेना भूल गया। बाहर आकर देखा कि एक नाव द्वीप के दक्षिण ओर समुद्र के किनारे लगने का उपक्रम कर रही है। उस तरफ़ से स्पेनियर्ड के आने की संभावना न थी। मैंने फ़्राइडे को पुकारकर कहा—"अभी सावधानी से छिपे रहो। ये लोग वे नहीं हैं। ये शत्रु हैं या मित्र, यह पहले जान लेना चाहिए।" मैंने दूरबीन लेकर पहाड़ की चोटी पर चढ़कर

देखा। यहाँ से करीब ढाई मील पर दक्खिन-पूरब के कोने में एक जहाज़ है जो किनारे से डेढ़ मील के भीतर ही होगा। दूरबीन से साफ़ दिखाई दिया। वह अँगरेज़ी जहाज़ था। उसके साथ जो नाव थी वह अँगरेज़ी ढँग की थी।

नौका धीरे धीरे आकर ठहरने के लिए घाट खोज रही थी। नाविकगण खाड़ी तक जहाज़ को नहीं लाये, उन्होंने समुद्र के किनारे ही जहाज़ लगाया। खाड़ी की ओर न आकर उन लोगों ने हमारे हक़ में अच्छा ही किया। नहीं तो हमारा पता पाकर वे लोग हमारा सर्वस्व लूट ले जाते। जब वे उतरकर किनारे पर आये तब देख पड़ा कि वे अँगरेज़ हैं। कुल ग्यारह आदमी थे। उनमें तीन मनुष्य अस्त्र-रहित थे जो बन्दी से जान पड़े। उन तीनों में एक व्यक्ति को अनेक प्रकार से विनय की मुद्रा करते देखा; अन्य दो व्यक्ति भी विनती करते थे, किन्तु वे दोनों प्रथम व्यक्ति की भाँति अधीर न थे। इन लोगों को देखकर मैं कुछ निश्चय न कर सका। फ़ाइडे ने कहा—"देखिए देखिए, अँगरेज़ लोग भी नर-मांस खाते हैं।"

मैं—नहीं फ़ाइडे, तुम कभी ऐसा ख़याल न करना।

फ़ाइडे—नहीं, वे उन क़ैदियों को ज़रूर खायँगे।

मैं—नहीं, नहीं, तुम क्या समझो। यह हो सकता है कि वे इन तीनों को मार डालें पर खायँगे नहीं, यह सच जानो।

असल मामले को समझ न सकने पर भी उन तीनों की मृत्यु देखने के भय से मेरा दिल धड़क रहा था। एक बार एक

व्यक्ति को ऊपर की ओर तलवार उठाते देख मेरा लोहू सर्द हो गया। मैं सोचने लगा कि इस समय यदि स्पेनियर्ड और फ़ाइडे के बाप यहाँ रहते तो अच्छा होता। फिर देखा कि वे लोग तीनों बन्दियों को छोड़कर टापू देखने के लिए भिन्न भिन्न दिशा में चले गये। तीनों बन्दी हताश होकर वहीं बैठ गये।

ठीक ज्वार आने पर वे लोग किनारे आये और बेख़बर होकर टापू देखने की इच्छा से इधर उधर घूमने लगे। अभी घूम ही रहे थे कि पानी घट जाने से उनकी किश्ती सूखे में पड़ी रह गई। उसमें दो आदमी थे किन्तु वे दोनों सो गये थे। एक आदमी एकाएक जाग उठा और नाव को सूखे में देख भौंचक सा हो रहा। फिर सँभलकर उसने भ्रमणकारियों को ख़ूब ज़ोर से चिल्लाकर पुकारा। थोड़ी ही देर में सभी लौट पड़े। किन्तु वहाँ दलदल थी और किश्ती ख़ूब भारी थी इससे वे लोग उसे ठेलकर पानी में न ले जा सके। तब फिर घूमने चले गये। मैंने समझा कि अब दस घण्टे के पहिले यह किश्ती हिल डोल न सकेगी। तब तक अँधेरा हो आवेगा। इतना समय पाकर मैं युद्ध का सामान ठीक करने लगा।

दोपहर के समय सभी धूप से घबराकर वृक्ष की छाया में लेटकर ऊँघने लगे। केवल वे तीनों बन्दी पेड़ की छाँह में जागते हुए बैठे थे। मैं उनके साथ भेंट करने का निश्चय करके हरवे-हथियारों से लैस हो और फ़ाइडे को साथ ले क़िले से निकला। विचित्र पोशाक के कारण हम लोगों का चेहरा

देखने में बिलकुल भूत का सा था। हम लोगों ने पैरों की आहट बचाकर धीरे धीरे, छिपे तौर से, उनके पास जाकर स्पेनिश भाषा में पूछा—"महाशय, आप लोग कौन हैं?" यह सुनकर वे लोग चकित हुए और चुपचाप हमारे मुँह की ओर देखने लगे। मैंने देखा कि वे भागने का उपक्रम कर रहे हैं, तब मैंने अँगरेज़ी में कहा—"महाशय, मुझको देखकर आप लोग डरें नहीं, बल्कि आप लोग यह समझें कि एक अप्रार्थित मित्र आपके निकट आया है।" उनमें से एक व्यक्ति सम्मान दिखाने के लिए टोपी उतारकर बोला—"ज़रूर ही आप ईश्वर-प्रेरित हैं, क्योंकि हम लोगों का साहाय्य करना मनुष्य के सामर्थ्य से बाहर की बात है।" मैंने कहा—"आपका कहना ठीक है, आप यह तो बतावें कि मामला क्या है।" यह सुनकर उसकी आँखों से झरझर आँसू गिरने लगे। वह भय से काँपता हुआ बोला—मैं नहीं जानता कि मैं देवता, गन्धर्व या मनुष्य किसके साथ बातें कर रहा हूँ।

मैं—आप भय न करें। भगवान् देवता या गन्धर्व किसी को भेजते तो उनका लिबास और रूप-रङ्ग हमसे कहीं अच्छा दिखाई देता। मैं अँगरेज़ हूँ और आप लोगों की सहायता करने की इच्छा से आया हूँ। कहिए, क्या समाचार है?

वह—हम लोगों का हाल यही है कि मैं जहाज़ का कप्तान हूँ। नाविकगण विद्रोही होकर मुझको मारने पर उद्यत हुए थे। बहुत कहने-सुनने और विनती करने पर उन लोगों ने

इस निर्जन द्वीप में हम लोगों को छोड़कर चले जाने का विचार किया है। इनमें एक मेरा मेट है और एक नौकारोही है।

मैं—उन अत्याचारियों के पास बन्दूकें हैं?

कप्तान—हाँ, दो बन्दूकें हैं। वे जहाज़ में रक्खी हैं।

मैं—तो आप लोग निश्चिन्त रहिए। मैं अभी उनका नाश करूँगा या हो सकेगा तो उन्हें बन्दी करूँगा।

कप्तान—उनमें दो मनुष्य उस मण्डली के मुखिया हैं। उनको पकड़ लेने से और लोग आप ही वशीभूत हो जायँगे।

वे लोग कहीं हमको देख न लें, इसलिए कप्तान आदि तीनों को साथ ले मैं अपने क़िले के सामनेवाले उपवन में जा छिपा। तब मैंने फिर कप्तान से कहा—देखिए महाशय, यदि आप लोग दो शर्तें मंज़ूर करें तो मैं आप लोगों के बचाने का उपाय कर सकता हूँ।

कप्तान ने मेरा मतलब समझकर कहा—यदि आप जहाज़ पर क़ब्ज़ा कर लें तो उसे आप अपना ही समझिए। यदि यह नहीं तो हम लोगों को आप अपना आज्ञाकारी समझें। अन्य दो व्यक्तियों ने भी कप्तान की इस बात पर ज़ोर दिया।

मैंने कहा—मेरी दो शर्तें यही हैं कि जब तक आप लोग मेरे इस टापू में रहें, मेरे अधीन होकर रहें और मेरी आज्ञा के अनुसार चलें। कोई काम आ पड़ने पर मैं अस्त्र दूँ तो काम हो जाने पर फिर वह मुझे लौटा दें और जहाज़ अधिकार में आ जाने पर मुझको तथा मेरे भृत्य को मुफ़्त इँगलैंड पहुँचा दें।

कप्तान बोला—मैं जितने दिन जीवित रहूँगा, आपकी आज्ञा के अधीन रहूँगा।

तब मैंने कहा—"अच्छा, यह लीजिए तीन बन्दूकें और गोली-बारूद। अच्छा, यह बतलाइए कि अब क्या करना होगा?" उन्होंने कृतज्ञता प्रकट कर मेरे ही ऊपर सम्पूर्ण भार सौंपा। मैंने कहा कि वे लोग सोये हुए हैं, चलो अभी गोली से उनको महानिद्रा के अधिकारी बना दें। किन्तु कप्तान ने इसमें अपना उत्साह नहीं दिखाया। यदि बिना मारे ही काम निकल जाय तो वैसा ही करना ठीक होगा। यही उनकी राय थी। तब मैंने उन्हीं को आगे जाने की आज्ञा दी।

इस तरह की बात-चीत हो ही रही थी कि इतने में उन सबों में कई मनुष्य जाग उठे और हम लोगों ने दूर से देखा कि दो आदमी उठ खड़े हुए। मैंने कप्तान से पूछा—"उनमें विद्रोहियों का सर्दार है कि नहीं?" उसने कहा—नहीं।

मैं—"अच्छा, तो उन्हें जाने दो। ईश्वर ने उन्हें बचाने के लिए पहले ही जगा दिया है। किन्तु असल अपराधी बच जाय तो यह तुम्हारा दोष है।" इस बात से उत्तेजित होकर वे तीनों मनुष्य बन्दूक, तलवार और पिस्तौल लेकर बाहर निकले। कप्तान के दोनों साथी आगे बढ़कर चिल्लाने लगे। नाविकों में एक व्यक्ति जागता था, वह पीछे की ओर देखकर साथियों को चिल्लाकर पुकारने लगा। किन्तु जिस घड़ी उसने पुकारा उसी घड़ी कप्तान के दोनों साथियों ने बन्दूकें

दाग दीं। एक तो तत्काल मर गया, और दूसरा अत्यन्त आहत हो गया। वह खूब ज़ोर से चिल्लाकर साथियों को पुकारने लगा। कप्तान ने आगे बढ़कर कहा—"अब साथियों को न पुकारकर भगवान् को पुकार जिससे तेरा कल्याण हो। अब तुझे समय नहीं है।" उन्होंने बन्दूक़ के कुन्दे से उसे ऐसा मारा कि वह गिर पड़ा और कुछ न बोला। वहाँ तीन आदमी और थे, उनमें एक आदमी कुछ घायल हो गया था। मेरे वहाँ पहुँच जाने पर वे लोग अपने को निरुपाय देख दयाभिक्षा माँगने लगे। कप्तान ने कहा—"यदि तुम लोग मेरे विश्वासी और अनुगत होकर रहने की प्रतिज्ञा करो तो मैं तुम्हारा अपराध क्षमा कर सकता हूँ।" उन लोगों ने अपनी करतूत के लिए अनुताप करके भविष्य में भलमनसाहत के साथ रहने की शपथ की। तब हम लोगों ने उनकी जान बख़्श दी। पर अभी उनके हाथ-पैर बाँध रखने का मैंने आदेश किया।

हम लोग जब इधर ये काम कर रहे थे तब फ़्राइडे और कप्तान का मेट जाकर डोंगी का पाल, पतवार आदि वस्तुएँ उठा लाये। प्रतिपक्षियों के तीन मनुष्य बन्दूक़ों की आवाज़ सुनकर धीरे धीरे हम लोगों के पास आये। यहाँ कप्तान को जयी देखकर उन लोगों ने आप ही बन्दी होना स्वीकार किया।

अब मुझसे कप्तान का परिचय होने लगा। पहले मैंने अपने जीवन का समस्त इतिहास सुनाया। उसने विस्मित होकर आदि से अन्त तक मनोयोगपूर्वक सुना और मेरा इतिहास

उत्तरोत्तर अद्भुत घटनाओं से भरा हुआ जानकर उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसकी आँखों से आँसू बह चले। वह कुछ बोल न सका। तब मैं उन सबों को अपने घर ले आया और जो कुछ मेरे पास था उससे उन लोगों का आतिथ्य-सत्कार किया। फिर अपना घर-द्वार खेती-बारी आदि उन्हें दिखलाया।

कप्तान मेरे क़िले और क़िले के सामने की वाटिका की प्रशंसा करने लगा। मैंने कहा, मेरा एक और विनोद-स्थान है जो पीछे दिखलाऊँगा। अभी जहाज़ के दख़ल करने का उपाय ठीक करना चाहिए। कप्तान ने इसे स्वीकार किया। परन्तु उपाय क्या है? जहाज़ पर अब भी छब्बीस विद्रोही हैं। इँगलैंड के क़ानून के अनुसार विद्रोहियों के लिए प्राणदण्ड निर्धारित था। वे विद्रोही हैं, एक तो इसलिए दूसरे प्राणों के भय से वे लोग प्राणपण से युद्ध करेंगे। कारण यह कि हम लोगों की विजय होने पर उनकी मृत्यु होगी। हम लोग थोड़े से आदमी उन लोगों पर कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं?

यह सुनकर मैंने यह उपाय सोचा कि किसी तरह जहाज़ के लोगों को भुलाकर टापू में ले आवें और उन्हें गिरफ़्तार करें। शायद वे लोग अपने साथियों के आने में विलम्ब देखकर उन्हें ढूँढ़ने आवेंगे, पर अब वे अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर ही आवेंगे। जो हो, इस समय सूखे में जो नाव पड़ी है उसे बेकार कर देना चाहिए। यह स्थिर करके हम लोगों ने नाव में अस्त्र-शस्त्र, गोली-बारूद आदि जो कुछ पाया निकाल लिया

और उसके पेंदे में छेद कर दिये। आशा न थी कि हम लोग जहाज़ पर दखल कर सकेंगे किन्तु उन लोगों के जहाज़ लेकर चले जाने पर हम लोग इस बोट की मरम्मत करके स्पेनियर्ड लोगों से जा मिलेंगे। यही बहुत है।

हम लोग जब सारी बातें सोच रहे थे तब जहाज़ के लोग बन्दूक़ की आवाज़ करके और पताका हिलाकर नाव को बुलाने लगे। बार बार बन्दूक़ की आवाज़ करने पर भी जब उन्होंने देखा कि नाव नहीं हिली तब जहाज़ से एक और डोंगी उतारकर उस पर कई एक नाविक सवार हो किनारे की ओर आने लगे। मैंने दूरबीन लगाकर देखा, दस ग्यारह आदमी बन्दूकें लिये चले आ रहे हैं।

कप्तान कहने लगा कि इतने आदमियों के साथ हम लोग कैसे भिड़ सकेंगे। मैंने हँसकर कहा—हम लोगों के सदृश अवस्थापन्न लोगों को फिर भय क्या? जीना-मरना दोनों बराबर। युद्ध का भार मुझे सौंपकर तुम निश्चिन्त रहो। वे लोग अभी तो मेरे बन्दी हुए ही जा रहे हैं।

नाव को समुद्र-तट के समीप आते देख मैंने बन्दियों को अपनी गुफा में भेज दिया। फ़्राइडे ने उन लोगों को खाद्य और रोशनी देकर समझा दिया कि यदि तुम लोग भागने की चेष्टा न करके चुपचाप रहोगे तो दो तीन दिन के बाद छोड़ दिये जाओगे; नहीं तो प्राणदण्ड होगा। किन्तु उन लोगों ने यह न जाना कि गुफा के द्वार पर फ़्राइडे निगरानी के लिए नहीं रहा।

कप्तान की सिफ़ारिश और उनकी प्रतिज्ञा पर विश्वास करके दो बन्दियों को स्वाधीनता देकर हम लोगों ने अपने दल में ले लिया। अब हम सात आदमी हथियारबन्द हुए (मैं, फ़्राइडे, तीन आदमियों सहित कप्तान, और दो बन्धन-मुक्त बन्दी)। इससे पूरा भरोसा हुआ कि हम लोग अब दस आदमियों का सामना कर सकते हैं।—यदि कप्तान का यह कहना ठीक हुआ कि उन दस नाविकों में तीन चार बिलकुल निर्बल हैं तब तो कोई बात ही नहीं।

नाव किनारे लगते ही वे लोग नाव को ऊपर खींच लाये। यह देखकर मैं ख़ुश हुआ। वे लोग उतरते ही दौड़कर पहली नाव के पास गये। नाव की समस्त वस्तुओं को अपसारित और उसके पेंदे में एक बड़ा सा छेद देखकर वे अवाक् हो रहे। कुछ देर खड़े होकर उन लोगों ने बहुत कुछ तर्क वितर्क किया। इसके बाद उन लोगों ने दो-तीन बार ज़ोर ज़ोर से अपने साथियों को पुकारा। किन्तु उससे कुछ फल न हुआ। तब उन लोगों ने एक साथ बन्दूकों की आवाज़ की जिनके शब्द से सारा वन प्रतिध्वनित हो उठा। पर इससे भी किसी का कुछ पता न लगा। तब उन लोगों ने चकराकर निश्चय किया कि साथी मारे गये। अब उन्होंने जहाज़ पर लौट जाने का उपक्रम किया। नाव को पानी में ले जाकर सभी सवार हुए। यह देखकर हम लोग हताश हो गये। मैंने सोचा कि इस दफ़े ये लोग जहाज़ पर जाते ही

जहाज़ खोलकर चल देंगे। किन्तु वे लोग थोड़ी दूर जाकर न मालूम फिर क्या सोचकर लौट आये। इस दफ़े सात आदमी नाव से उतरकर ऊपर आये और तीन आदमी नाव की हिफ़ाज़त के लिए नाव में रहे। यह देखकर भी हम लोग निराश हुए। क्योंकि नाव को अधिकार में न कर सकने पर सभी प्रयत्न व्यर्थ होगा। वे लोग जहाज़ पर जाकर ख़बर देंगे और ख़बर पाते ही जहाज़ चल देगा। तो भी हम लोग सुयोग की अपेक्षा करते रहे। सात आदमियों को किनारे पर उतारकर नाव के माँझियों ने पानी में नाव ले जाकर लंगर डाल दिया। हम लोग एकाएक नाव पर आक्रमण करें इसकी भी अब सम्भावना न रही। जो लोग किनारे उतरे थे वे एक साथ आगे-पीछे होकर आने लगे। क्रमशः वे लोग उसी पहाड़ पर चढ़ने लगे जिसके नीचे मेरा घर था। वे हम लोगों को नहीं देखते थे। वे लोग ज़रा और हमारे नज़दीक आ जाते तो बड़ा अच्छा होता। हम लोग उन पर गोली चला सकते या दूर जाते तो भी अच्छा होता। हम लोग वहाँ से बाहर निकल जाते।

धीरे धीरे वे लोग पर्वत की चोटी पर चढ़ गये। वहाँ से वन और उपत्यका बहुत दूर तक देख पड़ती थी। वे लोग ज़ोर ज़ोर से पुकारते पुकारते थककर चुप हो रहे, पर किसी तरफ़ से कुछ उत्तर न आया। वे लोग और ऊपर जाने का साहस न करके एक दरख़्त के नीचे बैठकर आपस में सलाह

करने लगे। वे लोग यदि सो रहते तो हम उन्हें सहज ही में वश में कर लेते। किन्तु वे लोग विपत्ति के भय से जागते ही रहे।

आखिर वे लोग एकाएक उठ खड़े हुए और नाव की ओर चले। उन लोगों ने साथियों को ढूँढ़ना छोड़कर अब जहाज़ पर जाना ही स्थिर किया। यह देखकर मेरा जी सूख गया। हठात् उन लोगों को लौटाने का एक उपाय सूझा। खाड़ी के पास जाकर खूब ज़ोर से चिल्लाने के लिए मैंने फ़ाइडे और मेट को कहा। इसके बाद नाविकगण यदि उस शब्द की टोह में इस तरफ़ आवें तो उसी तरह चिल्लाते हुए दूर निकल जायँगे और उन लोगों को चक्कर में डालकर फिर मेरे पास लौट आवेंगे।

नाविक लोग नाव पर चढ़ने जा रहे थे कि फ़ाइडे और मेट ने चिल्लाकर उन लोगों को पुकारा। उन लोगों ने सुनकर उत्तर दिया और शब्द की ओर लक्ष्य करके दौड़े; कुछ देर में खाड़ी के पास पहुँचे। पानी में तैरकर पार होने का साहस न करके उन लोगों ने पार उतार देने के लिए माँझियों को पुकारकर नाव मँगाई। माँझियों ने खाड़ी में नाव लाकर उन लोगों को पार उतार दिया और नाव को एक पेड़ के तने से बाँध रक्खा। इस दफ़े नाव में सिर्फ़ दो आदमी रहे। मैं तो ऐसा चाहता ही था। मैंने कप्तान आदि सबको साथ ले चुपके से जाकर नाव के दोनों मनुष्यों को गिरफ़्तार कर लिया। ये उन्हीं जाहिलों के दल के थे। ये सहज ही अधीन होकर हम लोगों के साथ मिल गये।

इधर फ्राइडे और मेट नाविकों को पुकारकर एक वन से दूसरे में घुमा-फिराकर ले जाने लगे। आखिर उन लोगों को ऐसे घने जंगल में ले जाकर छोड़ दिया कि सन्ध्या होने के पहले नाव पर उन लोगों के लौट आने की सम्भावना न रही।

अब हम लोग इनके आने की प्रतीक्षा करने लगे। फ्राइडे लौटकर हम लोगों के साथ आ मिला। कई घंटों के बाद वे नाविक भी थके-माँदे परस्पर बक-झक करते शोर-गुल मचाते नाव के पास लौट आये। जब इन्होंने देखा कि नाव सूखे में लगी है और नाव के दोनों रक्षक गायब हैं तब तो उनके भय और विस्मय की सीमा न रही। वे परस्पर तर्क वितर्क करने लगे—हम लोग न मालूम कैसे जादूगर के द्वीप में आ गये हैं! न जाने हमारी क्या दशा हो। वे सभी आर्तनाद करने लगे। फिर उन्होंने नौकारक्षक दोनों साथियों का नाम ले लेकर बार बार पुकारा, किन्तु कहीं से कुछ उत्तर न मिला। तब वे लोग पागल की तरह कभी दौड़ने, कभी बैठने और कभी हाथ मलने लगे; कभी क्रोध से अपने सिर के बाल नोचने लगे। मेरे अनुयायी इसी समय उन लोगों पर आक्रमण करने के लिए व्यग्र हो उठे किन्तु मैं इसकी अपेक्षा भी विशेष सुविधा खोज रहा था। मैं चाहता था कि मेरे दल का तो कोई न मरे और उनकी तरफ़ भी कम आदमी मरें। हम लोग सर्वाङ्ग ढककर धीरे धीरे कुछ दूर और आगे बढ़े, किन्तु फ्राइडे और कप्तान घुटनों के बल से एकदम उनके पास चले गये।

जहाज़ के जो कर्मचारी मुसाफ़िरों को जहाज़ पर चढ़ाते और पार उतारते हैं वे सबसे बढ़कर बदमाश और सब फ़सादों की जड़ होते हैं तथा अपने को जहाज़ का मालिक समझ बैठते हैं। किन्तु इस समय सबकी अपेक्षा वही अधिक कातर और भयभीत हो गये थे। उनके कुछ कहते ही कप्तान उन पर गोली चलाने के लिए उतावला होने लगा। वे लोग ज्योंही कुछ समीप आये त्योंही कप्तान और फ़्राइडे कूदकर आगे जा खड़े हुए और उन पर गोली चला दी। गोली लगते ही जहाज़ का नायब कप्तान धरती पर लोट गया। दूसरा भी गिरा, पर तत्काल मरा नहीं। प्राय: दो घंटे तक जीता रहा। तीसरा आदमी भाग गया। तब मैं अपने दल-बल के साथ आगे बढ़ा। मैं सेनापति, फ़्राइडे मेरा सहकारी सेनाध्यक्ष और कप्तान आदि मेरे सैनिक थे। हम लोगों ने अँधेरे में नाव के पास जाकर उन लोगों से आत्मसमर्पण करने को कहा। उन लोगों ने भी झट अस्त्र त्याग करके प्राण-भिक्षा चाही। कप्तान ने कहा—"तुम लोगों का प्राण लेना या न लेना हमारे सेनापति की इच्छा के अधीन है।" हम लोगों ने उनके हाथ-पैर बाँधकर अपने क़ब्ज़े में कर लिया।

अब हम लोगों को नाव की मरम्मत करके जहाज़ पर आक्रमण करना बाक़ी रहा। मुझे आशा होने लगी कि अब मेरे उद्धार का समय समीप है। मैंने दूर से कप्तान को पुकारा। एक आदमी ने जाकर कहा, "कप्तान साहब, सर्कार

आपको बुलाते हैं।" कप्तान ने झट उत्तर दिया, "तुम हुज़ूर से जाकर कह दो कि वह अभी हाज़िर होता है।" यह सुनकर सभी नाविक चुप हो रहे। उन लोगों ने समझा कि इस द्वीप के स्वामी अपना दल-बल लेकर समीप ही कहीं ठहरे हैं। कप्तान को मेरे पास आने का उपक्रम करते देखकर उन लोगों ने कहा—"हम लोगों से बड़ी ग़लती हुई, अब ऐसा काम कभी न करेंगे। आप अपने सेनापति से हम लोगों पर दया करने को कहिए।" कप्तान ने कहा—"मेरे सेनापति बड़े दयालु हैं, इसी से उन्होंने अब तक तुम लोगों को पेड़ से लटकाकर फाँसी नहीं दी। वे तुम लोगों को इँगलैंड ले जायँगे, वहाँ क़ानून के अनुसार जो उचित दण्ड होगा दिया जायगा।" वे लोग जानते थे कि आईन के अनुसार इस अपराध का दण्ड फाँसी है। इसलिए उन लोगों ने बिनती करके कहा—तो हम लोगों को इसी द्वीप में छोड़ दीजिए, इँगलैंड न ले जाइए।

उन लोगों से इस प्रकार बात-चीत करके कप्तान मेरे पास आया। मैंने उससे जहाज़ दख़ल करने की बात कही। बन्दियों को दो भागों में बाँटकर जो बदमाश थे उन्हें गुफा के भीतर और जो अल्प-अपराधी थे उन्हें कुञ्जभवन में बन्द कर दिया।

इस विचित्र स्थान में सारी रात क़ैद रहकर उन लोगों ने यथेष्ट शिक्षा पाई। सबेरे जब कप्तान उन लोगों के पास गया तब वे धरती में गिरकर क्षमा प्रार्थना करने लगे और सेनापति से सिफ़ारिश करने के लिए हाथ जोड़ने लगे।

कप्तान ने कहा, "यदि तुम लोग जहाज़ पर दख़ल करने में मदद दोगे तो सेनापति तुम्हारा अपराध क्षमा कर सकते हैं।" इस प्रस्ताव पर वे लोग बड़े आग्रह के साथ सम्मत हुए। तब उनमें जो पाँच व्यक्ति अच्छे थे वे चुन लिये गये और अवशिष्ट व्यक्ति उन लोगों के ज़ामिन-स्वरूप क़ैदी बनाकर रख लिये गये। यदि वे लोग जहाज़ पर दख़ल होने में सहायता देंगे तो क़ैदी छोड़ दिये जायँगे, नहीं तो फाँसी दी जायगी। तब उन लोगों ने समझा कि सेनापति कोई साधारण व्यक्ति नहीं है; वे लोग डरते डरते इस प्रस्ताव पर राज़ी हो गये।

मैंने कप्तान से कहा, "हम और फ़्राइडे जहाज़ पर दख़ल करने न जायँगे; हम लोग क़ैदियों के पहरे पर रहेंगे। क्या तुम और सब लोगों को साथ ले जहाज़ पर आक्रमण करने का साहस कर सकते हो ? कप्तान राज़ी होकर युद्धयात्रा की तैयारी करने लगा। फूटी हुई नाव की मरम्मत करके दो नावें जाने के लिए ठीक की गईं। एक में जहाज़ के यात्री और चार मनुष्य, दूसरी नाव में कप्तान, मेट और पाँच नाविक सवार हुए। वे लोग आधी रात के समय जहाज़ पर जा पहुँचे। जहाज़ के लोगों ने अँधेरे में समझा कि उनके पक्ष के आदमी लौट आये हैं। कप्तान और मेट ने जहाज़ पर चढ़ते ही बन्दूक़ के कुन्दे से दूसरे मेट और मिस्त्री को मार-कर अपने क़ाबू में कर लिया। इधर कप्तान के साथी नाविकों ने जहाज़ के डेक के लोगों को बाँध लिया। जो

लोग कोठरी में थे वे वहीं बन्दी कर लिये गये। इसके बाद वे लोग नीचे उतर गये। नीचे के कमरे में विद्रोही दल का नया कप्तान था। वह शोर-गुल सुनकर जाग उठा और दो तीन आदमियों को साथ ले बन्दूक़ द्वारा युद्ध करने को तैयार हो गया। मेट को सामने पाते ही गोली मार दी। इससे मेट का हाथ टूट गया। और भी दो आदमी घायल हुए, पर कोई मरा नहीं। और लोगों को पुकारकर मेट नये कप्तान पर टूट पड़ा और उसके सिर में पिस्तौल दाग़ दिया। गोली उसकी कनपटी छेदकर बाहर निकल गई। वह फिर हिला तक नहीं। तब जहाज़ के और लोगों ने आप ही वश्यता स्वीकार की।

क्रूसो का द्वीप से उद्धार

मैं समुद्र-तट पर दो बजे रात तक बैठा रहा। आशा और सन्देह के हिंडोले पर चढ़कर मन कभी ऊपर और कभी नीचे का झोंका खा रहा था। ऐसे समय जहाज़ पर सात बार तोप की आवाज़ हुई। सुनकर जी में जी आया। फक से निःश्वास त्यागकर सँभल बैठा, और यह जानकर आनन्द की सीमा न रही कि कप्तान ने जहाज़ पर क़ब्ज़ा कर लिया। तब मैं निश्चिन्त होकर घर आया और सो रहा। दिन भर के कठिन परिश्रम और घोर उद्वेग से मैं इतना क्लान्त था कि लेटते ही गहरी नींद आ गई।

अचानक तोप का शब्द सुनकर मैं जाग पड़ा। सुना, कोई मुझको पुकार रहा है "सेनापति, सेनापति"। अच्छी तरह नींद टूट जाने पर पहचाना कि यह कप्तान का कण्ठ-स्वर है। मैं सीढ़ी लगाकर पहाड़ पर चढ़ा। कप्तान वहीं से मुझे पुकार रहा था। मैं उसके पास ज्योंही गया त्योंही वह मेरे गले से लिपट गया और उँगली उठाकर जहाज़ की ओर दिखलाया। कुछ देर आनन्द के आवेग में पड़कर वह कुछ बोल न सका। फिर आनन्दोच्छ्वास को रोककर गद्गद कण्ठ से बोला— आप मेरे प्राणदाता हैं, हितैषी हैं! यह आप ही का जहाज़ है। हम लोगों के जीवन, धन सभी आपके हैं।

मैंने जहाज़ की ओर तजवीज़ करके देखा, वह तट से आध मील पर था। तब मैंने जाना कि जहाज़ दख़ल हो जाने पर कप्तान उसे आगे बढ़ा लाया है।

मैं आनन्द से एकदम विदेह हो गया। कप्तान मुझको छाती से लगाये खड़ा था नहीं तो मैं ज़मीन पर गिर पड़ता। वह भी मेरे ही ऐसा आनन्द-विमुग्ध था। आनन्द और उल्लास ने मेरे सभी भावों को उथल पुथल कर दिया था जिससे मैं कुछ बोल न सकता था। जब हृदय में आनन्द को रहने की जगह न मिली तो वह उमड़कर आँसुओं के रूप में आँखों की राह बाहर निकल आया। आनन्द का कुछ अंश बाहर निकल जाने से मुझे कुछ बोलने का अवसर मिला। मैंने भी कप्तान को दृढ़ आलिङ्गन करके उसे अपना बन्धु और उद्धार-कर्ता कहा।

यह घटना ईश्वर की अतर्क्य महिमा और अपार दया के विधान का निदर्शन है। मैंने हृदय से ईश्वर को धन्यवाद दिया।

यह सब कार्य होने के बाद हम लोग सोचने लगे कि अब बन्दियों का क्या करना चाहिए। जो लोग शातिर बदमाश हैं उनको साथ रखना हम लोगों के हक़ में अच्छा है या नहीं, यह विचारने का विषय है। कप्तान ने कहा, "उन बन्दियों में दो व्यक्ति पहले नम्बर के बदमाश हैं। वे लोग किसी तरह क़ाबू में नहीं आ सकते। यदि उनको साथ ले चलना हो तो हथकड़ी-बेड़ी डालकर ले चलिए। वहाँ जाकर उन्हें पुलिस के सिपुर्द कर दिया जायगा।" तब मैंने कहा—अच्छा, यदि उन्हें इसी टापू में रहने को राज़ी कर सकूँ तो?

कप्तान—मैं इसे हृदय से पसन्द कर सकता हूँ।

मैं—अच्छा, उनको बुलाकर तुम्हारे सामने ही कहता हूँ।

फ़्राइडे और दो बन्धन-मुक्त नाविकों को कुञ्ज-भवन से पाँचों क़ैदियों को बुला लाने के लिए भेजा। उन बन्दियों के आने पर मैं नई पोशाक़ पहनकर सेनापति के वेष में उनके पास गया। मैंने अपराधियों से कहा—तुम लोगों के विरुद्ध आचरण करने की बात मैंने सुनी है। यह ईश्वर की कृपा ही समझनी चाहिए कि तुम लोग अधिक पाप करने के पहले ही बन्दी हुए हो। जहाज़ पर भी मेरा क़ब्ज़ा हो गया है। तुम लोग अपने नये कप्तान की मृत्यु भी अपनी ही आँखों देखोगे। अच्छा, अब तुम लोगों को क्यों न प्राणदण्ड दिया जाय?

उनमें एक व्यक्ति सबका अगुआ होकर बोला—"इस सम्बन्ध में हम लोगों को कुछ कहने की गुञ्जाइश नहीं। किन्तु जब हम लोग गिरफ्तार किये गये थे तब कप्तान ने कहा था कि तुम लोगों को प्राणभय न होगा। इस समय हम लोग उसी का स्मरण दिलाते हैं।" मैंने कहा—"मैं तुम लोगों के साथ कौन सा दया का व्यवहार करूँ? मैंने इस टापू को छोड़कर कप्तान के जहाज़ पर सवार हो इँगलैंड जाने का निश्चय किया है। तुम लोगों को इँगलैंड ले जाता हूँ तो वहाँ विद्रोह के अपराध में तुम लोगों का प्राणवध अनिवार्य होगा। इसलिए इस टापू में रहने के सिवा तुम लोगों की प्राण-रक्षा का दूसरा उपाय नहीं। यदि तुम लोग पसन्द करो तो मैं तुम लोगों को इस टापू में छोड़ सकता हूँ।" मेरी इतनी बड़ी दया देख वे लोग कृतज्ञतापूर्वक मेरे प्रस्ताव पर सम्मत हुए। तब मैंने उन लोगों को बन्धनमुक्त कर दिया।

मैंने कप्तान को यह कहकर जहाज़ पर भेज दिया कि जाओ, जहाज़ पर सब इन्तज़ाम करो। इधर मैं अपने साथ जहाज़ पर ले जाने योग्य वस्तुओं की व्यवस्था करने लगा। कल सबेरे जहाज़ पर सवार होकर रवाना हूँगा।

कप्तान के चले जाने पर मैंने बन्दियों से कहा—"तुम लोगों ने जो यहाँ रहना पसन्द किया यह बड़ा अच्छा किया। इँगलैंड जाने से तुम लोगों को ज़रूर फाँसी होती। यहाँ जीते-जागते तो रहोगे। विशेषत: पाँच आदमी एक साथ मिलकर

बड़े सुख चैन से रह सकोगे। मैं तो यहाँ अकेला ही इतने दिन बना रहा।" मैंने अपना सब इतिहास उनको कह सुनाया।

सब प्रबन्ध करके मैं दूसरे दिन जहाज़ पर सवार हुआ। उस रात को यात्रा न हो सकी। दूसरे दिन सबेरे उन निर्वासित पाँच व्यक्तियों में से दो आदमी तैरकर जहाज़ के पास आ गये। वे अपने साथियों के दुःस्वभाव की निन्दा करके घिघियाकर कहने लगे—"दुहाई कप्तान साहब, हमको जहाज़ पर चढ़ा लीजिए फिर चाहे हमें फाँसी दे दीजिएगा। हम इन लोगों के साथ टापू में न रहेंगे। वे बुरी तरह से हमारा ख़ून कर डालेंगे।" उनकी प्रार्थना को बारंबार अस्वीकार कर अन्त में उनके शपथ करने पर कप्तान ने उन्हें जहाज़ पर चढ़ा लिया। जहाज़ पर चढ़ाकर उन्हें अच्छी तरह डाँट-डपट बता दी। तब से ये दोनों बड़ी भलमनसाहत के साथ रहने लगे।

मैं अपनी चमड़े की टोपी, छत्ता और तोता अपने साथ जहाज़ में लाया था। मेरे पास जो कुछ रुपये थे उनका लाना भी मैं न भूला। इतने दिन यों ही बेकार पड़े रहने के कारण रुपयों में मोर्चा लग गया था। देखने से कोई चाँदी का रुपया न मानता। मैंने उनको मलकर झलका लिया।

इस प्रकार अनेक सुख-दुःख भोगकर १६८६ ईसवी की १९ वीं दिसम्बर को मैंने द्वीप छोड़ा। ठीक इसी तारीख़ को मैं शैली के मूर का दासत्व छोड़कर बजरे के सहारे भागा

था। इस द्वीप में अट्ठाईस वर्ष दो महीने उन्नीस दिन एकान्त-वास करने पर आज मेरा उद्धार हुआ। आज मैं अपने देश को जा रहा हूँ; मेरे आनन्द का वारापार नहीं। धन्य जगदीश्वर! तुम्हारी कृपा से आज इस आशातीत सुख का भागी बना हूँ।

क्रूसो का स्वदेश-प्रत्यागमन और धनलाभ

मुद्दत के बाद १६८७ ईसवी की ग्यारहवीं जून को मैं इँगलैंड लौट आया। आज पैंतीस वर्ष बाद मैं स्वदेश पहुँचा।

देश लौटकर देखा, मैं यहाँ सम्पूर्ण रूप से अपरिचित हो गया हूँ। मेरे उपकारी मित्र कप्तान की स्त्री, जिसके पास मेरा कुछ रुपया जमा था, अब तक जीती थी; किन्तु विधवा हो जाने के कारण वह बड़ी दरिद्रा हो गई थी। मैंने अपना धन उससे नहीं माँगा बल्कि उस समय मेरे पास जो कुछ पूँजी थी उसमें से भी कुछ देकर उसकी सहायता की। मैं कप्तान का उपकार और सदय व्यवहार न तो कभी भूला और न भूलूँगा। मैं लन्दन से यार्क शहर को गया। वहाँ जाकर क्या देखा—मेरे पिता, माता और भाई सब मर गये हैं, केवल मेरी दो बहनें और दो भतीजे बच रहे थे। घरवालों ने समझ लिया कि मैं विदेश में जाकर मर गया, इससे मेरे पिता मुझको पैतृक धन का कुछ भी अंश न दे गये। इससे मुझे अब स्वावलम्बन से निर्वाह करना होगा। परन्तु मेरे पास जो कुछ पूँजी थी उससे आश्रम का खर्च चलना कठिन था।

जहाँ से कुछ मिलने की आशा न थी वहीं से मुझे कुछ साहाय्य मिला। विद्रोही नाविकगण जिस कप्तान को मारने के लिए मेरे टापू में ले गये थे उसने देश में आकर मेरी बात लोगों से कही, और मैंने जिस युक्ति से विद्रोहियों के हाथ से जहाज़ ले लिया था वह हाल भी उसने जहाज़ के मालिक से कहा। मैंने जिन महाजनों के जहाज़ और माल की रक्षा की थी उन्होंने मिलकर मुझे लगभग तीन हज़ार रुपया पुरस्कार दिया। यह रुपया भी मुझे निश्चिन्त होकर बैठने और अन्य कोई व्यवसाय न करके जीवन-निर्वाह के लिए यथेष्ट न था। इसलिए मैंने सोचा कि लिसबन जाकर ब्रेज़िल में जो मेरी खेती आदि होती थी उसका पता लगाऊँ। मैं अगले साल के एप्रिल महीने में जहाज़ पर सवार होकर लिसबन पहुँचा। मेरा परम भक्त फ्राइडे मेरे साथ ही था। लिसबन पहुँचकर मैंने, बहुत ढूँढ़ने पर, अपने कप्तान का पता पाया। इन्होंने मुझको आफ्रिका के उपकूल में जहाज़ पर चढ़ाकर ब्रेज़िल पहुँचा दिया था। वे अब बूढ़े हो गये थे। उनका सयाना बेटा ब्रेज़िल जाने-आनेवाले जहाज़ का कप्तान था। न तो वृद्ध ने मुझे पहचाना और न मैंने उन्हें। मैंने अपना परिचय देकर उन्हें मुद्दत की बात का स्मरण करा दिया।

प्रथम मिलन के प्रणय-सूचक कुशल-प्रश्न होने के बाद मैंने उनसे अपनी खेती-बारी का हाल पूछा। उन्होंने कहा—"नौ वर्ष से हम ब्रेज़िल नहीं गये। जब गये थे तब तुम्हारे कार-

परदाज़ को जीवित देख आये थे। किन्तु जिन दो व्यक्तियों को तुम अपनी सम्पत्ति सौंप आये थे वे मर गये हैं।" मेरा धन इस समय क़रीब क़रीब गवर्नमेंट ने अपने हाथ में कर लिया है। मैं या मेरा कोई वारिस यदि उस धन का दावेदार खड़ा न होगा तो कुछ अंश सरकार ज़ब्त कर लेगी और कुछ धर्मकार्य में ख़र्च कर देगी। अभी मैं या मेरी ओर से और कोई वहाँ जाय तो मुझे सम्पत्ति मिल जायगी।

उन्होंने मेरी खेती का अंश मुझको दिला देने का प्रस्ताव किया। मैंने कहा कि मैं स्वयं ब्रेज़िल जाकर अपना अंश ले लूँगा। उन्होंने कहा, "जाना चाहो तो जा सकते हो, नहीं तो मैं यहीं से सब प्रबन्ध कर सकता हूँ।" मैं राज़ी हो गया। उन्होंने अदालत में जाकर शपथ-पूर्वक निवेदन किया कि "राबिन्सन अभी तक जीवित हैं। इन्हें अपने कृषि कारख़ाने का अंश मिलना चाहिए।" उन्होंने मेरा दावा मंजूर कराकर ब्रेज़िल-गामी एक परिचित महाजन के हाथ वहाँ को परवाना भेज दिया।

सात महीने के भीतर ही मैंने ब्रेज़िल से अपने कार-परदाज़ का प्रेम-सूचक पत्र और अपनी सम्पत्ति का हिसाब पाया। मैं अब तक जीता हूँ, यह सुनकर सभी ने ख़ूब आनन्द प्रकट करके चिट्ठी लिखी थी। मेरी सम्पत्ति का मोटा हिसाब यही था कि मेरे अंश का कुल पचहत्तर हज़ार रुपया जमा है। इसके सिवा वहाँ सालाना पन्द्रह हज़ार रुपये मुनाफ़े की ज़मींदारी है।

इतनी दौलत लेकर मैं क्या करूँगा? सबसे पहले मैंने उन्हीं परम मित्र वृद्ध कप्तान की सहायता की जिन्होंने मेरे प्राण बचाये थे। फिर इँगलैंड-वासिनी कप्तान की पत्नी का स्मरण हो आया। उसके स्वामी ने पहले पहल मेरी बन्धुहीन जीवनावस्था में मुझे सहायता दी थी। मैंने उस उपकार के बदले उनकी विधवा पत्नी को डेढ़ हज़ार रुपया भेज दिया और पत्र लिखा कि फिर कुछ सहायतार्थ भेजूँगा। अपनी दोनों बहनों को भी डेढ़ डेढ़ हज़ार रुपया अर्थात् दोनों के बीच तीन हज़ार रुपया भेज दिया। उपकारी, सम्बन्धी तथा अनाथ असहायों को—जो कुछ मुझसे बन पड़ा—मैंने दिया; किन्तु ऐसी कोई जगह ढूँढ़ने से भी न मिली जहाँ मैं अपने रुपयों को निःशङ्क होकर रख सकता। वृद्ध पोर्चुगीज़ कप्तान और विधवा कप्तान-पत्नी यही दोनों व्यक्ति मेरे प्रति अत्यन्त दयालु थे और इन पर मेरा पूर्ण विश्वास था। किन्तु वे दोनों बहुत वृद्ध हो गये थे, इसलिए उनके पास जमा करने का साहस न होता था। आख़िर मैंने अपना रुपया-पैसा बाँधकर इँगलैंड जाने ही का निश्चय किया। तत्काल ब्रेज़िल जाने की बात मुल्तवी रखकर ब्रेज़िलवासी मित्रों को कुशलपत्र और उपहार भेजकर सब वस्तुओं के पाने की सूचना दे दी।

जीवन-वृत्तान्त के प्रथम अध्याय का उपसंहार

मैं सोचने लगा कि अब किस मार्ग से इँगलैंड जाऊँ। यद्यपि जल-पथ मेरे भाग्य में वैसा सुखदायी न था फिर भी विशेष रूप से परिचित और सह्य हो गया था। यह सब होने पर भी न मालूम इस दफ़े जल-पथ से जाने को जी क्यों नहीं चाहता था। मैं जल-पथ के सुभीते की बात सोचने लगा; पर किसी तरह जल-पथ से जाने को राज़ी न हुआ। अन्तः-करण के इङ्गित को मानना चाहिए। मैंने जिन दो जहाज़ों पर जाना तय किया था उनमें एक को तो रास्ते ही में किसी लुटेरे जहाज़ ने गिरफ़्तार कर लिया और दूसरा कुछ दूर जाकर टूट गया।

मैंने स्थल-मार्ग से जाना तय किया। वृद्ध पोर्चुगीज़ कप्तान ने एक साथी ढूँढ़ दिया। वह लिसबन के एक अँगरेज़ व्यवसायी का बेटा था। वह भी इँगलैंड जायगा। इसके बाद दो अँगरेज़ और दो पोर्चुगीज़ भी आ मिले। अब हम लोग छः यात्री हुए। साथ में पाँच नौकर थे। कुल ग्यारह आदमी हुए। हम लोगों ने अस्त्र-शस्त्रों से लैस हो, घोड़े पर सवार हो, लिसबन से यात्रा की। एक तो मैं सबसे उम्र में बड़ा था, दूसरे साथ दो नौकर थे। इसके सिवा मैं ही मूलयात्री था, इससे सभी मुझको कप्तान और सर्दार कहने लगे।

हम लोगों ने मेड्रिड में कई दिन ठहरकर शहर देखा। परन्तु ग्रीष्म बीतने ही पर था, यह जानकर हम लोग झटपट वहाँ से रवाना हुए। अक्तूबर के मध्य ही में कहीं कहीं बर्फ़ पड़ने लगी है, यह सुनकर डर से प्राण सूखने लगे। फ़्रांस की सीमा तक आते आते हम लोगों ने देखा कि सचमुच पाला पड़ रहा है। मैं उत्कट गरमी के मुल्क में बहुत दिनों तक रह चुका था इससे यह जाड़ा असह्य मालूम होने लगा।

एक दिन साँझ होने के कुछ पहले एकाएक तीन बड़े बड़े भेड़िये और उनके पीछे पीछे एक भालू जङ्गल से निकलकर हम लोगों के पीछे पड़ गये। ज़रा सी कसर रह गई थी, नहीं तो वह हिंस्र जन्तु पथ-प्रदर्शक को वहीं ख़तम कर देता। वह घबराकर हम लोगों को पुकारने लगा। पिस्तौल निकालकर उन पर गोली चलाने की भी सुध उसको न रही। पथ-प्रदर्शक के पास ही फ़्राइडे था। उसने घोड़ा दौड़ाकर भेड़िये को गोली से मार गिराया। उस व्यक्ति के समीप फ़्राइडे था इसी से वह बच गया; दूसरा कोई रहता तो इस तरह साहस करके भेड़िये का मुक़ाबला न कर सकता। दूर से गोली मारने में यह भय था कि क्या जाने भेड़िये को लगे या न लगे।

जो हो, हम लोग भेड़िये को देखकर बहुत ही डरे। फ़्राइडे के तमंचे की आवाज़ होते ही जङ्गल के दोनों ओर भेड़ियों का घोर गर्जन और हुंकार होने लगा। वह कठोर शब्द पर्वत की कन्दरा में गूँजने से दूना भयङ्कर हो उठा। फ़्राइडे की गोली

लगने से एक भेड़िया वहाँ ठंडा हो गया और दो भेड़िये भागकर जङ्गल में जा घुसे। उनके आक्रमण से घोड़े को तो कुछ नुक़सान न हुआ किन्तु पथप्रदर्शक के हाथ और घुटनों में ज़ख्म हो गया। भेड़िये ने उसको नोच लिया था

अब दिन नाम लेने को भी न रहा। सूर्यास्त होने पर अन्धकार का साम्राज्य क्रमशः बढ़ चला। यह हम लोगों के पक्ष में कुछ भी सुखकर न था। जितना ही अन्धकार बढ़ने लगा उतना ही अधिक भेड़ियों का कोलाहल होने लगा। इतने में क्या देखता हूँ कि भेड़ियों का एक झुण्ड हम लोगों की बाँईं ओर, एक झुण्ड सामने और एक झुण्ड पीछे आकर हम लोगों को घेरकर खड़ा हो गया। हम लोगों ने घोड़े से उतरकर एक त्रिभुजाकार व्यूह बनाया और उसके बीच में घोड़ों को कर लिया। भेड़िये गुर्रा गुर्राकर हम लोगों की ओर दौड़े और जिस पेड़ की आड़ में हम लोग छिपे थे उस पर कूद कूदकर चढ़ने लगे। मैंने अपने साथियों से कह दिया कि एक के बाद एक बन्दूक़ छोड़ी जाय। पहली ही बेर हम लोगों ने बहुत भेड़िये मार डाले; किन्तु इतने पर भी वे बुरी तरह आक्रमण कर रहे थे। सामने के झुण्ड को जब तक हम मार भगाते थे तब तक पीछेवाला झुण्ड हम लोगों पर हमला करता था। इसलिए हमको आगे-पीछे दोनों ओर लगातार बन्दूक़ों की आवाज़ करनी पड़ी। चार-पाँच बेर की आवाज़ में हम लोगों के हाथ से सत्रह अठारह भेड़िये मरे और इससे दुगुने घायल हुए तो भी वे ऐसे निडर

थे कि पीछे न हटे। एक एक बार गोली खाकर क्षण भर खड़े रहते और फिर एकाएक आगे आते थे। तब मैंने अपने दूसरे नौकर से कहा—"तुम इस कटे हुए पेड़ के तने पर बहुत सी बारूद बिछा दो।" वह बारूद बिछाकर ज्योंही वहाँ से हट आया त्योंही भेड़ियों का झुण्ड उस बारूद पर आ गया। जिस काठ पर बारूद रक्खी गई थी उस पर मैंने तुरन्त तमंचे की आवाज़ की। तमंचे की आग का स्पर्श होते ही वह लम्बी बारूद की राशि एक साथ बल उठी। इससे कितने ही भेड़िये झुलस गये, कितने ही भय से उछलकर हम लोगों के व्यूह के भीतर आ पड़े, उनको एक ही पल में हम लोगों ने तितर बितर कर दिया। बाक़ी एकाएक प्रकाश होते देख पीछे की ओर मुड़े। तब मैंने फिर सबको बन्दूक़ मारने का आदेश किया। बन्दूक़ मारकर हम लोग ख़ूब ज़ोर से चिल्ला उठे। जितने भेड़िये बच रहे थे वे पूँछ उठाकर भागे। हम लोगों ने साहस करके कुछ दूर तक उनका पीछा किया और कितनों ही को मार डाला।

हम लोगों ने अब की बार कोई पचास साठ भेड़िये मारे। दिन होता तो और मारते। मार्ग निष्कण्टक होते ही हम लोग वहाँ से रवाना हुए। हम लोगों को क़रीब एक मील रास्ता और तय करना था। जाते जाते हम लोगों ने कई बार भेड़ियों का गरजना सुना। रास्ते में कितनी ही विभीषिकाएँ देखीं। एक घंटे के बाद हम लोग एक शहर में पहुँचे। वहाँ

के लोग भी भेड़ियों और भालुओं के भय से त्रस्त होकर पहरा देते थे। वहाँ भी निश्चिन्त होकर रहने का सुभीता न था।

दूसरे दिन सबेरे हम लोगों के पथ-प्रदर्शक को, ज़ख़्मी हाथ के सूजने से, ज्वर हो आया। वह वहाँ से आगे न जा सका। तब हम लोग एक नये पथ-प्रदर्शक को साथ ले टुलुज शहर को गये। मैंने अपने कान मलकर सौगन्द खाई कि फिर कभी इस रास्ते कहीं न जायँगे। इस मार्ग की अपेक्षा जलमार्ग में नाव डूब जाने से पानी में डूब जाना कहीं अच्छा है।

टुलुज से पैरिस, वहाँ से कैले, और कैले से १४ वीं जनवरी को हम लोग निर्विघ्न डोवर पहुँचे। मैंने अपनी पूर्व-परिचित कप्तान की विधवा स्त्री के पास अपनी सब धन-सम्पत्ति रख दी। वह विश्वास-पूर्वक मेरे साथ उत्तम व्यवहार करने लगी।

मैंने अपने मित्र वृद्ध कप्तान के ज़रिये ब्रेज़िल की ज़मींदारी बेचकर ढाई लाख रुपये प्राप्त किये। इस प्रकार मेरे अति विचित्र जटिल जीवन-नाट्य के प्रथम अङ्क का यवनिकापात हुआ। आरम्भ में तो मैंने बहुत कष्ट उठाये, पर अन्त में मुझे बहुत ही सुख मिला।

उत्तरार्द्ध

क्रूसो की मानसिक अशान्ति

बहुत लोग यह समझेंगे कि मैं इतना बड़ा धनाढ्य होकर भ्रमण करना छोड़ एक जगह स्थिर बैठ रहा हूँगा। किन्तु मेरे भाग्य में यह लिखा ही न था। घूमने का रोग मेरी नस नस में घुसा हुआ था। उस पर न तो मेरे भाई-बन्धु थे, न स्वजन-परिवार था और न घर-द्वार, जिनके मोह से मैं देश छोड़ अन्यत्र न जाता। संसार ही मेरा घर था; संसार के मनुष्य ही मेरे आत्मीय थे। देश में आते ही फिर मुझे ब्रेज़िल जाने की इच्छा होने लगी। उस टापू में आनेवाले स्पेनियर्ड लोगों का क्या हुआ, यह जानने के लिए मैं बहुत उत्सुक था। मेरे मित्र की पत्नी ने रोक रोककर मुझे सात वर्ष देश में अटका रक्खा। इस अरसे में मैंने दोनों भतीजों को कुछ लिखा-पढ़ाकर और कुछ रुपया-पैसा देकर मनुष्य बना दिया। उनकी हैसियत ऐसी हो गई जिससे वे अपना निर्वाह अच्छी तरह कर सकते थे। मेरा एक भतीजा जहाज़ का कप्तान हुआ। वही छोकरा मुझे इस वृद्धावस्था में फिर विपत्ति के साथ युद्ध करने के लिए घर से खींच ले गया।

जब मैं लौटकर देश गया था तब मैंने ब्याह किया था। दो लड़के और एक लड़की होने के बाद मेरी स्त्री मर गई। उसी

अवसर पर, १६-६४ ईसवी को, मैं अपने भतीजे के जहाज़ पर सवार हो वाणिज्य करने की इच्छा से अमेरिका को रवाना हुआ।

मैंने बेडफ़ोर्ड ज़िले में एक छोटा सा मकान ख़रीदा था। वह मकान काम-चलाऊ था। हाते के भीतर ज़मीन भी बहुत थी। मैंने खेती-बाड़ी में जी लगाया। छः महीने के भीतर मैं पक्का किसान हो गया। अनाज से बुखारी भर गई, गाय-बछड़ों से गोठ भर गया। कई घोड़े भी ख़रीद लिये। नौकर-चाकरों में कोई घर का काम करता, कोई बाहर का और कोई खेती-बाड़ी की देख-भाल करने लगा। मैं गृहस्थी के कामों में लगकर समुद्र-यात्रा की बात एक प्रकार से भूल ही गया। मैं नगर-निवास के पाप-प्रलोभन से बचकर देहात में समय बिताने लगा।

किन्तु मेरे इस भरे-पूरे सुख में भगवान् ने मेरे बने-बनाये घर को बिगाड़ दिया। मेरे दबे हुए भ्रमणात्मक रोग को फिर उभड़ने का अवसर दिया। मेरी स्त्री का देहान्त हो गया। मैं यहाँ उसके गुणों का सविस्तर वर्णन नहीं करना चाहता किन्तु इतना ज़रूर कहूँगा कि वह मेरे विश्राम की एक मात्र आश्रय थी, संसार-बन्धन और समस्त उद्यमों का केन्द्र थी। मेरी माता के गरम आँसू, पिता के उपदेश, मित्रों के परामर्श और मेरा अपना विवेक जिस समुद्रयात्रा से मुझे न रोक सका उसे मेरी पत्नी ने अपने मधुर उपदेश से रोक दिया था।

विदेश-भ्रमण की चिन्ता फिर मेरे शान्त निरापद भाव से—गृहवास के सुख और खेती-बाड़ी के आनन्द को भुला-

कर—बड़ी निर्दयता के साथ मुझे बाहर की ओर खींचने लगी। बहरों के लिए सङ्गीत की तरह, बिना जीभवाले के लिए स्वादिष्ठ खाद्य की तरह मेरे लिए घर का सुख नितान्त निरर्थक सा जँचने लगा। कई महीने बाद मैं अपना घर द्वार भाड़े पर देकर लन्दन गया।

लन्दन में भी मेरा जी न लगा। बिना कुछ रोज़गार के जीवन का बोझ लेकर घूमना कैसा कष्ट-दायक है, यह वही समझ सकेंगे जो चिरकाल से कर्मनिष्ठ हैं। आलसी होकर एक जगह बैठा रहना जीवन की हेयतम अवस्था है। लन्दन में आलसी की तरह जीवन बिताने की अपेक्षा निर्जन द्वीप में रहकर जब मैं छब्बीस दिन में एक तख़्ता तैयार करता था तब वह मेरे लिए कहीं बढ़कर सुख का समय था।

दूसरी बार की विदेशयात्रा

१६९३ ईसवी के कुछ दिन पहले ही मेरा जहाज़ी भतीजा जहाज़ का सफ़र तय करके देश लौट आया। उसके परिचित कुछ सौदागर, अपने साथ लेकर, उसको भारत और चीन में वाणिज्य करने का अनुरोध करने लगे। उसने एक दिन मुझसे कहा—चाचाजी, यदि आप मेरे साथ चलें तो आपको ब्रेज़िल आदि पूर्व-परिचित देश दिखा लाऊँ।

मैं उसके प्रस्ताव पर सम्मत होकर बोला—"अच्छा तुम ले चलो, पर मैं अपने उसी टापू तक जाऊँगा, आगे न

बढ़ूँगा। मुझे बहुत दूर जाने का साहस नहीं होता।" उसने कहा—"क्यों? आप फिर उसी द्वीप में रहना तो नहीं चाहते?" मैंने कहा—"नहीं, तुम जब उधर से लौटो तब फिर मुझे अपने साथ लेते आना।" उसने कहा—"उस राह से लौटने में सुभीता न होगा। मान लीजिए, यदि मैं किसी कारण से लौटती बार उस द्वीप में न पहुँच सकूँ तब तो फिर आपका निर्वासन ही होगा।" यह बात मुझे युक्तिसङ्गत जान पड़ी। किन्तु हम दोनों ने एक उपाय सोच लिया। हम लोग एक नाव का फ्रेम (पार्श्वभाग) जहाज़ पर रख लेंगे और कुछ बढ़ई मिस्त्रियों को भी साथ ले लेंगे। वे द्वीप में पहुँचकर उस फ्रेम के भीतर तख्ते जड़कर ठीक कर देंगे। भतीजा मुझे द्वीप में छोड़कर चला जायगा; लौटते समय वह मुझको जहाज़ पर चढ़ा लेगा तो अच्छा ही है, नहीं तो मैं उसी नाव पर सवार होकर ब्रेज़िल आऊँगा और वहाँ से यात्री-जहाज़ के द्वारा अपने देश को लौट आऊँगा।

मेरी वृद्धा मित्र-पत्नी ने मेरा इस बुढ़ापे में विपत्ति के मुख में घुसना पसन्द न किया। उसने लम्बी समुद्र-यात्रा के क्लेश की सम्भावना, और मेरे बाल-बच्चों की याद दिलाकर मुझको जाने से रोकने की चेष्टा की; किन्तु मैं न रुका।

एक वसीयतनामा लिखकर मैंने अपनी धन-सम्पत्ति अपने बच्चों के नाम से लिख पढ़ दी। सन्तानों की शिक्षा-रक्षा का भार वृद्धा विधवा ही को सौंपा। यह मैंने बहुत ठीक

किया; क्योंकि कोई माता भी उससे बढ़कर अपने बच्चों का यत्न-पूर्वक लालन-पालन नहीं कर सकती। जब मैं लौटकर देश पहुँचा तब भी वह जीवित थी। उसका काम देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ था और उसे धन्यवाद देकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का मुझे अवसर मिला था।

१६६४ ईसवी की ८ वीं जनवरी को हम और फ़्राइडे अपने भतीजे के जहाज़ पर सवार हुए। हम लोग ५ वीं फ़रवरी को अनुकूल वायु पाकर आयरलेण्ड से रवाना हुए। २६ वीं फ़रवरी को जहाज़ के मेट ने आकर कहा—"हमने तोप छुटने की आवाज़ सुनी है और आग की झलक देखी है।" हम लोग दौड़कर डेक के ऊपर गये। कुछ देर तक तो कुछ सुनाई न दिया पर कुछ ही देर के बाद आग की ज्वाला देखने में आई। कहीं दूर ख़ूब ज़ोर की आग लगी है। उस महासमुद्र में पाँच सौ मील के भीतर कहीं स्थल का नाम-निशान न था, इसलिए सोचा कि ज़रूर किसी जहाज़ में आग लगी है। इसके पहले जो तोप की आवाज़ सुनी गई थी वह इसी विपत्ति की सूचना थी। जब तोप की आवाज़ हुई थी तब वह जहाज़ हमारे जहाज़ से बहुत दूर न था। हम लोग उस प्रकाश की ओर जहाज़ को ले चले। आगे जाते ही प्रकाश का आधिक्य दिखाई देने लगा। कुहरा फैला रहने के कारण हम लोग अग्नि-प्रकाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं देख सकते थे। आध घण्टे के बाद हम लोगों ने देखा कि समुद्र में एक बड़ा सा जहाज़ जल रहा है।

यह देखकर हम लोगों के हृदय में दया उमड़ आई। तब मुझे अपनी विपत्तियों से छुटकारा पाने की बात स्मरण होने लगी। उन विपद्-ग्रस्त बेचारों के पास यदि और नाव न हो तब उनकी न मालूम क्या दुर्दशा होगी, यह विचारकर मैंने अपने जहाज़ से पाँच बार तोप की आवाज़ करवा दी। इससे उन्हें सहायक के निकटवर्ती होने की सूचना मिली। आग के कारण हम लोग तो उनके जहाज़ को देख सकते थे, पर वे हमारे जहाज़ को नहीं देख सकते थे। हम लोग प्रातःकाल की प्रतीक्षा करने लगे। इतने में वह जलता हुआ जहाज़ एका-एक आकाश की ओर उड़ गया और आग एकदम बुझ गई। समुद्र गाढ़ अन्धकार में डूब गया। ऐसा मालूम हुआ जैसे वह जहाज़ सर्वदा के लिए समुद्र के गर्भ में विलीन हो गया। हम लोग यद्यपि ऐसी ही किसी दुर्घटना की आशङ्का कर रहे थे तथापि उसे आँखों के सामने होते देख हम लोग बहुत डरे। उस जहाज़ के यात्रियों की दुर्दशा की बात सोचकर जी व्याकुल होने लगा। वे लोग या तो जहाज़ के साथ जल गये होंगे या समुद्र में डूबकर मर गये होंगे अथवा डूबने ही पर होंगे। वे सबके सब घोर अन्धकार में थे। हम लोग कुछ निश्चय न कर सके कि वे अभी किस अवस्था में हैं। अपनी उपस्थिति की सूचना उन लोगों को देने के लिए मैंने अपने जहाज़ के चारों ओर रोशनी कर दी और गोलन्दाज़ से सारी रात तोप दाग़ने को कह दिया।

हम लोगों ने जागकर रात बिताई। सबेरे आठ बजे हम लोगों ने दूरबीन लगाकर देखा कि दो छप्परदार नावें, आरोहियों से भरी हुई, घिरनी की तरह बीच समुद्र में नाच रही हैं। हवा हमीं लोगों की ओर से होकर बहती थी। वे प्रतिकूल वायु में पड़कर प्राणपण से नाव खेकर हम लोगों की ओर आ रहे थे और हम लोगों की दृष्टि को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए भाँति भाँति की चेष्टाएँ कर रहे थे। हम लोगों ने झण्डी उड़ाकर उन लोगों को सङ्केत द्वारा जता दिया कि हम लोगों ने तुमको देख लिया। अब हम लोग पाल तानकर बड़ी तेज़ी से उन लोगों की ओर अग्रसर होने लगे। आध घण्टे में उनके पास पहुँचकर हमने चौंसठ पुरुष, स्त्री और बालकों को अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

उन लोगों ने रक्षा पाकर जो अनेक भावों से अपना आवेग प्रकट किया था उसे बताने में मैं असमर्थ हूँ। वे लोग अपना पुनर्जीवन मानकर मारे ख़ुशी के विदेह बन गये थे। किसी को अपने-पराये की सुध न थी, सभी आनन्द में उन्मत्त थे। कोई रोता था, कोई हँसता था, कोई नाचता था, कोई गाता था, कोई पागल की भाँति अण्ट-सण्ट बकता था, कोई जहाज़ में इधर से उधर दौड़ता था, कोई चित्रवत् खड़ा था, कोई चुपचाप मौन साधे बैठा था, कोई वमन करता था, कोई बेहोश पड़ा था और कोई कृतज्ञता-पूर्वक भगवान् को धन्यवाद दे रहा था।

पहले दिन हम लोग इन अतिथियों को लेकर बड़े ही असमंजस में पड़े। दूसरे दिन जब वे लोग गाढ़ी नींद सोकर उठे तब मालूम हुआ जैसे ये लोग वे नहीं हैं जो कल थे। सभी हम लोगों से सेवा और साहाय्य पाकर विनयपूर्वक सकृतज्ञ भाव से शिष्टता का परिचय देने लगे। उनके जहाज़ के कप्तान और पुरोहित दूसरे दिन मुझसे और मेरे भतीजे से भेंट करके कहने लगे—आपने हम लोगों के प्राण बचाये हैं, हम लोगों के पास इतनी जमा-जथा नहीं जो आपकी इस दया के बदले देकर कृतज्ञता प्रकट कर सकें। हम लोग जल्दी में, जहाँ तक हो सका, कुछ रुपया और थोड़ा बहुत माल असबाब आग के मुँह से बचाकर साथ लाये हैं। यदि आप आज्ञा दें तो हम लोग वे सब रुपये आपकी सेवा में समर्पण करें। हम लोगों की प्रार्थना है कि आप हम लोगों को ऐसी जगह उतार दें जहाँ से हम लोग देश लौट जाने का प्रबन्ध कर सकें।

मैंने कप्तान से कहा—मनुष्यता दिखलाना हम लोगों का धर्म और कर्तव्य है। इस ख़याल से ही हमने आपको आश्रय दिया है। यदि आपकी दशा में हम होते और हमारी सी अवस्था आपकी होती तो हम भी आपसे ऐसी ही सहायता चाहते। मैं आप लोगों की एक भी वस्तु किसी को लेने न दूँगा किन्तु आप लोगों को अनुकूल स्थान में उतारना ही एक कठिन समस्या है। हम लोग भारत की ओर जा रहे हैं। यद्यपि हम लोग निर्दिष्ट मार्ग को छोड़कर टेढ़े-मेढ़े मार्ग से जा

रहे हैं तथापि यह समझकर सन्तोष होता है कि आप ही लोगों के उद्धारार्थ, ईश्वर की प्रेरणा से, हम लोग इधर आ पड़े। अब हम लोग इच्छा रहते भी गन्तव्य पथ को न छोड़ सकेंगे। रास्ते में यदि कोई ऐसा जहाज़ मिल जायगा जो देश लौटकर जाता होगा तो उस पर आप लोगों को चढ़ा देंगे।

हम लोगों ने रास्ते में कई यूरोपगामी जहाज़ देखे। उनमें दो फ्रांस के थे। किन्तु उन लोगों को प्रतिकूल वायु के कारण रास्ते में बहुत देरी हो गई थी। खाद्य-सामग्री घट जाने के भय से वे लोग और यात्रियों को अपने जहाज़ पर चढ़ा लेने को राज़ी न हुए। तब हमने लाचार होकर उन लोगों को न्यू-फ़ौण्डलेण्ड के किनारे उतार दिया। केवल एक युवा पुरोहित हम लोगों के साथ भारत जाने को रह गया और चार व्यक्ति नाविक का काम करने की इच्छा से हमारे जहाज़ पर नियुक्त हुए।

इसके बाद बीस दिन तक हम लोग अमेरिका के द्वीप-पुञ्ज के सामने से जाने लगे। एक दिन फिर एक घटना के कारण परोपकार का सुयोग मिल गया। उस दिन मार्च की उन्नीसवीं तारीख़ थी। हम लोगों ने देखा कि एक जहाज़ के सभी मस्तूल टूटे हैं, उसके जहाज़ियों ने विपत्ति के संकेत-स्वरूप तोप की आवाज़ की। हम लोग उसके पास गये।

वह जहाज़ इँगलैंड के ब्रिस्टल शहर को जा रहा था। रास्ते में तूफ़ान आने के कारण उसकी ऐसी दुर्दशा हुई थी। जहाज़ इस प्रकार निकम्मा होकर नौ सप्ताह से समुद्र में भटक

रहा था। उन लोगों के पास खाद्य-सामग्री भी न थी, इससे निराहार रहने के कारण वे मृतप्राय हो रहे थे। पानी बिल्कुल खर्च न हुआ था, यही सहारा था। आधा पीपा मैदा था और कुछ चीनी थी। उस जहाज़ पर एक युवक यात्री था। उसके साथ उसकी माता और दासी भी थी। उसके पास खाने को कुछ न था। नाविकगण स्वयं कष्ट पा रहे थे इसलिए उन पर दया करके कोई कुछ खाने को न देता था। इससे उन तीनों की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई थी।

उन उपेक्षित तथा अनादृत तीनों यात्रियों को मैं उनके जहाज़ पर देखने गया था। जहाज़ के कितने ही भूखे व्यक्ति चूल्हे पर से कच्चा खाद्य लेने के लिए हल्ला मचा रहे थे। रसोईघर के पहरेदार उनको समझा बुझाकर रोकने में असमर्थ होकर ज़बरदस्ती हाथ पकड़ पकड़कर उन्हें हटा रहे थे और बीच बीच में उन्हें थोड़ा सा बिस्कुट देकर शान्त भी करते जाते थे; नहीं तो वे लोग खाने के लिए प्राण तक देने को मुस्तैद थे।

उनमें तीन मुसाफ़िरों की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। उन लोगों के पास खाने को कुछ भी वस्तु न थी और न किसी से उन्हें कुछ सहायता ही मिली। छः सात दिन से वे लोग भूखे थे। इसके पूर्व भी कई दिनों से उन लोगों ने भर पेट न खाया था। माँ स्वयं न खाकर अपना हिस्सा बेटे को खिला दिया करती थी, इससे वह एकदम सेज में सट गई थी। यद्यपि वह अभी तक मरी नहीं है पर उसके मरने में

अब देर नहीं है। मैंने चम्मच से थोड़ा सा झोल उसके मुँह में डाला। इस पर वह कुछ बोल तो न सकी पर इशारे से उसने जताया कि मेरे मरने में अब विलम्ब नहीं है। उसने अपने बेटे को देखने की इच्छा प्रकट की। उसी रात को उस स्त्री का देहान्त हो गया। अपनी स्नेहमयी माता के यत्न से युवक उतनी बुरी हालत में न था, उसकी दशा कुछ अच्छी थी फिर भी वह बिछौने पर बेहोश पड़ा था।

हमने युवक और उसकी दासी को अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया। युवक के साथ कई बोरे चीनी थी। हम लोग उस चीनी को अपने जहाज़ पर न ले सके। भग्न-जहाज़ के कप्तान से चीनी की रसीद लेकर कह दिया कि यह माल ब्रिस्टल के रोज़र्स नामक सौदागर को, रसीद लेकर, दे देना। किन्तु पीछे देश लौटने पर मालूम हुआ कि वह जहाज़ ब्रिस्टल में पहुँचा ही नहीं। वह समुद्र में ही डूब गया होगा।

द्वीप में पुनरागमन

हम लोग रास्ते में तूफ़ान और बादल के साथ लड़ते-झगड़ते १६९५ ईसवी की १० एप्रिल को अपने पुराने आवास-द्वीप के निकट पहुँचे। ढूँढ़ने पर बड़ी कठिनता से पूर्व-परिचित मित्रों से भेंट हुई। द्वीप के दक्खिन ओर अपने घर के पास ही, खाड़ी के सामने, हमने जहाज़ का लङ्गर डाला।

मैंने फ़्राइडे से कहा—"बताओ, वह कौन सी जगह है?" वह उस ओर देखते ही ताली बजाकर नाच उठा। "हाँ हाँ, यह वही जगह है" यह कहकर वह पागल की भाँति हाथ-मुँह मटकाने लगा। वह जहाज़ से कूदकर, समुद्र तैरकर ही, किनारे जाने को प्रस्तुत हुआ। किन्तु हमने उसे रोक रक्खा।

मैंने फ़्राइडे से पूछा—अच्छा बतलाओ, क्या यहाँ हम लोग किसी को देख पावेंगे या नहीं? क्या तुम्हारे बाप से भेंट होगी?

वह कुछ देर चित्रवत् चुपचाप खड़ा रहा। इसके बाद उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे।

मैंने पूछा—फ़्राइडे, क्या तुम बाप के साथ भेंट होने की बात सुनकर रोने लगे?

फ़्राइडे बोला—नहीं नहीं, अब बाप से मेरी भेंट न होगी।

मैं—यह तुमने कैसे जाना?

फ़्राइडे—वह बूढ़ा आदमी कभी का मर गया होगा।

मैं—"पागल कहीं का, मनुष्य के जीवन-मरण का कोई निश्चय नहीं कि कौन कब तक जियेगा और कब मरेगा। मान लो तुम्हारे बाप से यहाँ भेंट न हो तो न सही पर किसी से तो भेंट होगी।" फ़्राइडे ने मेरे क़िले के पास के पहाड़ की ओर दिखाकर कहा—"हाँ, हाँ, वह देखो, लोगों का झुण्ड है। वे खड़े होकर हम लोगों की ओर देख रहे हैं।" पर मैंने किसी को नहीं देखा। फिर भी उसी की बात पर

विश्वास करके मैंने झण्डी उड़ाकर तीन बार तोप की आवाज़ करने का हुक्म दिया। आध घंटे के बाद मैंने खाड़ी के पास धुवाँ उटते देखा। तब यहाँ की बस्ती के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं रहा। मैंने उसी समय जहाज़ से एक नाव पानी में उतारने को कहा। सोलह हथियारबन्द नाविक, फ्रांसवासी पुरोहित और फ्राइडे को साथ ले मैं नाव पर सवार हुआ। हम लोग शत्रु नहीं, मित्र हैं,—यह जताने के लिए सफ़ेद पताका उड़ाते चले।

हम लोग ज्वार के समय रवाना हुए थे। इससे नाव सीधी खाड़ी के भीतर पहुँच गई। मेरी दृष्टि सबके पहले उस स्पेनियर्ड के ऊपर पड़ी जिसको मैंने मौत से बचाया था। उसको देखते ही मैंने पहचान लिया। मैंने कहा—"नाव से किसी के उतरने की ज़रूरत नहीं, पहले मैं अकेला ही जाऊँगा; किन्तु फ्राइडे को रोक रखने की सामर्थ्य किसमें थी। वह दूर ही से अपने बाप को देखकर व्यग्र हो उठा था। हम लोग उतनी दूर से कुछ भी न देख सके थे। यदि उसे मैं नाव से उतरने न देता तो वह पानी में ही कूद पड़ता। वह सूखे में पैर रखते ही तीर की तरह सन्न से अपने बाप के पास दौड़ गया। उसने बड़े ही विनीत भाव से पिता को प्रणाम किया और बार बार उनके पैरों को चूमा। वह देर तक अपने पिता के मुँह की ओर स्थिर दृष्टि से देखता रहा। इसके बाद उसने फिर पिता के पैर चूमे और उन्हें गले से लगाया। मारे उमङ्ग के वह कभी तो अपने पिता का हाथ पकड़कर समुद्र के किनारे

किनारे घूमता था और जिन नये देशों को देख आया है उनके कितने ही वृत्तान्त सुनाता था; और कभी दौड़कर नाव से विविध खाद्य लाकर इन्हें खिलाता था।

मैं नाव से उतरकर स्पेनियर्ड के पास गया। वह पहले मुझे पहचान न सका। क्योंकि स्वप्न में भी उसका यह ख़याल न था कि मैं फिर यहाँ आऊँगा। मैंने उससे कहा—"महाशय, आपने मुझको पहचाना नहीं?" मेरा कण्ठस्वर पहचानकर वह कुछ न बोला। वह अपने हाथ की बन्दूक दूसरे को देकर बाँह पसारकर दौड़ा और स्पेनिश भाषा में न मालूम क्या कहता हुआ मेरे गले से लिपट गया। फिर उसने कहा—"मैंने आपको पहले न पहचानकर बड़ा अपराध किया है। आप मेरे प्राणदाता हैं।" इस प्रकार प्रीतिपगी बातें कह-कर उसने मुझसे पूछा—"आप एक बार अपने पुराने घर चलेंगे या नहीं?" मैं उसके साथ वहाँ गया।

स्पेनियर्ड ने स्वस्थ होकर मेरे अनुपस्थितिकाल के दस वर्ष का इतिहास कह सुनाया। वह संक्षेप में मैं यहाँ लिखता हूँ।

स्पेनियर्ड कहने लगा—"जब मैंने आकर देखा कि आप चले गये तब मुझे बड़ा ही दुःख हुआ। किन्तु जब मैंने सुना कि आपका उद्धार यहाँ से बड़ी आसानी से हो गया है तब मुझे हर्ष भी हुआ। किन्तु आप जिन तीन बदमाशों को यहाँ छोड़ गये हैं वे बड़े ही नृशंस हैं। उन्होंने हम लोगों को मार डालने की चेष्टा की थी। तब हम लोगों ने उनसे

हथियार छीन लिये और उन्हें बन्दी कर लिया है।" मैंने कहा—मैं न समझता था कि वे लोग ऐसे छटे बदमाश हैं। यदि मेरे रहते आप वहाँ से लौट आते तो भी मैं उन लोगों को आपके अधीन करके ही जाता।

मैं उससे बातें कर ही रहा था कि और ग्यारह स्पेनियर्ड वहाँ आ गये। किन्तु उनकी तत्कालीन पोशाक देखकर उनकी जाति का निर्णय करना कठिन था। स्पेनियर्ड कप्तान ने मुझसे उनका और उनसे मेरा परिचय कराया। तब वे लोग बड़े विनीत भाव से एक एक कर मेरे पास आये। उन्होंने भक्ति-पूर्वक मेरा अभिवादन किया।

उपनिवेश में समाज और धर्म-संस्थापन

इस टापू में मेरा आकस्मिक आगमन मेरे उपनिवेश-वासियों के लिए ईश्वर-प्रेरित आशीर्वाद ही की तरह सुखद हुआ था। इस टापू में आकर मैंने उन लोगों की सभी प्रकार की कमी दूर कर दी। वे लोग मुझसे छुरी, कैंची, कुदाल, खनती और कुल्हाड़ी आदि उपयोगी औज़ार पाकर अपने अपने घर बनाने लग गये। विल एटकिंस पहले जैसा आलसी था वैसा ही अब व्याह करने पर परिश्रमी हुआ। उसने अत्यन्त सुन्दर सुदृढ़ घर बनाया। उसने चटाइयाँ बुन-कर लगाईं। घर के चारों ओर गोल घेरा बना दिया। घर के प्रत्येक कोने में उसने मज़बूत खम्भे की टेक लगा रक्खी

थी। उसने अपनी ही बुद्धि से काठ की धौंकनी तथा लोहे की हथौड़ी और नेहाई बनाकर काम चलाने लायक़ लोहे की कितनी ही चीज़ें तैयार कर ली थीं।

एटकिंस के घर में आँगन, दालान, चबूतरा और बरांडा सभी ऐसे सुन्दर थे और सर्वत्र ऐसी सफ़ाई थी कि देखते ही बनती थी। इस घर में एटकिंस और उसके दो साथियों के कुटुम्बी रहते थे। जो व्यक्ति असभ्यों के हाथ लड़ाई में मारा गया था उसकी विधवा स्त्री अपने तीन बच्चों को लेकर यहीं रहती थी। सन्तान सहित और भी दो विधवाओं का वह प्रतिपालन करता था।

वे असभ्य जाति की स्त्रियाँ भी गृह-कार्य में बड़ी चतुर थीं। उन्होंने अँगरेज़ पति पाकर अँगरेज़ी बोलना सीख लिया था। उनके लड़के भी अँगरेज़ी बोलते थे। मैंने उन सब बच्चों को जाकर देखा। मैंने देखा कि इस समय स्पेनियर्डों और अँगरेज़ों के बीच किसी तरह की अनबन न थी। दोनों मिल जुलकर अपना अपना काम करते थे। मैंने एक भोज देकर सबको सम्मानित किया। मेरे जहाज़ के रसोइये ने स्वादिष्ट भोजन बनाकर सबको खिलाया-पिलाया।

भोज का जलसा समाप्त होने पर मैंने जहाज़ पर से वे चीज़ें उठवा मँगाईं जो उन लोगों के लिए अपने साथ लाया था। उन लोगों में वे चीज़ें मैंने इस हिसाब से बाँट दीं कि जिसमें उन लोगों में पीछे से आपस में, समान भाग न मिलने के कारण, तकरार न हो।

मैं उन लोगों का यहाँ तक हितचिन्तक था, यह देखकर उन लोगों का हृदय प्रेम से पसीज उठा। उनकी आँखों से आँसू बह चले। उन लोगों ने स्वीकार किया कि वे मुझको अपने पिता के तुल्य समझते हैं; वे लोग आजीवन मेरी अधीनता स्वीकार करके इसी द्वीप में मेरी प्रजा बनकर रहेंगे। बिना मेरी आज्ञा पाये कोई इस टापू का त्याग न करेगा।

वस्तु-वितरण के अनन्तर मैंने दर्ज़ी, लुहार, बढ़ई आदि मिस्त्रियों को उन लोगों के सिपुर्द कर दिया। दर्ज़ी ने हरएक को एक एक कुर्ता सी दिया और स्त्रियों को सिलाई के कामों में ख़ूब निपुण कर दिया। बढ़ई ने हम लोगों की बनाई टेबुल, कुर्सी आदि वस्तुओं को एक ही घड़ी में सुडौल बना दिया।

इसके बाद मैंने अपनी प्रजा को खेती के उपयुक्त हथियार बाँट दिये। हरएक को एक एक कुदाल, खुरपी और खनती दी। बढ़ई के उपयुक्त हथियार विभक्त न करके एक बढ़ई रख दिया। मैं छुरी, कैंची और लोहे की छड़ें आदि बहुतायत से लाया था। वे वस्तुएँ साधारण भण्डार में रख दी गईं। जिसे जब जिस वस्तु की आवश्यकता होगी, उसे मिलेगी। उन लोगों के लिए मैं लोहा इसलिए बहुत लाया था, कि लुहार उससे उनके प्रयोजन की वस्तुएँ बना देंगे।

इसके बाद मैंने हरएक को एक एक बन्दूक़ और बहुत सी गोली-बारूद दी। उन्हें पाकर वे लोग बहुत ख़ुश हुए। अब वे हज़ारों असभ्यों का मुक़ाबला कर सकेंगे।

जिस युवक को और उसकी दासी को मैंने भूखों मरने से बचाया था, वे कहने लगे कि "हम भारतवर्ष क्या करने जायँगे। आपकी आज्ञा हो तो इसी टापू में रह जायँ।" मैंने इस प्रस्ताव को स्वीकार करके उन्हें अपनी प्रजा में सम्मिलित कर लिया। एटकिंस के घर के समीप, उसी के घर के नक़्शे का, घर बनवाकर उस नवयुवक को रहने के लिए दे दिया।

मेरे साथ जो पुरोहित आये थे वे बड़े धार्मिक, शिष्ट और साम्प्रदायिक विषय में ख़ूब पहुँचे हुए थे। उन्होंने एक दिन मुझसे कहा—देखिए साहब, आपकी अँगरेज़ प्रजा असभ्य जाति की स्त्रियों से पति-पत्नी का सम्बन्ध जोड़कर रहती है। परन्तु इन लोगों ने सामाजिक प्रथा या क़ानून के अनुसार ब्याह नहीं किया है। ऐसी अवस्था में सम्भव है कि जब ये लोग चाहें तब इन निराश्रया रमणियों को छोड़ दें। इस दोष से बचाने के लिए उनका उन स्त्रियों से विधिपूर्वक ब्याह करा देना चाहिए। जब आप उन लोगों के नेता हैं तब उन लोगों के सम्पत्ति-सम्बन्धी शुभाशुभ के आप जैसे भागी हैं वैसे ही उनके नैतिक शुभाशुभ के भी हैं।

उनकी धर्मनिष्ठा देख मैंने प्रसन्न होकर कहा—मुझे इतना समय कहाँ? मैं दूसरे के जहाज़ का एक यात्री मात्र हूँ। यहाँ रहने के लिए मैंने बारह दिन की छुट्टी ली है। इसके बाद जितने दिन विलम्ब करूँगा उतने दिनों के लिए, पचास रुपये रोज़ के हिसाब से, हर्जाना देना होगा। यहाँ मुझको

आज तेरह दिन हो गये। अधिक विलम्ब करने से मुझे भी यहाँ रहना होगा। मैं बुढ़ापे में फिर यह दुःख नहीं सहूँगा।

पुरोहित ने कहा—तो मुझे आप यहाँ छोड़ते जायँ! मैं इन लोगों को धार्मिक शिक्षा दूँगा और इन लोगों के हृदय में ईश्वर की भक्ति स्थापित करने की चेष्टा करूँगा।

उनके मुख की उज्ज्वल शोभा और उत्साह देखकर मैं दङ्ग हो रहा। मैंने पूछा—क्या आपने इस बात को भली भाँति सोच लिया है कि इस निर्जन टापू में रहना कितना कष्टकर है? और यहाँ से इस जीवन में देश लौट जाने की सम्भावना भी नहीं। हो सकता है, इसी टापू में जीवन-लीला समाप्त हो।

यह जानकर भी वे इस टापू में रहने को राज़ी हुए। उन्होंने कहा—इन धर्म-हीन नर-नारियों के मन में परमेश्वर की महिमा और दयाभाव का ज्ञान उपजाकर यदि इन्हें सत्पथ पर ला सकूँगा तो मैं अपने जीवन को सफल समझूँगा। हाँ, यदि आप अपने सेवक फ़्राइडे को यहाँ छोड़ जायँ तो मेरा विशेष उपकार हो। यह मेरा दुभाषिया बनकर मुझे इस काम में यथेष्ट सहायता देगा।

फ़्राइडे को मैं अपने पास से जुदा नहीं कर सकता था। उससे बिलग होने की बात सुनकर मैं अधीर हो उठा। मैंने पुरोहित से कहा—फ़्राइडे को छोड़ना मेरे लिए कठिन है। किन्तु आप जिस काम में अपना जीवन लगा रहे हैं उस काम की सहायता के लिए मुझे भृत्य-विच्छेद का कष्ट स्वीकार करना

लाज़िमी है। परन्तु मैं किसी तरह फ़ाइडे को छोड़ भी दूँ तो वह मुझे न छोड़ेगा।

यह सुनकर पुरोहित चिन्तित हुए। वे फ़ांसीसी थे। वे किसी की भाषा नहीं समझते थे और न कोई दूसरा ही उनकी बोली समझ सकता था। तो क्या भगवान् की महिमा के प्रचार का कोई उपाय न होगा? मैंने उनसे कहा—फ़ाइडे के पिता ने स्पेनिश भाषा सीखी है और आप भी कुछ कुछ स्पेनिश भाषा जानते हैं, इसलिए उसी के द्वारा आपका काम निकल जायगा।

फ़ाइडे की मृत्यु

मैं अपने टापू का सुप्रबन्ध करके बिदा हुआ। तीन दिन समुद्रयात्रा करने के पीछे नाविकों ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा "पूरब ओर स्थल दिखाई दे रहा है।" साँझ होने के पहले ही स्थल-भाग का किनारा, देखते ही देखते, घोर कृष्णवर्ण हो उठा। किन्तु ऐसा क्यों हुआ, इसका कारण हम लोग समझ न सके। जहाज़ का मेट मस्तूल के ऊपर चढ़कर दूरबीन से देखकर चिल्ला उठा—"सैन्य-दल, सैन्य-दल।" मैं अविश्वास कर इसकी बात काटने लगा। तब वह बोला—आप मेरी बात का विश्वास कीजिए। डोंगियों पर क़रीब एक हज़ार सैनिक सवार हो हमारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं।

यह सुनकर मैं और जहाज़ का कप्तान मेरा भतीजा बड़े ही अचम्भे में पड़ गया। वह बेचारा कभी इतनी दूर न

आया था। उस पर मेरे टापू में जाकर असभ्यों की भयङ्कर वृत्ति की कहानी सुनकर उसे अत्यन्त भय हुआ था। उसने दो तीन बार मुझसे कहा—"अब की बार वे लोग आकर हम लोगों को ज़रूर मारकर खा डालेंगे।" मेरा भी मन स्थिर न था। हवा रुक गई थी और समुद्र की तीक्ष्ण तरङ्ग हम लोगों को किनारे ही की ओर खींचे लिये जाती थी। तथापि मैं सबको ढाढ़स बँधाने लगा। ज्योंही असभ्य हमारे समीप पहुँचे त्योंही मैंने लंगर डालने का हुक्म दिया।

वे लोग बात की बात में हमारे जहाज़ के पास आ गये। मैंने जहाज़ के पालों को उतारने और लंगर डालने की आज्ञा दी। जहाज़ के सामने और पीछे एक एक नाव उतारकर उन पर कतिपय सशस्त्र नाविकों को इसलिए सवार किया कि यदि असभ्य लोग जहाज़ में आग लगाने की चेष्टा करेंगे तो नाविक लोग बालटी के द्वारा समुद्र का जल भरकर आग बुझा देंगे।

किन्तु असभ्य लोग हम लोगों के समीप आकर और एक बड़ा सा जहाज़ देखकर एकदम भौंचक्का हो रहे। ऐसा जहाज़ तो उन लोगों ने आज तक न देखा था। हम लोगों के साथ वे कैसा व्यवहार करें, यह उन लोगों की समझ में न आता था। तथापि वे लोग जान पर खेलकर एक बार जहाज़ के बिलकुल पास आये और हमारे जहाज़ को चारों ओर घूमकर देखना चाहा।

मैंने नाविकों से कहा—"ख़बरदार! उन लोगों को हमारे जहाज़ से भिड़ने मत देना।" हुक्म पाकर नाविकों ने उन असभ्यों को हाथ का इशारा देकर दूर रहने को कहा। उस इशारे का मतलब समझकर वे लोग अपनी डोंगियों को हटा ले गये। फिर हमारे जहाज़ियों को लक्ष्य करके उन लोगों ने एक साथ पचास तीर छोड़े। इससे हमारे जहाज़ का एक नाविक घायल हो गया। मैंने कई एक काठ के तख़्ते नावों पर उत-रवा दिये। नाविकगण तख़्ते खड़े करके उनकी आड़ में छिप रहे। मैंने उन्हें बन्दूक़ चलाने की मनाही कर दी।

आध घंटे तक टाल-टूल करने के बाद वे लोग झुण्ड बाँध-कर जहाज़ के पश्चाद्भाग के समीप आ गये। तब हम लोगों ने उन्हें स्पष्ट रूप से देखा। उनमें कितने ही मेरे पुराने परिचित थे। द्वीप-निवास के समय कई बार उन लोगों के साथ मेरा मुक़ाबिला हो चुका था। मैंने तोपों को ठीक करके फ़ाइडे को डेक के ऊपर इसलिए भेज दिया कि वह अपनी देशभाषा में अपने देशवासियों से उनके आगमन का कारण पूछे। फ़ाइडे ने ख़ूब उच्चस्वर से पूछा, किन्तु असभ्यों ने फ़ाइडे की बात का कुछ जवाब न देकर हम लोगों की ओर पीठ करके और सामने की ओर झुककर हम लोगों को पश्चाद्भाग दिखलाया। ऐसा बीभत्स व्यवहार हम लोगों के प्रति अपमान या युद्ध के लिए सन्नद्ध होने का संकेत है, यह मैं न समझ सका। उन लोगों को इस तरह करते देख फ़ाइडे ने चिल्लाकर कहा,—

"देखो देखो, ये लोग अभी बाण बरसावेंगे।" उसकी बात पूरी होते न होते टिड्डीदल की तरह सैकड़ों बाण उड़कर जहाज़ पर आ गिरे और कई बाण मुझे अत्यन्त दुख देकर फ़ाइडे के शरीर में चुभ गये। तीन बाणों की सख़्त चोट लगने से फ़ाइडे मर गया। उसके पार्श्ववर्ती और भी तीन व्यक्ति मरे।

मैंने अपने पुराने सेवक की मृत्यु से अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक साथ नौ तोपें सीधी कर असभ्यों पर गोले बरसाने की आज्ञा दी। एक साथ नौ तोपों का भयङ्कर शब्द उन लोगों के पुरुषों ने भी आज तक न सुना था। उनकी तीन चार नावें दम भर में उलट गईं। फ़ाइडे मेरा मित्र, नौकर, मन्त्री, साथी और पुत्र सब कुछ था। उसकी मृत्यु से मैं ऐसा क्रुद्ध हुआ कि वे असभ्य सब के सब मारे जाकर उनकी नावें नष्ट-भ्रष्ट हो डूब जातीं तो कदाचित् मेरे हृदय का ताप कुछ शान्त होता।

एक ही साथ उतनी तोपों की आवाज़ होने से असभ्यदल में खलबली मच गई। परस्पर टक्कर लगने से तेरह चौदह नावें टुकड़े टुकड़े हो गईं और उनके सवार समुद्र में गिरकर तैरने लगे। और लोग अपनी अपनी नाव खेकर बड़े वेग से भाग चले। उन लोगों ने कुछ भी ख़बर नहीं ली कि हमारे नौकाहीन साथियों की क्या दशा हुई। जलमग्न लोगों में प्राय: सभी मर मिटे, केवल एक व्यक्ति को हमारे जहाज़वालों ने जहाज़ पर खींचकर बचा लिया था। उस दिन सन्ध्या-समय ख़ूब तेज़ हवा बहने लगी। तब हम लोग पाल तानकर

ब्रेज़िल की तरफ़ रवाना हुए। वह बन्दी असभ्य ऐसा दुखी था कि न तो कुछ खाता था और न बोलता था। मैंने देखा कि वह उपवास करते ही करते मर जायगा। तब मैंने उसे जहाज़ की डोंगी में उतारकर इशारे से कहा—"कुछ कह तो कह, नहीं तो तुझे अभी समुद्र में फेंक दूँगा।" तब भी वह कुछ न बोला। उसकी यह असभ्यता देख नाविकों ने पकड़कर उसे पानी में गिरा दिया। अब वह जल में तृण की भाँति तैरता हुआ जहाज़ के पीछे पीछे आने लगा और अपनी भाषा में हम लोगों से न मालूम क्या कहने लगा। इसके बाद वह फिर जहाज़ पर चढ़ा लिया गया। अब वह कुछ कुछ हम लोगों की बात मानने लगा।

जहाज़ मज़े में जा रहा है। किन्तु प्रिय सेवक फ़ाइडे के वियोग से मेरे चित्त में चैन नहीं। मैंने बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ समुद्र में उसका प्रवाह किया। उसके सम्मानार्थ ग्यारह बार तोप दागी गई। इसके बाद सभी चुप हो रहे। ऐसा सत्सेवक भाग्य से ही किसी को मिलता है। आज बार बार मैं अपने मन में कहने लगा—

बहुत दिनों में भ्रमण कर लौटे हम निज गेह।
हाय हमारा भृत्य वह चला गया तज देह॥

बारह दिन समुद्रयात्रा करने के बाद हम लोगों ने अमेरिका का उपकूल देखा। इसके चार दिन बाद हम लोगों ने ब्रेज़िल पहुँचकर लंगर डाला। यह वही जगह थी जहाँ से मेरे सौभाग्य और अभाग्य की सूचना आरम्भ हुई थी।

मदागास्कर टापू में हत्याकाण्ड

ब्रेज़िल से चलकर हम लोग अटलांटिक महासागर पार करके गुडहोप अन्तरीप में पहुँचे। रास्ते में कोई विघ्न नहीं हुआ। यहाँ से समुद्र-पथ हम लोगों के लिए अनुकूल हुआ। स्थल-मार्ग ही विघ्नों का घर हो उठा। अब से जो कुछ विपत्ति आई वह स्थलमार्ग में ही, समुद्र-पथ में नहीं।

एक दिन सन्ध्या-समय हम लोग स्थल में उतर पड़े। वहाँ के रहनेवालों ने चारों ओर से आकर हम लोगों को घेर लिया। किन्तु उन लोगों ने कोई प्रतिकूल आचरण न कर बड़े शान्त भाव से हम लोगों के साथ सन्धि का बर्ताव किया। हम लोगों ने भी सन्धि-शाखा गाड़ करके, वहीं रात बिताने की इच्छा से, कई तम्बू खड़े किये।

दो बजे रात को हम लोगों के साथी ज़ोर से चिल्लाकर नाव को किनारे लगाने के लिए हम लोगों के नाम ले लेकर पुकारने लगे। इसके साथ साथ पाँच बार बन्दूक़ की आवाज़ सुनाई दी। कुछ कारण न समझने पर भी हम लोगों ने झटपट नाव को किनारे लगा दिया और तीन बन्दूकें लेकर हम लोग उनकी सहायता के लिए तैयार हुए।

नाव किनारे भिड़ते न भिड़ते हमारे साथी लोग नाव पर चढ़ने के लिए पानी में धँस पड़े। उनके पीछे पीछे तीन चार सौ आदमी दौड़े चले आ रहे थे। हम लोगों के आदमी गिनती में कुल नौ थे, जिनके साथ सिर्फ़ पाँच बन्दूकें थीं।

हम लोग बड़ी मुश्किल से सात मनुष्यों को नाव पर चढ़ा सके। उनमें तीन व्यक्ति बहुत घायल थे; किन्तु नाव पर आ जाने पर भी छुटकारा नहीं हुआ। वहाँ के निवासी लोग अँधाधुन्ध बाण बरसा रहे थे। दैवयोग से नाव में कई तख्ते और बेञ्चें थीं। उन्हीं को खड़ा कर करके हम लोग उनकी आड़ में छिप रहे। द्वीप-निवासियों का जैसा अचूक बाण चलता था उससे यदि दिन का समय होता तो सामने पड़ जाने पर हम लोगों का अछूता बचना मुश्किल था। भाग्य से उस समय रात थी। चाँदनी रात में तख्तों के छिद्र से देखा कि वे लोग किनारे खड़े होकर हम लोगों पर बाण बरसा रहे हैं। हम लोगों ने बन्दूकें भरकर एक साथ गोली चलाई। उन लोगों की चिल्लाहट से मालूम हुआ कि कई आदमी घायल हुए हैं। किन्तु वे लोग बन्दूक की परवा न करके, पाँत बाँधकर, प्रभात की अपेक्षा से खड़े रहे। मतलब यह कि दिन के उजेले में वे लोग अच्छी तरह लक्ष्य करके हम लोगों पर बाण चलावेंगे।

हम लोगों की नाव, जहाज़ और किनारे के बीच से, हटते ही जहाज़ की तोपें गोले उगलने लगीं। जो द्वीपवासी किनारे खड़े थे वे उन गोलों की मार से एक ही बार जल भुन-कर ख़ाक हो गये। हम लोग जहाज़ पर बेखटके सवार हो गये। अब मुझे मालूम हुआ कि हम लोगों के एक नाविक ने उनकी एक स्त्री का अपमान किया था, इसी से द्वीपवासियों

ने अकस्मात् एकत्र होकर हम लोगों के नाविकों पर आक्रमण किया और सन्धि को तोड़कर रमणी के अपमान का बदला लिया था। जो नाविक इस अनर्थ की जड़ था वह हम लोगों के साथ लौटकर न आ सका। हम लोगों ने उसके प्रत्यागमन की आशा से दो दिन जहाज़ को रोक रक्खा और उसके लौट आने के लिए अनेक प्रकार के संकेत किये। किन्तु संकेतों का कुछ उत्तर न पाकर हम लोगों ने उसकी आशा छोड़ दी।

उसकी ख़बर न पाकर मैं स्थिर न रह सका। इस घटना के तीन दिन बाद मैं अँधेरे में अपने बदन को ढककर किनारे पर उतरा और उन असभ्यों की खोज में चला। मेरे साथ कुछ नाविक भी चले। अच्छा काम करने जाकर मैं फिर एक अनर्थ कर बैठा।

मेरे साथ करीब २०, २२ आदमी बड़े बलिष्ठ थे। दस बजे रात को हम लोग चुपचाप स्थल में उतरे और साथ के लोगों को दो भागों में बाँटकर एक के परिचालन का भार मैंने लिया तथा दूसरे भाग का भार जहाज़ के माँझी ने लिया। हम लोगों ने चन्द्रमा के प्रकाश में देखा कि कुल बत्तीस आदमी हम लोगों की गोली से मरकर समुद्र के किनारे पड़े थे। घायलों को शायद द्वीपनिवासी उठा ले गये थे।

मैंने यहीं से जहाज़ में लौट चलने का प्रस्ताव किया किन्तु माँझी ने न माना। उसने कहा "मैं एक बार इन नारकी कुत्तों की बस्ती में जाऊँगा और उनका धन लूट लाऊँगा।

वहाँ जाने से कदाचित् खोये हुए नाविक टाम जेफ़्री का भी कुछ पता लग जाय।" उसने मुझसे भी चलने के लिए अनुरोध किया। किन्तु मैं उसके इस अति साहसिक काम का अनुमोदन न कर सका। मैं उसी घड़ी नाव पर लौट आया। मेरे दल के लोग जाने के लिए मुझसे बार बार आग्रह करने लगे। मैं उनको रोकने लगा; किन्तु इससे असन्तुष्ट हो वे मुझसे बिगड़ गये और कहने लगे, "तुम हमारे रोकनेवाले कौन ?" एक एक कर वे सभी चले गये। मेरे बहुत कहने-सुनने पर एक नाविक और एक लड़का मेरे साथ नाव पर रहा।

उन लोगों का प्रधान उद्देश्य था लूटना। उन लोगों ने समझा था कि लूट में बहुत सोना और जवाहरात मिलेंगे।

कुछ आगे बढ़कर उन लोगों ने देखा कि एक पेड़ में उनके लापता संगी टाम जेफ़्री का धड़ टँगा है। उसका गला कटा है। बदन पर एक भी कपड़ा नहीं है। एक हाथ रस्सी से बँधा है जिसके सहारे वह झूल रहा है। उसके समीप ही एक मकान में समाज के कुछ प्रधान व्यक्ति एकत्र हो आपस में गपशप कर रहे थे। शायद टाम जेफ़्री के सन्धिभङ्ग की बात हो रही थी। यह देखकर नाविकों ने अपने साथी की मृत्यु का बदला लेने की प्रतिज्ञा की और संकल्प किया कि स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, कोई हो, किसी पर दया न की जाय।

इसके बाद उन लोगोंने घर घर में आग लगा दी। सबसे पहले वही घर जलाया गया जिसमें बस्ती के मुखिया लोग गप-

शप कर रहे थे। फूस का छप्पर था। आग लगते ही ले उड़ी। घर घर आग नाचने लगी। सभी लोग बड़े आराम से पहली नींद सो रहे थे। गृहदाह की बात सुनते ही सब लोग हड़बड़ा उठे। क्या स्त्री क्या पुरुष, डरकर, सभी घर के भीतर से दौड़कर बाहर निकले। बाहर आते ही वे लोग अँगरेज़ नर-पिशाचों के हाथ से अशेष यन्त्रणा भोगकर फिर जलते हुए घर के भीतर ही घुसने लगे। वे लोग उन नर-पिशाचों के तेज़ बरछे की चोट की अपेक्षा धधकती हुई आग का आलिङ्गन करना अच्छा समझते थे। जहाज़ के माँझी लोग घर के द्वार पर खड़े हो, प्राणभय से भीत, नर-नारियों को बरछे की नोक से बींधकर जलते हुए घर के भीतर लौटा देते थे। जो नहीं लौटते थे उन्हें तलवार से टुकड़े टुकड़े कर आग में फेंक देते थे। किसी के अङ्ग-प्रत्यङ्ग में बरछी भोंककर बड़ी निर्दयता के साथ मारते थे। जहाँ बहुत लोगों को एक स्थान में जमा देखते थे वहाँ बम का गोला फेंककर सभी को चौपट कर अपनी शैतानी का अन्त कर दिखलाते थे।

नाव पर से यह अग्निलीला देखकर मैं डर गया। जहाज़ का कप्तान सो गया था। माँझियों ने उसे जगाया। वह आँखें मलता हुआ उठा। उठते ही एकाएक इतनी बड़ी अग्निज्वाला देखकर और बन्दूकों की आवाज़ सुनकर मेरे लिए उद्विग्न हो उठा। यद्यपि उसके पास थोड़े से नाविक रह गये थे

तथापि वह तेरह नाविकों को साथ ले एक नाव पर सवार हो स्वयं किनारे आ पहुँचा।

मेरा भतीजा (कप्तान) किनारे आकर और दूसरी नाव पर मुझे देखकर बहुत ख़ुश हुआ, किन्तु और लोगों के लिए उसको कम उत्कण्ठा न हुई। तब भी आग वैसे ही धधक रही थी और शोर-ग़ुल भी उसी तरह हो रहा था। ऐसी अवस्था में कुतूहलाक्रान्त चित्त को रोक चुप साधकर बैठ रहना एक प्रकार से असम्भव था। भतीजे ने कहा— "जो बदा होगा सो होगा, एक बार वहाँ जाकर देखूँ तो क्या हाल है।" मैं समझाने लगा कि "ऐसा मत करो, क्योंकि जहाज़ का भला-बुरा तुम्हारे ही भरोसे है। इसलिए वहाँ मत जाओ, कहो तो आदमी साथ लेकर मैं देख आऊँ।" मेरा समझाना वृथा हुआ। वह चला ही गया। मैं अब चुपचाप बैठा न रह सका। मैं भी साथ साथ चला। जहाज़ के पैंसठ नाविकों में दो व्यक्ति मारे गये, और कुछ पहले ही बस्ती देखने जा चुके थे, कुछ मेरे साथ चले। सिर्फ़ सोलह आदमी जहाज़ पर रह गये।

हम लोग धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। जहाँ आग ख़ूब तेज़ी पर थी वहाँ जाकर देखा कि तीन स्त्रियाँ बिलकुल नङ्ग-धड़ङ्ग इस प्रकार दौड़ी हुई आ रही थीं जैसे उड़ती आती हों। उनके पीछे वहीं के सोलह सत्रह पुरुष उसी तरह से व्याकुल होकर बेतहाशा दौड़े आ रहे थे। तीन नृशंस अँगरेज़ उनका

पीछा कर रहे थे। जब वे उन भगोड़े स्त्री-पुरुषों को न पकड़ सके तब उन पर गोली चलाई। हम लोगों के सामने ही एक आदमी गोली की चोट खाकर गिर पड़ा। बचे हुए स्त्री-पुरुषों ने दौड़कर आते आते सामने हम लोगों को देखा। वे हम लोगों को भी हत्याकारी शत्रु समझकर चिल्ला उठे। पीछे शत्रु, आगे शत्रु, वे लोग भागें तो किधर? स्त्रियाँ ऐसी भयभीत हुईं कि उनमें दो मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं।

यह घोर अत्याचार देखकर मेरा सर्वाङ्ग शून्य सा हो गया। उन बस्तीवालों को खदेड़ते हुए वे दुष्ट नाविक यदि मेरे पास आते तो आश्चर्य नहीं कि मैं उनको गोली मार देता। हम लोगों ने उन भयार्त नर-नारियों को अभय दिया। तब वे रो रोकर प्राण की भिक्षा चाहने लगे। हम लोगों ने उन्हें आश्वासन दिया। तब वे इकट्ठे होकर, हमारा आश्रय ग्रहण कर, हमारे पीछे पीछे चले। मैंने अपने साथवाले नाविकों से कहा—"तुम लोग उन आततायी नाविकों में से किसी के साथ जा मिलो। किन्तु ख़बरदार! किसी को व्यर्थ न सताना। उन उद्दण्ड माँझियों को समझा दो कि रात में ही यहाँ से भाग चलें, नहीं तो सबेरे लाखों आदमी इस पैशाचिक कर्म का बदला लेंगे।" इसके बाद हमने दो आदमियों को साथ ले उन भयभीत नर-नारियों के समीप जाकर बड़ा ही भयानक दृश्य देखा। हाय! हाय! कोई कोई भयानक रूप से आग में पड़कर झुलस गये हैं। एक स्त्री दौड़ने के समय अग्निकुण्ड में

जा गिरी थी, उसका सारा अङ्ग जल गया था। दो एक व्यक्तियों की पीठ और पसली में माँझियों ने तलवार मार दी थी।

इस राक्षसी व्यवहार का कारण जानने के लिए मेरे मन में बड़ी ही व्यग्रता हो रही थी। किन्तु जानता कैसे? द्वीपनिवासियों ने इशारे से जताया कि इस आकस्मिक आक्रमण का कारण हम नहीं जानते। मुझसे अब रहा न गया। मैं बस्ती के भीतर जाने और जिस तरह हो इस घोर हत्याकाण्ड को रोकने के लिए चञ्चल हो उठा। मैं अपने साथियों को पुकारकर चलना ही चाहता था कि जहाज़ का माँझी और चार नाविक हताहत स्त्री-पुरुषों के शरीरों को कुचलते, उछलते-कूदते मेरे पास आये।

उनका शरीर लहू से लथपथ था तो भी उनकी रक्त-पिपासा मिटी न थी। भूखे बाघ की भाँति वे लोग तब भी अनावश्यक नरहत्या के लिए लोलुप बने फिरते थे। हमारे साथियों ने उन्हें पुकारकर बुलाना चाहा, पर कौन सुनता था? बड़ी बड़ी मुश्किल से एक ने ध्यान दिया। पीछे सभी मेरे पास आ गये।

हम लोगों को देखते ही माँझी मारे उल्लास के सिंहनाद कर उठा। उसने समझा कि उनकी इस करतूत के पृष्ठपोषक और भी कई व्यक्ति आये हैं। मेरी बात सुनने की अपेक्षा न करके वह ज़ोर से बोला—"कप्तान, कप्तान! आप आये हैं, अच्छा हुआ। हम लोगों को अभी आधा काम करना है। टाम जेफ़्री के सिर में जितने बाल हैं उतने मनुष्यों का जब तक

बलिदान न करेंगे तब तक हम लोग दम न लेंगे।" अब उन लोगों ने दौड़ लगाई।

उनको रोकने के लिए मैंने चिल्लाकर कहा—"अरे नीच, पिशाच! तुझे क्या सूझा है? ख़बरदार! अब एक आदमी भी तू न मार सकेगा। किसी पर हाथ चलाया कि समझ रख, तू अपनी जान से हाथ धो बैठेगा।" इस बात से ज़रा ठिठककर माँझी बोला—"क्यों महाशय! क्या आप नहीं जानते कि इन सालों ने कैसा अनर्थ किया है? यदि नहीं जानते तो आकर देख लीजिए।" उसने मुझे साथ ले जाकर टाम जेफ़्री की टँगी हुई लाश दिखला दी।

यह देखकर मेरा भी चित्त उत्तेजित हो उठा। किन्तु मैंने अपने आवेग को रोककर विचार किया कि इस हत्या का बदला बहुत अधिक लिया जा चुका है। इससे मैं चुप हो रहा। किन्तु मेरे साथी लोग चिढ़ गये। मेरा भतीजा कप्तान तक बिगड़ उठा। पोताध्यक्ष को अपने दल में सम्मिलित देखकर नाविकगण उद्दण्ड होकर हत्या में प्रवृत्त हुए। मैं उन लोगों को न रोक सकने पर लौट पड़ा।

मेरे साथ केवल तीन आदमी लौट चले। किन्तु इस घोर अत्याचार के समय ऐसे निस्सहाय होकर लौट जाना हमारे लिए असम साहस का काम हुआ। सुबह की सफ़ेदी आसमान में छाती जा रही थी। उधर हम लोगों के अत्याचार की ख़बर गाँव गाँव में फैलती जा रही थी। एक गाँव

में चालीस आदमी धनुष, बाण और भाले आदि लिये खड़े थे। दैवयोग से हम लोग उस रास्ते से न जाकर दूसरी राह से समुद्र के किनारे जा पहुँचे। हम लोग जब समुद्र-तट पर पहुँचे तब प्रातःकाल की प्रभा स्पष्ट हो चुकी थी। नाव के सहारे जहाज़ पर पहुँचकर मैंने नाव को वापस कर दिया। यदि कोई बस्ती से लौट आवे तो उसे चढ़ाकर ले आवेगी।

धीरे धीरे आग बुझ गई। हल्ला भी कम हुआ। इससे जान पड़ा कि वे अत्याचारी अब लौटे आ रहे हैं। थोड़ी देर बाद एक साथ बन्दूकों की आवाज़ सुन पड़ी। रास्ते में ग्रामवासियों के सोलह मनुष्यों को मारकर और कितने ही घरों को जलाकर कीर्तिमान् लोग लौट आये। वे दल बाँधकर नहीं आते थे; अलग अलग घूमते फिरते आ रहे थे। यदि कोई साहस करके उन पर आक्रमण करता था तो उसका प्राण बचना कठिन हो जाता था। समूचे देश में सनसनी फैल गई। पाँच नाविकों को देखकर सौ द्वीपनिवासी जान लेकर भागते थे। अँधेरे में एकाएक आक्रमण होने के कारण उनकी अक्ल यहाँ तक मारी गई थी कि किसी को उन दुराचारियों के दुष्कर्म को रोकने की हिम्मत न पड़ती थी। इससे नृशंस नाविकों को ज़रा भी चोट न आई; सिर्फ़ एक आदमी का पैर मोच खा गया था, और एक आदमी का हाथ जल गया था।

मैं सभी पर अत्यन्त रुष्ट था, विशेषकर अपने भतीजे के ऊपर। वह निर्बुद्धि जहाज़ का कप्तान होकर ऐसे बुरे कामों

में धँस पड़ा ! उसने अपने अधीन कर्मचारियों को विपत्ति-जनक नीच कर्म से न रोक करके और उत्तेजित किया। मेरी झिड़कियाँ खाकर भतीजे ने मुलायमियत के साथ मुझे उत्तर दिया—"हाँ, अन्याय मुझसे बेशक हुआ है। पर क्या किया जाय ? अपने नाविक की निर्दय हत्या देखकर मैं स्थिर न रह सका।" यद्यपि नाविकों ने मेरे तिरस्कार की कुछ परवा न की, तथापि मैंने उन लोगों का तिरस्कार करना न छोड़ा। उन लोगों से मैं कह दिया करता था कि तुम लोग भगवान् के रोषानल में अवश्य पड़ोगे।

भारत में क्रूसो का निर्वासन

हम लोगों ने मदागास्कर से चल करके भारत की ओर जाने के रास्ते में, फ़ारस की खाड़ी में प्रवेश करके, अरब के उपकूल में जहाज़ लगाया। हमारे पाँच नाविक साहस करके किनारे उतरे, किन्तु फिर उनका पता न मिला। या तो अरब के लोगों ने उन्हें मार डाला होगा या वे लोग उन्हें नौकर बनाने को पकड़ ले गये होंगे। मैंने अन्यान्य नाविकों से कहा—यह भगवान् का ही दिया दण्ड है।

मैं जो नाविकों का, उनकी अन्याय-परता और नृशंसता के लिए, जब तब तिरस्कार किया करता था उसका फल उलटा ही हुआ। जो माँझी उस अत्याचार का अगुआ था वह एक दिन बड़े निर्भीक भाव से मेरे पास आकर मेरी ओर

लक्ष्य करके बोला—तुम कौन होते हो जो रात-दिन इस बात को लेकर उपदेश की झड़ी लगाये रहते हो और हम लोगों को झिड़कियाँ बताते हो? तुम तो इस जहाज़ के मामूली यात्री हो। मैं देखता हूँ, तुम हम लोगों को फँसाने की चेष्टा कर रहे हो। इँगलैंड जाकर हम लोगों को तुम क़ानून के जुर्म में फँसाकर शायद फ़साद उठाओगे। इसलिए अभी कहे देता हूँ कि यदि तुम चुपचाप न रहोगे तो तुम्हारे हक़ में अच्छा न होगा।

मैंने उसकी बातें चुपचाप सुन लीं। इसके बाद मैंने गम्भीरता-पूर्वक कहा—"तुम लोगों के व्यवहार से मेरे चित्त को सन्तोष नहीं होता। इसी से मैं तुम्हारे इस काम में बाधा डालता आता हूँ। इतना कहने का अधिकार सबको है।" यह कहते कहते ज़रा मैं भी क्रुद्ध हो उठा।

माँझी इस पर कुछ न बोला। मैंने समझा, विवाद यहीं तक रहा। इतने में हम लोग कारोमण्डल उपकूल से होकर भारत में पहुँच गये। वह देश देखने के लिए मैं किनारे उतर पड़ा। सन्ध्या समय जहाज़ पर लौट जाने का उद्योग कर रहा था कि जहाज़ से एक आदमी ने आकर मुझसे कहा, "आपको जहाज़ पर जाने की मनाही है।" इस संवाद से मेरे मन में बड़ा क्षोभ और आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा—"तुमसे यह किसने कहा?" नाविक ने कहा—माँझी ने।

मैंने उससे और कुछ न पूछकर जहाज़ के भण्डारी को जहाज़ पर भेजकर अपने भतीजे को यह ख़बर दी। किन्तु

मेरे भतीजे को यह हाल पहले ही मालूम हो चुका था। जहाज़ से उतरकर मैं ज्योंही स्थल में आया त्योंही माँझी प्रभृति प्रधान नाविकों ने कप्तान के पास जाकर मेरे ऊपर नालिश की और कहा कि हम लोग उस आदमी के साथ एक जहाज़ पर न रहेंगे। अच्छा हुआ कि वह जहाज़ पर से आप ही उतर गया, नहीं तो हम लोग उसे ज़बर्दस्ती उतार देते। यदि आप उसका पक्ष लेकर हमारी प्रार्थना पर ध्यान न देंगे तो हम लोग, सबके सब, जहाज़ छोड़कर चले जायँगे। माँझी का इशारा पाकर सभी नाविकों ने वही बात दुहराई।

जहाज़ का कप्तान (मेरा भतीजा) बड़ा समझदार था। उसने इस प्रस्ताव से क्षुब्ध होने पर भी गम्भीर-भाव धारण करके उनसे कहा—"इसका जवाब मैं सोचकर दूँगा। उनसे इस विषय में सलाह किये बिना तुम लोगों से कुछ नहीं कह सकता।" उसने उन लोगों के इस प्रस्ताव की अयुक्तता दिखलाने की चेष्टा की, किन्तु नाविकों ने कप्तान के सामने ही प्रतिज्ञा करके कह दिया कि यदि हमारी बात न मानी जायगी तो हम लोग जहाज़ से उतर जायँगे।

मेरा भतीजा बड़े सङ्कट में पड़ा। नाविकों की बात मानता है तो मुझसे नाता तोड़ना पड़ता है और मेरा पक्ष लेता है तो वे लोग बिगड़कर चले जायँगे। नाविक न रहने से जहाज़ कैसे चलेगा? किन्तु उन लोगों के कारण वह मुझको कैसे छोड़ दे? तब उसने बात बनाकर उन लोगों से कहा—

"मेरे चचा साहब इस जहाज़ के हिस्सेदार हैं, इसलिये उन्हें उनकी सम्पत्ति से दूर करनेवाला मैं कौन हूँ ? तुम रहना न चाहो तो चले जाओ; किन्तु भली भाँति याद रक्खो कि देश लौटने पर तुम लोग सहज ही न छुट सकोगे। बेहतर होगा कि माँझी मेरे साथ चलें। सब आदमी मिलकर जो राय तय करेंगे वही होगा।" माँझी जब किसी तरह राज़ी न हुआ तब कप्तान ने उन लोगों से कहा—अच्छा, तो मैं ही जाकर उनको ख़बर देता हूँ।

जब मैंने भण्डारी को उसके पास भेजा उसके कुछ ही देर बाद भतीजा मेरे पास आया। उसे देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे भय था कि शायद नाविकगण उसे मुझसे भेंट न करने दें। इस दूर देश में मुझे स्वजन-हीन अवस्था में छूँछा छोड़ दिया जाता तो मैं बड़ी विपत्ति में पड़ जाता। मैं उस निर्जन द्वीप में जैसा पहले-पहल जा पड़ा था, उसकी अपेक्षा यहाँ की अवस्था अधिक शोचनीय हो उठती! भतीजे ने मुझसे नाविकों के असहनीय संकल्प की बात कही। मैंने कहा कि इसके लिए चिन्ता करने से कोई फल न होगा। मेरा माल-असबाब और कुछ रुपया मुझको देते जाओ, तो मैं किसी तरह देश लौट जाऊँगा।

इससे मेरा भतीजा अत्यन्त दुखी हुआ किन्तु इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के सिवा और उपाय ही क्या था? उसने जहाज़ पर जाकर जब नाविकों से कहा कि मेरे चचा अब इस

जहाज़ पर न जायँगे तब सभी नाविक अपने-अपने काम पर गये। भतीजे ने मेरी सब चीज़ें जहाज़ पर से उतार दीं।

मैं छाती को पत्थर सी किये खड़ा-खड़ा देखता रहा। जहाज़ मुझको छोड़ पाल तानकर चल दिया। मेरा भतीजा, मेरे आश्वासन के लिए, एक किरानी और अपने एक नौकर को मेरे पास छोड़ गया। मैंने एक अँगरेज़ स्त्री के घर डेरा किया। वहाँ कई एक फ़्रांसदेशी, यहूदी और एक व्यवसायी अँगरेज़ भी पहले ही से ठहरा था। यहाँ सुख से मैंने नौ दस महीने बिताये। मेरे पास काफ़ी रुपये थे और कुछ वाणिज्य की वस्तुएँ भी थीं। उनको बेचकर मैंने अच्छे हीरे मोल लिये। अब मैं बेख़ौफ़ अपना सर्वस्व साथ लेकर देश लौट जा सकूँगा।

क्रूसो का वाणिज्य

मेरा बहुत समय भारतवर्ष के पूर्वी भाग बङ्गाल में ही बीत गया। देश लौटने के जितने उपाय मुझे बतलाये जाते थे उनमें एक भी मेरे पसन्द न आता था। आख़िर एक दिन अँगरेज़ वणिक् ने मुझसे कहा—आप मेरे स्वदेशी हैं। आपसे मुझे एक प्रस्ताव करना है। आशा है कि आप उससे असन्तुष्ट न होंगे। हम लोग देश से बहुत दूर आ पड़े हैं, आप दैवयोग से और मैं अपनी इच्छा से; किन्तु दोनों की दशा एक सी है। जो हो, यह देश ऐसा है कि यहाँ वाणिज्य करने से अपने देश की एक मुट्ठी धूल के बदले मुट्ठी भर सोना

मिल सकता है। लाइए, दस हज़ार रुपया आप दीजिए और दस हज़ार मैं देता हूँ। हम लोगों के पसन्द लायक़ यदि कोई जहाज़ मिल जाय तो भाड़े पर लेकर हम लोग चीनवालों के साथ उस मूलधन से व्यवसाय करने जायँगे। आप होंगे जहाज़ के अध्यक्ष और मैं बनूँगा व्यापारी। आलसी होकर समय बिताना ठीक नहीं।

यह प्रस्ताव मुझे अच्छा लगा। यद्यपि वाणिज्य मेरे स्वभाव के अनुकूल नहीं है तथापि भ्रमण ही सही। जिस देश को मैंने पहले कभी नहीं देखा है उसके देखने की लालसा मेरे मन में जागती ही रहती थी।

मन के माफ़िक़ जहाज़ मिलने में बहुत दिन लगे। जहाज़ मिला भी तो अँगरेज़ नाविक नहीं मिलते थे। बड़ी मुश्किल से मेट, एक माँझी और एक गोलन्दाज़ का प्रबन्ध किया। एक मिस्त्री और तीन नाविक भी मिल गये। बाक़ी भारतीय नाविक नियुक्त कर लिये गये।

अब हम लोग सुमात्रा टापू की सरहद से होते हुए स्याम देश में पहुँचे। वहाँ हम लोगों ने वस्तुएँ बेचकर अफ़ीम और कुछ अर्क़ ख़रीदे। उस समय चीन में अफ़ीम की बड़ी खपत थी। आठ महीने वाणिज्य करने के बाद हम फिर भारत को लौट आये। इन देशों में तिजारत करके द्रव्योपार्जन की सुविधा और विलक्षण लाभ देखकर मैं बहुत ख़ुश हुआ। मेरी उम्र यदि १५, २० वर्ष और कम होती तो मैं इस देश को छोड़कर

द्रव्य पैदा करने के लिए अन्यत्र कहीं न जाता। किन्तु मेरे ऐसे साठ वर्ष के बुड्ढे और मालदार व्यक्ति को केवल लाभ के सम्बन्ध से इन देशों पर विशेष मोह न था। मैं रुपया कमाने के लिए नहीं आया था; देश देखने ही के लिए मेरा आना हुआ था। सो इन नये देशों के दर्शन हो गये। अब देश लौटने के लिए जी अकुलाने लगा। मेरे साथी अँगरेज़ पूरे व्यवसायी थे। ये अपने व्यवसाय के पीछे दिन-रात परेशान रहते थे। मेरा ख़याल केवल घूमने-फिरने की ओर था। मेरे साझी ने मुझसे यह प्रस्ताव किया कि अब की बार मसाले के टापू में जाकर एक जहाज़ भर लौंगें लाकर व्यवसाय किया जाय। यद्यपि वाणिज्य-व्यवसाय में मेरा पूर्ण उत्साह नहीं था तथापि "बैठे से बेगार भली" की कहावत चरितार्थ करना उचित जान मैं लौंगें ख़रीदने चला। मैं बोर्नियो प्रभृति टापुओं में घूमता-फिरता पाँच महीने में फिर अपने अड्डे पर आ पहुँचा और फ़ारस के सौदागरों के हाथ लौंगें और जायफल बेचकर मैंने एक के पाँच वसूल किये। हम लोगों ने मुनाफ़ा आपस में बाँट लिया।

चीन में क्रूसो

अभी मैं चीन में हूँ। मेरा देश पृथिवी के एक प्रान्त में है, और मैं आया हूँ दूसरे प्रान्त में। अपने देश लौट जाने

का कोई सुयोग नहीं देख पड़ता। चार महीने बाद यहाँ एक और मेला होगा। तब एक नाव मिल जायगी तो ख़रीद लूँगा और भारत को लौटूँगा। उस मेले में यदि कोई यूरोपीय जहाज़ मिल जाय तब तो अच्छा ही होगा।

यहाँ कई एक यूरोपीय पादरियों से परिचय हो गया। हम लोग उनके साथ चीन देश देखने के लिये घूमने लगे। इस देश में अब भी कुछ विशेष उन्नति नहीं हुई है। प्रायः सभी लोग जाहिल हैं। हम लोग चीन की राजधानी पेकिन देखने चले। उसी समय एक प्रादेशिक शासक पेकिन जा रहे थे। हम इन्हीं के साथ हो लिये। चीन की बस्ती घनी थी किन्तु अधिकांश लोग दरिद्र और मूर्ख थे।

पचीस दिन में हम लोग पेकिन पहुँचे। हम पाँच आदमी थे। मैं, मेरे भतीजे का दिया हुआ नौकर, मेरा साझेदार अँगरेज़, उनका नौकर और वृद्ध पथदर्शक। एक दिन वृद्ध ने मुझसे हँसते हँसते कहा—"एक बहुत अच्छी ख़बर है, सुनने से आप लोग ख़ुश होंगे।" पूछने पर उन्होंने कहा—व्यापारियों का एक दल स्थल-मार्ग से साइबीरिया होकर यूरोप जा रहा है। हम लोग उनके साथ यूरोप जा सकते हैं।

ख़बर सचमुच बहुत अच्छी थी। हम लोग जाने को राज़ी हो गये। राह-ख़र्च देकर उनके देश पहुँचा देने की शर्त पर वृद्ध को भी साथ ले लिया।

कूसो का स्थलमार्ग से स्वदेश को लौटना

हम लोग फ़रवरी के पहले ही पेकिन से रवाना हो गये। साथ में अठारह ऊँट और आठ घोड़े थे। रेशमी कपड़े, छींट, लौंग, जायफल, ज़री के कपड़े और चाय आदि सामान ऊँटों और घोड़ों पर लाद लिया था।

हमारे दल में एक सौ बीस आदमी और तीन चार सौ घोड़े थे। और चौपायों पर चीज़ें लदी थीं और आदमी भी सवार थे। सभी लोग अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे। रास्ते में तातारी डाकुओं का भय था। पाँच पथ-प्रदर्शक साथ में थे। दल में एक व्यक्ति प्रधान मान लिया गया था। मार्ग में उसी की आज्ञा के अनुसार चलेंगे। रास्ते के मनोरम दृश्य देखते हुए दो दिन बाद हम लोग चीन की प्रसिद्ध दीवार के पार हुए। तातार- देशीय डाकुओं के आक्रमण से देश को बचाने के लिए यह दीर्घ-दीवार बनाई गई थी। दीवार पार होते ही बीच बीच में घुड़सवार तातारी डाकुओं से भेट होने लगी। मुसाफिरों को लूटना ही उनका पेशा था। उन लोगों के पास न कोई अच्छा अस्त्र-शस्त्र था, न वे लोग आक्रमण करने का ढङ्ग ही जानते थे। उनकी पूँजी तीर-धनुष और टट्टू थे। वे बीच बीच में हम लोगों पर आक्रमण करने लगे। तीर चलाने में वे यद्यपि बड़े दक्ष थे; किन्तु हम लोगों की बन्दूकों के आगे उनकी एक न चली। हम लोग नगरों से निकलकर मैदान में आ गये। एक महीने तक हम लोग इसी भाँति मैदान का

सफ़र करते रहे। कभी कभी रास्ते में तातारियों के छोटे छोटे दल मिल जाते थे; पर कोई कुछ छेड़छाड़ न करता था।

मैदान पार करके हम लोग एक गाँव में पहुँचे। वहाँ ऊँट और घोड़े बिकते थे। मुझे एक ऊँट मोल लेने का शौक हुआ। मैंने एक आदमी से एक ऊँट लाने को कहा। मैं स्वयं भी साथ में गया। गाँव से दो मील पर मैदान के बीच ऊँटों और घोड़ों का बाज़ार था।

हम लोग एक ऊँट ख़रीदकर लौटे आ रहे थे। इसी समय पाँच तातारी घुड़सवार दौड़े आये। उनमें से दो आदमी तो ऊँट छीन ले गये और तीन आदमियों ने आगे से आकर हम लोगों को घेर लिया। मेरे साथ सिर्फ़ एक तलवार थी। हम तीनों पैदल आदमी उन घुड़सवारों का कर ही क्या सकते थे? तथापि मुझको तलवार निकालते देख पहला तातारी ठिठक रहा; किन्तु दूसरे ने पीछे से आकर मेरे सिर पर लाठी मारी। मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। दैवयोग से वृद्ध के पाकेट में एक पिस्तौल थी। उन्होंने झट पिस्तौल भरकर तातारी डाकू को मार डाला और जिस तातारी ने हम लोगों पर पहले आक्रमण किया था उस पर तलवार चलाई। इससे उसका घोड़ा ज़ख्मी होकर सवार को ले भागा। तीसरा तातारी डाकू अपने को असहाय देख वहाँ से भाग निकला।

इतनी देर बाद मुझे कुछ होश हुआ। सिर में दर्द मालूम होने पर मैंने हाथ से टटोलकर देखा तो हाथ में

देखते देखते तातारी डाकू सामने आ गये।...उनको पास आते देख हम लोगों ने बन्दूकें दाग दीं।—पृ० २४६

लोहू लग गया। तब मुझे सब बात याद हो आई। मैं झटपट उछलकर खड़ा हो गया। मैंने तलवार की मूठ पकड़ी, परन्तु तब वहाँ कोई शत्रु न था।

धीरे धीरे हम लोग एक शहर में पहुँचे। वहाँ ख़बर मिली कि दस हज़ार तातारी लुटेरे चले आ रहे हैं। इसकी सूचना सभी बटोहियों को दी जा रही है। अब क्या किया जाय? शहर के अध्यक्ष ने हम लोगों के साथ पाँच सौ चीनी सैनिक कर दिये। वे कुछ दूर तक हमें पहुँचा देंगे।

अब हम लोग पन्द्रह-सोलह मील लम्बी चौड़ी मरुभूमि में आ गये। दूर तक धूल उड़ते देखकर हम लोगों ने ताड़ लिया कि शत्रु-दल समीप आ गया। चीनी सैनिक पहले तो बातूनी वीरता दिखला रहे थे किन्तु शत्रु-दल को सामने आते देख बार बार पीछे की ओर देखने लगे। मैंने उनका लक्षण ठीक न देखकर अपने नायक से जाकर कहा। तब हमीं लोग पचास पचास मनुष्यों की टोली बाँधकर उन सैनिकों के दहने-बाएँ जाकर उन्हें साहस देने लगे। देखते देखते तातारी डाकू सामने आ गये। वे दस हज़ार से कम न रहे होंगे। उनको पास आते देख हम लोगों ने बन्दूकें दाग दीं। वे लोग इसका कुछ उत्तर न देकर रास्ता काटकर निकल गये।

अब हम लोगों ने आपस में चन्दा करके चीनी सैन्य को पुरस्कार देकर बिदा कर दिया। १३ वीं अप्रैल को हम लोग रूस के राज्य में पहुँचे। यहाँ से चार मील पर हम लोगों

के साथी सौदागर डेरा डाले हुए थे। तीन दिन वहाँ रहकर हम लोगों को कुछ घोड़े ख़रीदने थे; क्योंकि हम लोगों के कई घोड़े राह चलते चलते बेकाम हो गये थे।

रूस में जहाँ हमारा पड़ाव था वहाँवाले बड़े असभ्य थे। एक कुन्दे का भद्दा सा देवता बनाकर वे उसकी बड़ी भक्ति से पूजा करते थे; उसके आगे बहुत से पशुओं का बलिदान करते थे। उनकी इस असभ्यता से चिढ़कर मैंने, रात को छिपकर, उस लकड़ी के देवता को जलाकर स्वाहा कर दिया।

दूसरे दिन गाँववालों ने रूस के हाकिम के पास जाकर इसकी नालिश की। ये लोग नाममात्र के लिए रूस के अधीन थे और बात की बात में बिगड़ बैठते थे। हाकिम ने इनको बातों में भुलाने की चेष्टा की और धैर्य दिया। गाँव के लोग अपने देवता के शोक में रोने-पीटने लगे।

रँग-ढँग बेढब देखकर रूस के शासक ने हमारे दल में चुपचाप यह ख़बर भेज दी कि "यदि तुममें से किसी ने यह काम किया हो तो वह यहाँ से भाग जाय।" जलानेवालों के सिवा यह तो कोई न जानता था कि उस कुन्दे के देवता को किसने नष्ट भ्रष्ट किया है; फिर भी हम लोग दिन रात लगातार भाग चले। दो दिन बाद देखा कि पीछे की ओर बेतरह धूल उड़ रही है। मालूम हुआ कि वे लोग हमें पकड़ने आ रहे हैं। भाग्य से हम लोगों को सामने एक झील मिल गई। उसके चारों ओर घूम करके हम लोग उसके दक्खिन

तरफ़ चले गये और हमारा पीछा करनेवाले असभ्य लोग घूम-घामकर उसके उत्तर ओर चले गये। हम लोग साफ़ बच गये।

तीसरे दिन वे लोग ढूँढ़-ढाँढ़कर सन्ध्या-समय हम लोगों के समीप आ गये। उन्होंने दूत भेजकर कहलाया कि यदि हमारे देवता के अपमानकारी को पकड़कर भेज दिया तब तो अच्छा है, नहीं तो सब के सब मारे जाओगे। यह ख़बर सुनकर हम लोगों के दल में खलबली मच गई।

हमारे सर्दार ने कहला भेजा कि हमारे दल के किसी आदमी ने यह काम नहीं किया है। यह उत्तर पाकर वे लोग आक्रमण का उद्योग करने लगे। अब हमारे दल का एक आदमी, रूस के शासक के दूत का स्वाँग बनाकर, कुछ गाँव-वालों के पास जाकर बोला—'अपराधी का पता लग गया। वह पीछे की ओर भाग गया है।' उसकी बात पर विश्वास करके वे पीछे की ओर दौड़ पड़े। इधर रास्ते में हमें एक लम्बा चौड़ा बालू का मैदान मिला। उसको तेईस दिन में पार किया।

क्रमशः हम लोग टोबालस्क नगर में पहुँचे। हम लोग सात महीने से रास्ता चल रहे थे। अब पाला पड़ने लगा। रूसी लोग कहने लगे कि चलने का मज़ा तो सचमुच शीतकाल ही में है। हाय! इस समय मुझे वह अपना टापू स्मरण हो आया। वहाँ बराबर वसन्त ही बना रहता था। कपड़ा पहनने की भी प्रायः आवश्यकता न पड़ती थी और यहाँ यह

दारुण शीतकाल की कठिन विभीषिका ! कितना ही बदन में कपड़ा लपेटो तो भी बदन गरम न हो।

इस शीतप्रधान देश में रूसी सरकार के रोष से दण्डित तथा निर्वासित कितने ही भद्र नर-नारियों को हम लोगों ने देखा। बहुतों के साथ बात-चीत की। उनमें प्रायः सभी बड़े शिक्षित और धर्मात्मा थे। उनका और कुछ अपराध नहीं था, हाँ वे सच्ची भक्ति और श्रद्धा से देशसेवा अवश्य करते थे।

इन स्वदेश-वत्सल नर-नारियों की सङ्गति में हम लोगों के आठ महीने बड़े सुख से कटे। जाड़ा भी बीत चला। अब ज़रा ज़रा दिन का प्रकाश भी दिखाई देने लगा। मैं मई महीने में यात्रा का ठीकठाक करने लगा।

जून का आरम्भ होते ही मैं रवाना हुआ। मेरे साथ कुल बत्तीस ऊँट और घोड़े थे। और सब साथी, जो जहाँ के थे, क्रम क्रम से चले गये। उतने बड़े दल में एक मैं ही यात्री बच रहा था।

अब हम लोग यूरोप में पहुँच गये। एक जंगल के भीतर होकर जाते समय हम लोगों का जीवन और धन लुटेरों के हाथ जाते जाते बचा। ये भी तातारी घुड़सवार थे। ये हम लोगों पर आक्रमण करने की घात में लगे। किन्तु हम लोगों ने बड़ी देर तक उन्हें घुमा-फिराकर हैरान किया। रात होने पर वे लोग चले गये।

कुछ देर बाद हमने देखा कि क़रीब अस्सी डाकू हमारा माल असबाब लूटने को चले आ रहे हैं। पास आते ही

उनको हम लोगों ने गोली मारी। उससे बहुत लोग मरे और घायल हुए और बाक़ी लोग डरकर वहाँ से दूर भाग गये।

सारी रात जागते रहकर हम लोग प्रातःकल की बाट जोहते रहे। सुबह होते होते देखा कि शत्रुओं की संख्या बहुत बढ़ गई है। हम लोग दिन भर चुपचाप बैठे रहे। डाकुओं ने भी हमारे साथ कुछ छेड़-छाड़ नहीं की। साँझ होने पर हम लोगों ने भागने का विचार करके, उन्हें धोखा देने के लिए, ख़ूब आग जलाई और ऐसा प्रबन्ध किया जिसमें वह सारी रात धधकती रहे। इसके बाद हम लोग अँधेरी रात में घोड़ों और ऊँटों को साथ ले जंगल के भीतर ही भीतर चुपचाप भाग चले। आग को धधकते देख लुटेरे निश्चिन्त बैठे थे। हम लोग एक वर्ष पाँच महीने चलकर अन्त में, सब विघ्न-बाधाओं से बचकर, समुद्र के तट पर पहुँच गये।

१० जनवरी सन् १७०५ ईसवी को लगभग ३५ हज़ार रुपया लेकर दस वर्ष नौ महीने के बाद, मैं इँगलैंड को लौट आया। मैं अब बहत्तर साल का हुआ। इतने बड़े जीवन में देशाटन के अनेक उपद्रवों को झेलकर अब मैं परलोक की दीर्घयात्रा के लिए शान्तिमय के मार्ग का पथिक होने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

ईश्वर ने जल-थल में जैसे राबिन्सन क्रूसो की रक्षा की वैसे ही सबकी रक्षा करें।